ब्रज की लोक-कहानियाँ



संपादक :

श्री सत्येन्द्र, एम. ए.



प्रकाशक :

ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा.

प्रथम संस्करण

मार्गशीर्ष पूर्णिमा संवत् २००४

मूल्य ३।)

★

मुद्रक :

अग्रवाल प्रेस, मथुरा

भूमिका



विश्व-साहित्य में कहानियों का ऊँचा स्थान है। वह सम्मान उन्हें कला की दृष्टि से मिलता है। 'कला' एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है, पर इसका उपयोग बहुत संकुचित क्षेत्र में होने लगा है। जीवन में सुरुचि का उत्कर्ष होता है विविध श्रेणियों में होकर ऐसा माना जाता है। उनमें एक सबसे निम्न स्तर की सुरुचि होगी, एक सबसे ऊँचे की होगी। प्रायः यह विश्वास किया जाता है कि बेपढ़े मानव-समुदाय में—असंस्कृत-असभ्य मानव-जातियों में ही इस सुरुचि का निम्नतम स्तर रहता है। किंतु यही स्तर यथार्थ, में प्राणप्रदा शक्ति के निकट रहता है। यह सबसे अधिक जीवनमय होगा ही, पृथ्वी की भाँति सहिष्णु और अचल भी होगा। यही कारण है कि धरातल पर हमें युग-युगों के प्रभावों का संचय भी शोध से प्राप्त हो जाता है। भू-विज्ञान में जैसे पृथ्वी पर स्तर पर स्तर पड़ते चले जाते हैं, उसी प्रकार मानव-जाति के इतिहास में भी सांस्कृतिक विकास के स्तर पर स्तर पड़ते चले गये हैं। आज हम समाज के निर्माण में घने जंगलों में रहने वाले वर्बर तथा असभ्य मानव में मानवीय इतिहास का आदिम से आदिम रूप प्राप्त कर सकते हैं। इस संस्कृति और सभ्यता के विविध धरातलों का ऐतिहासिक अध्ययन करना आवश्यक है कि किन किन अवस्थाओं में होकर हमारा मानव-समाज निम्न स्तर से आज की ऊँची से ऊँची सभ्यता का स्तर पा सका है, उसे कला का उत्कृष्ट रूप दे सका है।

फलतः मानव-समाज का वास्तविक अध्ययन करने के लिए भी, साहित्य में उपलब्ध कला के मर्म की व्याख्या करने के लिये भी, उसके आज के लिखित साहित्य में प्राप्त कला की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों से अधिक साधारण लोक की विविध अभिव्यक्तियों का अध्ययन आवश्यक है। लोक की इन विविध अभिव्यक्तियों में दो सबसे प्रबल हैं—एक गीत-संबंधी, दूसरी कहानियों-संबंधी। ब्रज-साहित्य-मंडल ने ब्रज-क्षेत्र के विशेष भाग में जा कर इन लोकाभिव्यक्तियों का संग्रह-संकलन कराया है। यहाँ मंडल द्वारा संगृहीत कुछ कहानियाँ दी जा रही हैं। इन कहानियों के साथ लोहबन के चंद्रभान 'राधे-राधे' द्वारा संकलित कहानियाँ भी दी गयी हैं। ये कहानियाँ

'राधे-राधे' जी ने संपादक के लिये संग्रह की हैं। इस प्रकार ब्रज की कुछ लोक कहानियाँ यहाँ दी गयी हैं।

ये कहानियाँ कई वर्गों में बाँट दी गई हैं। यह वर्गीकरण कहानियों के विषय की दृष्टि से किया गया है। इतने वर्ग हैं: १. देव-कहानी, २. चमत्कारों की कहानी, ३ कौशल की कहानी, ४. जान-जोखिम की कहानी, ५. व्रत की कहानी, ६. पशु-पक्षियों की कहानी, ७. बुझौअल की कहानी, ८. जीवट की कहानी।

देव कहानियों में वे कहानियाँ हैं, जिनमें प्राधान्य देवताओं का रहा है। इनमें नारद, भगवान, कर्म, लक्ष्मी, धर्म और शनिश्चर देवताओं को कहानियों का नायक बनाया है। इनमें से प्रथम पाँच कहानियों का स्वभाव उन कहानियों से मिलता है, जो देवताओं के संबंध में 'भविष्योत्तर' जैसे पुराणों में दी गयी हैं। राजा विक्रमाजीत की कहानी यद्यपि 'वीरविक्रमादित्य' के कहानी-चक्र की कहानी है, और यथार्थ में इस कहानी का नायक विक्रमाजीत ही है, पर शनिश्चर देवता के कारण ही कहानी का आधार आदि से अंत तक बना है, इसे भी इसी वर्ग में सम्मिलित किया गया है। चमत्कारों की कहानियों में जादू-टोने के चमत्कारों की प्रधानता है। चौदहवीं विद्या वाली कहानी में यहाँ राजा भोज नायक है। ऐसी ही अन्यत्र मिलने वाली कहानियों में राजा विक्रमादित्य ही नायक है। कौशल की कहानी एक ही दी गयी है। इस कहानी में मानवीय चतुराई का उल्लेख हुआ है। जान-जोखिम की कहानियाँ तो जीवट की कहानियाँ हैं। इनमें बुद्धि-चातुर्य के साथ-साथ जान को हथेली पर रख कर कुछ कर गुजरने की बात भी मिलती है। अद्भुत कर्त्तव्य की इनमें प्रधानता है। व्रत की कहानियाँ कुछ विशेष अवसरों पर कही जाती हैं। यह वर्ग कहानियों के स्वभाव से संबंधित नहीं है। यह तो अवसर के आधार पर दिया गया है। यहाँ हम व्रतों से संबंधित सभी कहानियाँ दे देना चाहते थे, पर ऐसा नहीं हो सका। कई कहानियाँ छूट गयी हैं। पशु-पक्षियों की कहानियों में पशु-पक्षी ही नायक अथवा पात्र हैं। बुझौवल की कहानियों से अभिप्राय उन कहानियों से है, जिनमें या तो किसी प्रश्न को सुलझाया गया है, या कुछ बतायी हुई बातों की परीक्षा की गयी है। जीवट की कहानियों में 'जान-जोखिम' से भिन्न इतना ही है कि इनका क्षेत्र और भूमिपट बहुत विस्तृत है, और साहस के कृत्यों में कल्पना-वैविध्य की प्रधानता है।

इन कहानियों में से कुछ बहुत महत्व की हैं। राजा-विक्रमाजीत, राजा-भोज, चौदईं-विद्या, ठाकुर रामपरसाद, ठगों को ठगने वाला, बदकार-माता, देवर-भाभी, नाग-पंचमी की कहानी, न्यौरा-भइया, और कंजूस साहूकार। ये कुछ ऐसी कहानियाँ हैं, जिनकी सीमा ब्रज से बाहर भारत तक ही नहीं, विश्व के अनेक देशों तक फैली हुई है। पशु-पक्षियों की भी सभी कहानियाँ भारत के विविध प्रान्तों में पाई जाती हैं। यहाँ इस छोटी भूमिका में इतना अवकाश नहीं कि इन कहानियों का विश्लेषण और संतुलन किया जा सके। हम यह मानते हैं कि हिंदी में ऐसे अध्ययन की अभी महती आवश्यकता है। इधर 'लोक-वार्ता' की ओर हमारा बहुत ही कम ध्यान गया है। यथार्थ में जिस प्रकार किसी युग में हिंदी भाषा को संस्कृतज्ञ मनीषी घृणा की दृष्टि से देखते थे, और उसमें लिखना-पढ़ना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे, उसी प्रकार हिंदी ही नहीं, भारत की अन्य भाषाओं के क्षेत्र की बोलियों की लोक-वार्ताओं पर चर्चा तो क्या ध्यान देना भी कोई महत्व की बात नहीं मानी जाती थी, हालाँकि इस दिशा में यूरोप में अठारहवीं शताब्दी से ही ध्यान दिया जाने लगा था। ग्रिम नाम के जर्मन बंधुओं ने तो सन् १८१२ और १८३५ में क्रमशः 'किंडर अण्ड हउसमार्खेन' तथा 'दि उत्सूखे माइथॉलोजि' नाम की पुस्तकों द्वारा इस लोक-वार्ता के वैज्ञानिक-अध्ययन की नींव डाल दी थी। टेलर और फ्रेजर जैसे विद्वानों ने तुलनात्मक बृहद् ग्रंथ लिखकर इस लोक-वार्ता के अध्ययन को चरम पर पहुँचा दिया था। भारत में भी 'इण्डियन ऐंटीकरी' नामक पत्र १८७१ ई० से निकलना आरंभ हो गया था, और इसके द्वारा कितने ही व्यक्ति लोक-वार्ता को प्रकाश में लाने लगे थे। टाइ, हिस्लप, मिस फ्रेयर, टेम्पल, डमण्ट, विलसन, श्रीमती स्टील, नटेश शास्त्री, क्रुक, केम्पवैल, नोलीज़, आर. ऐस. मुकर्जी, श्रीमती डकौर्ट, स्विनरर्न, बोय्यस, बोडिंग, एम. कुलक, शोभना देवी, पार्थर, पेंज़र, टॉनी, शरतचन्द्र राय, ग्रिगसन, रामा स्वामी राजू, सुब्रह्मिया पंतालु, मारिस ब्रुमफील्ड, नार्मन ब्राउन, रथनार्टन, एम० बी० एमेन्यू, लाल बिहारी दे, वैरियर एलविन आदि ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने लोक-वार्ता के संग्रह और अध्ययन की ओर ध्यान दिया और विविध क्षेत्रों की सामग्री को प्रकाशित कराया। यह समस्त उद्योग अँग्रेजी में ही हुआ। कारण स्पष्ट है। अब तक भारत की देश-भाषाओं के पाठकों और लेखकों की रुचि इधर नहीं थी। आज भी हिंदी भाषा-भाषियों की रुचि इधर है, यह नहीं कहा जा सकता। हमारे लेखकों और विद्वानों को अन्य प्रकार के विषय ही आकृष्ट किये हुये हैं। किंतु अब यथार्थ में प्रमाद का समय नहीं है। भारत में

प्राचीन रूढ़ियों का गढ़ ध्वस्त हो रहा है, और तीव्र गति से प्राचीनता पर से श्रद्धा उठती जा रही है। यदि इस समय लोक-वार्ता का संकलन न किया जायगा तो संस्कृति की चल-संपत्ति में से बहुत कुछ बहुमूल्य अंश नष्ट हो जायगा।

वस्तुतः जब अँग्रेजी में बहुत कुछ लोक-वार्ता का प्रकाशन हो चुका और कुछ अन्य देशी बोलियों में भी इसका कार्य हुआ तब पं० रामनरेश त्रिपाठी का ध्यान इधर गया। उन्होंने ग्राम-गीतों का संग्रह कर अपनी कविता–कौमुदी का एक नया भाग तय्यार किया। श्री देवेन्द्र सत्यार्थी में तो लोक-गीतों की आत्मा ही जग उठी। इन्होंने तो इसके लिए गृहस्थ होते हुए भी परिव्राजकता ग्रहण की। भारत के एक ओर से दूसरे छोर तक इन्होंने लोक-वार्ता का संकलन और अध्ययन करने के लिये कष्ट उठाकर भी यात्राएँ कीं। हिंदी क्षेत्र पर आपकी विशेष कृपा रही है। ये भी गीतों तक रहे। इसी प्रकार सर्व श्री राकेश, श्यामचरण दुबे, नरोत्तम स्वामी, ठाकुर रामसिंह, सूर्यकरणपारिक, जगदीशसिंह गहलोत आदि व्यक्तियों का ध्यान भी इधर गया। इन्होंने भी अपने-अपने क्षेत्रों में गीत संग्रह किये, उनको प्रकाशित कराया, किंतु विशेष वैज्ञानिक उद्योग इस दिशा में 'लोक-वार्ता' पत्र के द्वारा उसके संपादक और टीकमगढ़ की 'लोक-वार्ता परिषद्' के मंत्री श्री कृष्णानंद जी गुप्त ने किया। फिर भी वास्तविक वैज्ञानिक प्रणाली पर अनुसंधान करने का यथार्थ गौरव तो ब्रज-साहित्य-मंडल को ही प्राप्त है। ब्रज-साहित्य-मंडल ने गाँवों में अपने केन्द्र स्थापित किये, इन केन्द्रों के संयोजकों से लोक-वार्ता एकत्रित करायी, उसके लिये एक निर्देशक पुस्तक प्रकाशित की और वह तथा संकलन करने की वैज्ञानिक-विधि का विधान करनेवाले संकलन-पत्र छपवाकर इन संकलन–कर्त्ताओं के पास भिजवाये। उन पर प्रति वर्ष एक विवरण प्रस्तुत किया और उसका ठोस अध्ययन करने के लिये एक शिक्षण-शिविर भी किया।

इस प्रकार इस 'लोक-वार्ता' के वैज्ञानिक अध्ययन को वैज्ञानिक नींव देने का जो ठोस प्रयत्न ब्रजसाहित्यमंडल ने किया है, वह हिंदी में ही नहीं समस्त भाषाओं में एक नवीन उद्योग प्रतीत होता है। वास्तव में वस्तु-स्थिति यह कहती है कि लोक-वार्ता का अध्ययन बहुत ढंग से किया जाय। नृ-विज्ञान-वेत्ताओं का साधारणतः ध्यान असभ्य और असंस्कृत मानव-समूहों की वार्ताओं के अध्ययन की ओर ही विशेष रहा है, पर यह अध्ययन सुसंस्कृत समुदाय में और भी आवश्यक है। वहीं तो संस्कृति में गर्भित अनेकों विकासों के यथार्थ स्तरों का उद्घाटन हो सकता है। ब्रजसाहित्यमंडल ने यत्किंचित् इस दिशा में प्रयत्न किया है।

कहानी का संग्रह सबसे कठिन कार्य है, पर सबसे महत्वपूर्ण भी है। गीति-कहानियों का संग्रह भी उतना कठिन नहीं है, जितना गद्य-कहानियों का। कहानियों में हमें पात्र, देश, उनकी संस्कृति, उनकी कल्पना, उनके जीवन के आदर्श की विस्तृत झाँकी मिल जाती है। इनमें ही विविध संस्कृतियों के रूप किसी न किसी भाँति, किसी न किसी रूप में सुरक्षित मिल जाते हैं। संस्कृति की दृष्टि से कहानियों का अध्ययन बड़े महत्व का होता है। विविध बोलियों में कहानियों का इस प्रकार संग्रह होना चाहिये; और उनका वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिये।

भारतवर्ष कहानियों का मूल उद्भावक माना जाना चाहिये। अट्ठारहवीं शताब्दी में कहानियों का जो अध्ययन किया गया था, उससे तुलनात्मक समीक्षा द्वारा विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि प्रायः सभी लोक-कहानियाँ भारत में ही उद्भूत हुईं और यहाँ से बड़ी लम्बी-लम्बी यात्रा करके समस्त संसार में व्याप्त हुईं। पंचतंत्र, कथा-सरित्सागर, वैताल-पचीसी आदि पुस्तकों में आने वाली विविध कहानियों की विश्वव्यापी यात्राओं का रोचक वर्णन इस काल के पाश्चात्य मनीषियों ने इनके अनुवादों की भूमिकाओं में अथवा स्वतंत्र लेखों के रूप में दिया। ये वर्णन आज भी हमारी आँखें खोलने के लिये पर्याप्त हैं। कितने अध्यवसाय और मौलिक दृष्टि से ये अध्ययन इन विद्वानों ने प्रस्तुत किये। विश्व के कोने-कोने की मान शैली और विषय की सामग्री खोजकर एक स्थान पर एकत्र की और उसमें सूत्र के आदि-अंत की पूरी रेखा खोज निकाली। इस युग में पाश्चात्य विद्वानों को भारत में बहुत श्रद्धा हो गयी।

कुछ समय बाद और भी अधिक विचार-विमर्श से विद्वानों का यह भी मत हो चला कि पाश्चात्य क्षेत्र में भी कुछ कहानियों की मौलिक उद्भावना हुई, और जैसे भारत से पश्चिम की ओर बहुत सी कहानियाँ गईं, उसी प्रकार पश्चिम से भारत को भी बहुत सी आयीं। इस विचार-धारा के रहते हुए भी सत्य यही विदित होता है कि भारत कहानियों की उद्भावना का मूलकेन्द्र है। 'भारत' मूल केन्द्र है, यह तो ठीक रहा, इस पर पर्याप्त विचार भी हुआ, पर भारत में कौन से क्षेत्र में कहानियों का उदय हुआ, इस पर किंचित भी विचार नहीं किया गया।

आज समय आगया है, जब इस विषय पर भी दृष्टिपात होना चाहिये। यह अवश्य ही खेद का विषय है कि इस संबंध की विशेष सामग्री अभी तक

हम लोगों के सामने नहीं है, फिर भी जो कुछ सामग्री है उस पर कुछ विचार कर लिया जाय तो अच्छा रहेगा। ऐसी सामग्री की दृष्टि से हमारे पास प्रचलित कहानी ग्रंथ हैं, पुराण हैं, धर्म-शास्त्र हैं, इतिहास हैं।

ये सभी कुछ इस संभावना की ओर संकेत करते हैं कि व्रज-भूमि ही मौलिक कहानियों की उद्भाविका थी। यह इतिहास-सिद्ध है कि शूरसेन प्रदेश ही संस्कृत भाषा का प्रधान क्षेत्र था। यहीं से नाटक-कला का उदय हुआ—ऐसा कीथ आदि विद्वान मानते हैं। नाटक-कला का उदय वहीं हो सकता है, जहाँ कथानक, कथोपकथन, अभिनेता एक साथ मिलें। इस आधार से शूरसेन प्रदेश में कथाओं की प्रचुरता होगी, ये कथाएँ मौलिक ही होंगी। मनु ने धर्म-शास्त्र में यह स्पष्ट उल्लेख किया है कि यही वह भूमि है जो सब की गुरू है, जहाँ से समस्त ज्ञान सीखा जा सकता है। मौलिकता और ज्ञानशीलता के लिए जो देश इतना प्रसिद्ध होगा उसी में कहानियों की मूल कल्पना विकसित हो सकती है। महाकाव्यों में, महाभारत में कृष्ण-चरित्र का विशेष उल्लेख है, भागवत बिलकुल ही कृष्ण चरित्र पर निर्भर करता है। कृष्ण का शूरसेन प्रदेश से घनिष्ट सम्बन्ध भी इसी दिशा की ओर संकेत करता है। कथा सरित्-सागर, कथा कोष है, और यह बहुत प्राचीन लोक-वार्ता का संग्रह है। संभवतः इससे पूर्व का इससे पुराना कोई संग्रह नहीं मिलता। कथा-सरित्-सागर की भूमिका पर ध्यान दिया जाय तो यह विदित होता है कि वह बृहत्कथा के रूप में गुणाढ्य द्वारा पैशाची में लिखा गया। जिसका अभिप्रायः हम आधुनिक दृष्टि से यह ले सकते हैं कि ये कहानियाँ जो गुणाढ्य ने लिखीं, मौखिक परंपरा द्वारा लोक-बोली में प्रचलित रही होंगी। गुणाढ्य ने उन्हें संकलित किया, जैसे आज लोक-वार्ताकार संग्रह करता है। इन कहानियों का मूलाधार अवन्ति का राजा उदयन और उसका पुत्र है। उदयन वत्सराज था; कौशाम्बी का राजा था। कौशाम्बी यमुना के किनारे प्रयाग से लगभग ३४ मील पश्चिम में थी। उज्जैन में उदयन की श्वसुराल थी। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कौशाम्बी से उज्जैन तक किसी समय शूरसेन प्रदेश रहा होगा। यह शौरसेनी-प्राकृत का क्षेत्र है। महाकाव्य में मिलने वाली कहानियों में 'नल-दमयन्ती' की कहानी सब से प्राचीन मानी जाती है। नल का स्थान नरवरगढ़ शूरसेन क्षेत्र में ही आता है। ये कुछ अनुमान हैं, जिनके लिये अभी पुष्ट प्रमाण नहीं। इनके आधार पर किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने में हमने साहस का ही काम किया है। कुछ भी हो, ऐसा प्रतीत होता है कि यह शूरसेन प्रदेश ही कहानियों का प्रधान केन्द्र रहा होगा। यह तो प्रसंग वश उल्लेख कर दिया

गया है। कहानियों का निर्माण कहीं भी हुआ हो, चाहें ब्रज में, चाहे अन्यत्र, या सर्वत्र, कहानियों का अध्ययन है महत्वपूर्ण।

कहानियाँ मुख्यतः तीन भागों में विभक्त की जाती हैं। १. गाथाएँ, २. अवदान तथा ३. कहानियाँ। देव-विषयक कहानियाँ गाथाएँ कही जा सकती हैं। इन कहानियों का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। ये अंग्रेजी के "माइथ" की पर्यायवाची हैं। अवदान अंग्रेजी में लीजेंड कही जा सकती हैं, इनका बीज ऐतिहासिक होता है। उसके मूल से गाथाओं या कहानियों से कल्पना-सामग्री लेकर अद्भुत रचनाएँ करली जाती हैं। कहानियाँ वे सभी हैं, जो उक्त वर्गों में नहीं आतीं। इन कहानियों में 'अवदान' नहीं दी गई—यह राजा भोज के नाम आने से 'चौदेई विद्या' वाली कहानी अवदान भले ही कहे जा सके, पर उसमें कोई तथ्य नहीं।

सभी कहानियों का अध्ययन करने के लिये हमें पहिले तो कहानियों के पात्र और घटनाओं का अलग-अलग विश्लेषण करना होगा। पात्रों से भी अधिक महत्वपूर्ण, इन कहानियों में घटनाएँ ही होती हैं। घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन दूसरा पग है। जहाँ जहाँ भी भारत में तथा विदेश में जो उल्लेख अथवा रूप मिलता है, उसको सामने लाकर यह जानने की आवश्यकता होती है कि उसे कहाँ के किस प्रभाव ने क्या रूप प्रदान किया है। तीसरी स्थिति में इस अध्ययन से उस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है जो समाज की मूल प्रवृत्तियों का व्यापक निरूपण करते हैं। इस प्रकार का एक अध्ययन ब्रज-भारती की किसी एक विगत संख्या में 'यारु होइ तौ ऐसौ होइ' नामक कहानी के द्वारा हमने प्रस्तुत किया था। यहाँ उस पर विस्तार पूर्वक विचार करने का अवकाश नहीं। यहाँ तो हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि कहानियों का ऐसा संग्रह और अध्ययन समाज-शास्त्र और विज्ञान की दृष्टि से अत्यंत उपादेय है।

हिंदी में यह नितान्त नया उद्योग कहा जा सकता है। हिंदी में लोक-कहानियों का संग्रह अभी तक नहीं प्रकाशित हुआ। शुक बहत्तरी, वैताल-पचीसी, सिंहासन बत्तीसी, किस्सा तोता-मैना, गंगाराम पटेल की यात्रा आदि कुछ संग्रह हिंदी में बहुत समय से प्रचलित हैं। इसमें पहिली तीन का मूल संस्कृत है। ये तीनों अन्तर्राष्ट्रीय महत्व रखती हैं। किंतु हिंदी में इनको वैज्ञानिक अध्ययन के लिये नहीं प्रस्तुत किया गया; जनता के निम्न वर्ग की निम्न रुचि को संतुष्ट करने के लिये ही इनका प्रचार रहा है। किस्सा

तोता-मैना में तो उस रुचि का बड़ा पतनकारी रूप प्रस्तुत हुआ है। पं० रामनरेश त्रिपाठी जी ने, जिन्हें हम हिंदी में 'लोक-वार्ता' का प्रथम अग्रसरी कह सकते हैं, कुंवर कन्हैया जू से कुछ त्यौहार-ब्रत सबंधी वार्ताएँ और कहानियाँ संग्रह करायी थीं। वे केवल धार्मिक वृत्ति को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत की गयी थीं। अभी 'बुंदेलखंड की ग्राम्य कहानियाँ' नामक एक पुस्तक और प्रस्तुत हो रही है। उसकी भूमिका में श्रीकृष्णानंद गुप्त ने लिखा है, "मैं इस कहानी-संग्रह के प्रकाशन को हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण घटना मानता हूँ।"

हमारे यहाँ लोक-गीतों के अच्छे संग्रह हुए हैं, पर जहाँ तक मैं जानता हूँ, यह पहिला अवसर है जब कि किसी एक जनपद की कहानियाँ विधिवत् संगृहीत की जाकर हिन्दी पाठकों की सेवा में पहुँच रही हैं। ये बुंदेलखंड की कहानियाँ श्री शिवसहाय चतुर्वेदी द्वारा संकलित और संपादित हैं। ये 'मधुकर' और 'लोक-वार्ता' में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। हम नहीं जानते कि यथार्थ प्रकाशन ब्रज की इन लोक-कहानियों का पहिले हो रहा है या बुंदेलखंडी का, पर यह निर्विवाद है कि बुंदेलखंडी कहानियों का संग्रह भी पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है। हमारा यह संग्रह भी यों पूर्णतः वैज्ञानिक नहीं है, पर कई दृष्टियों से यह विशेष महत्त्व रखता है। एक तो यह कि ये कहानियाँ जिन गाँवों से संग्रह की गयी हैं, जिन व्यक्तियों के द्वारा संग्रह की गयीं हैं, उनका निर्देश प्रत्येक कहानी के साथ किया गया है। दूसरे यह कि जिस क्षेत्र से कहानी ली गयी हैं, यह चेष्टा की गयी है कि उसी क्षेत्र की भाषा उसमें रहे। इससे ब्रज बोली के विविध रूपों के वैज्ञानिक अध्ययन की सुविधा होगी, जन-पदीय बोली का यथार्थ रूप सामने आयेगा और हिंदी को अनेकों शब्द मिल सकेंगे। हमने संपादन करने में किंचित यह भी उद्योग किया है कि प्रत्येक शब्द यथा संभव उच्चारण के अनुकूल रखा जाय।

यह कार्य पूर्णतः वैज्ञानिक तभी हो सकता था जब कि प्रत्येक ध्वनि के लिये ध्वनि-विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक वर्णमाला का उपयोग किया जाता, और प्रत्येक ध्वनि को ध्वनि-यंत्र से ठीक-ठीक निश्चित कर लिया जाता कि वह स्थान-प्रयत्न आदि की दृष्टि से क्या है। पहिली बात तो इसलिये नहीं हो सकी कि पुस्तक साधारण पाठक के काम की नहीं रह जाती, केवल विशेषज्ञों को ही रुचती। सर ऑरेल स्टील तथा सर जार्ज ए० ग्रिमर्स द्वारा संपादित 'हातिमंस सांगस एण्ड स्टोरीज़' की भाँति

वैज्ञानिक वर्णमाला में कहानी देकर उसकी प्रतिलिपि ब्रज और हिंदी की साधारण नागरी वर्णमाला में दी जाती तो बहुत व्ययसाध्य हो जाती और साधारण व्यक्ति की सामर्थ से परे हो जाती। दूसरी बात साधन-सापेक्षय थी। ध्वनि निरूपक यंत्र कहीं युक्तप्रांत में है भी, इसका मुझे ज्ञान नहीं। यह भारी कठिनाई थी, और अत्यंत व्ययसापेक्ष थी। इन सब कारणों से अपनी नागरी वर्णमाला से ही निकटस्थ ध्वनि का काम लिया गया है, और यह चेष्टा की गयी है कि जहाँ तक संभव हो ठीक-ठीक अभिव्यक्ति हो जाय। एक ही शब्द के इस प्रदेश में कई उच्चारण मिलते हैं। उन उच्चारणों को नीचे पाद-टिप्पणियों में देने की चेष्टा की गयी है। यह कार्य भी सर्वांगपूर्ण नहीं हो सका है।

अनेकों ऐसे शब्द रह गये हैं जिनके और-और उच्चारण मिलते हैं, पर जो छूट गये हैं। यह मेरे अपने ही प्रमाद का परिणाम कहा जायगा। वास्तविक बात यह है कि बहुत अधिक विस्तार से यह कार्य करने में भी एक दुरूहता का भय था, और संपादक प्रमाद की अपेक्षा भय से अधिक प्रभावित हुआ। एक बात यह भी है कि हिंदी में यह अपनी तरह का पहिला ही उद्योग होने के कारण इस कार्य की पूर्ण वैज्ञानिक प्रणाली विकसित नहीं हो पायी, केवल मार्ग-निर्धारण के रूप में ही कुछ निर्देश कर दिये गये हैं। शब्दों के अर्थ भी नीचे दिये गये हैं। यह कार्य भी पूरा नहीं हुआ। बहुत से शब्द ऐसे छूट गये होंगे, जिनके अर्थ की आवश्यकता हिंदी पाठक को प्रतीत हो। उसके लिये संपादक क्षमा ही माँग सकता है; किंतु एक कारण भी था। संपादक को यह अनुभव हुआ कि इस प्रकार से प्रत्येक पृष्ठ में अर्थ देने की अपेक्षा अंत में एक शब्द-कोष देना अधिक वैज्ञानिक तथा सुविधाजनक और महत्वपूर्ण होगा। फलतः कोष बनाने की ओर ध्यान रहा, पर यह भी संपादक जानता था कि मंडल के लिये यह एक समस्या हो सकती है कि वह अपनी स्थिति और सामर्थ्य के अनुसार ऐसा शब्द-कोष पुस्तक अंत में छपवा सके या नहीं, इसलिये उसने ऐसी टिप्पणियाँ देने से बिलकुल हाथ खींच भी नहीं लिया। इस प्रकार यह कार्य संपन्न हुआ है, और अपने इस रूप में यह हिंदी में सर्वथा नया प्रकाशन है। मंडल का उद्देश्य इसमें यही रहा है कि जनपदीय अध्ययन की सामग्री प्रस्तुत हो, हिंदी का भंडार भरे और साधारण पाठक को भी संतोष मिले।

इस पुस्तक के संग्रह में मंडल के जिन-जिन केन्द्र संयोजकों और कार्य-कर्ताओं ने भाग लिया है, उनको मैं धन्यवाद देता हूँ। उनके कार्य का

महत्व यथार्थतः आज नहीं आँका जा सकता। किंतु इस दिशा में जो कार्य हुआ है, वह कभी इस रूप में न हो सका होता, यदि ब्रज साहित्य मंडल के प्रचार मंत्री सब-डिप्टी इंसपेक्टर ऑफ स्कूल्स मथुरा श्री सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव मेरे परामर्श और सुझाव के अनुसार यथार्थ रुचि पूर्वक यह सब कार्य न कराते। उन्होंने इसमें बहुत क्रियाशील भाग लिया है और आज उनका यह उद्योग इस रूप में प्रकाशित हो रहा है, इससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता होगी। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल एम. ए., डी. लिट्., सुपरिंटेंडेंट इम्पीरियल म्यूज़ियम, एशियाटिक ऐंटिक्विटीज़ म्यूज़ियम नई दिल्ली के लिये हमारे पास शब्द कहाँ हैं? वे मंडल के आरंभिक सभापति और ठोस शोध-कार्य में दिशा-निर्देशक रहे हैं। उन्होंने मंडल की इस वैज्ञानिक गति-विधि की अपने पत्र में अत्यंत प्रशंसा की थी। उन्होंने इस पुस्तक की शैली को ठीक बताया, यह संपादक के लिये अत्यंत उत्साहवर्धक था। मंडल के प्रबंध मंत्री श्रीरामनारायण जी भी कम प्रशंसा के पात्र नहीं।

यह पुस्तक प्रेस में दिये जाने के लिये पिछली फर्वरी में तैयार थी। कितनी ही कठिनाइयों के कारण इसके छपने में देर हो गयी। ठीक प्रेस मिलने में भी परेशानी पड़ी। अंततः अग्रवाल प्रेस को ही यह कार्य विशेष आग्रह से सौंपा गया। इसके अध्यक्ष श्री मीतलजी की साहित्य में विशेष रुचि है; वे ही ऐसा कार्य सँभाल सकते थे। वास्तव में इसके प्रूफ संपादक द्वारा ही देखे जाने चाहिये थे; पर संपादक आगरा में था, प्रेस मथुरा में। फलतः इसका प्रूफ़ देखने का दायित्व भी मीतल जी पर ही आ पड़ा। पुस्तक की सुघरता श्री मीतलजी के ही कारण है। यह पुस्तक अब विद्वानों और पाठकों का मनोरंजन करेगी, ऐसा विश्वास है।

वैज्ञानिक दृष्टि से कुछ अभावों की ओर हम ऊपर प्रकाश डाल चुके हैं, किंतु सबसे भारी अभाव हमारी दृष्टि से यह है कि ब्रज की विविध बोलियों का इन कहानियों के आधार पर कोई अध्ययन यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया। संपादक इसके लिये भी तैयार था, पर स्थानाभाव के कारण ही उसे भी छोड़ देना पड़ा है। हम समझते हैं कि इन अभावों के साथ भी इस उद्योग का महत्व महान् रहेगा।

भोगीपुरा,
आगरा.

—सत्येन्द्र

ब्रज की लोक-कहानियाँ



—एक—

देव-कहानियाँ

[यहाँ देव-विषयक कहानियाँ दी गई हैं।]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं :—



१. नारद और भगवान कौ खेल



एक दिनाँ नारद जी भगवान[1]जी ते बोले कै आज खेलेंगे[2]। सो भगवान[1] बोले कै कैसें खेलिंगे[2]। सो नारद जी बोले कै दाँई-मिच्चा † खेलि लेउ। सो भगवान नें कही कै तुम मिचेंगे* जब तौ मैं दुबकूँगौ और मैं मिचूं जब तुम दुबकियौ। सो नारद राजी है गये।

सो पहलें नारद जी दुबके। सो एक पीपर की खोल में जाइ दुबके। सो भगवान देखि रहे। सो झूँठे कूं दो-तीन ठौर देखि कें वा पीपर पै आइ गये। सो बोले कै नारद जी निकरि[3] आऔ। सो वे निकरि[3] आए। तौ फिर भगवान जी दुबके। सो भगवान छै महीना के बालक बनिकें म्हौ में अँगूठा दै कैं एक दगरे में रोइबे लग गये। सो नारदजी म्हाँ आये। तौ बिन कूं देखि तौ जाँय पर पहिचनें नाँइ। सो परे ते एक बामन आँचर करिकें आइ रह्यौ ओ। सो वु बामन अपनी बहू ते बोल्यौ कै याकूँ बालक कूँ लै चल[4]। सो वु बहू बोली : कै मैं तौ नाँइ लै चलूँ। यों[5] कहिंगे[6] कै पीहर ते लाई है[6]। सो मैं तो नाँइ लै चलूँ। सो वु बामन बोलौ कैसौ अच्छौ बालक है तू याइ[7] लै चल। वानें बहुत नाईं करी पर न मान्यौ[8]।

तौ वु छोरा गोदी में लीयौ सोई वाके आंचरन में दूध पैदा है गयौ। सो वु खूब दूध पीबै। झट गाँव केन्नें वु जाति में ते छेकि दियौ और गाँव मं ते भगाइ दियौ।

---

१ भगमान
२ खेलिंग्गे
३ निकसि
४ चलि
५ ज्यौं
६ ऐ
७ जाइ
८ मानौं

† एक खेल—आँख मिचौनी
* आँख बंद कर लेना

सो वु छोरा दिन-दिन बड़ौ होइ । सो स्यानौं है गयौ तौ वु कुआ पै न्हाइबे जायौ करै ओ। सो एक दिनाँ नारद जी महीं[1] है-कैं जाइ रहे। सो भगवान जी नें तौ वे पहँचान लिये[2] पर उनपै न पहँचने। सो भगवान बोले कै ओ गैलहारे पानी पीजा । सो वे बोले : मोइ प्यास नाँइ । भगवान बोले: कै तोइ थोरी-सी दूर चलिकैं प्यास लगैगी। तौ नारद बोले कै मोइ प्यास नाँय। सो वाइ थोरी सी दूर चलिकें खूब जोर ते प्यास लगी । तौ फिर नारद भगवान के पास आए और बोले कै अब प्याय दै । तौ फिर भगवान बोले कि अब चौं प्यादें[3] । जब हमनें कही जब तौ नाँय पीयौ। सो बोले : नाँय अब प्याइ दै। तौ वाइ पानी प्याइ दियौ। सो भगवान बोले कै रोटी और खाइजा । तौ वे बोले मोइ भूँक नाँय। तौ भगवान बोले : तोइ नेंक दूर चलिकै भूँक लगैगी। तौ न माने।

सो भगवान की करनी ऐसी भई, वायै थोरी दूर चलिकें वहौत जोर ते भूख-लगी। सो वे बगदे और कही : ला अब रोटी खवाइ दै। तौ भगवान बोले: जब हमनें कही जब तौ खाई ना[4] अब का रोटी धरी हैं[5]। तौ वे बोले कै जब मोइ भूक नाई। तौ भगवान नें सूरज के तेह † ते रोटी करीं सो नारदजी बोले : तुम तौ भगवान से लगें । वानें कही : तोइ का खबर। तौ वे बोले कै तुमनें सूरज के तेह ते रोटी करीं । सो भगवान बोले : तू मोय दगरे में देखि गयौ ओ मैं बुई हूँ[6] जो म्हौं में उँगरिया दैकें रोइ रह्यो। तौ भगवान विनकूं वामन कूं लैकें अपने पहले गाँव कूं करवे गये सो वे भगवान विन की जाति-बिरादरी ते बोले कै मैं भगवान हौ। तुम इनकूँ जाति में मिलाऔ। सो वे जाति में मिलाइ लिये।

नारद और भगवान अपने देवलोक कूं गये।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल, बिलौठी।

---

१ वहीं
२ लये
३ प्याइदें
४ नांई
५ एँ
६ ऊँ
† गरमी

२. कर्म-लच्छिमी कौ बाद



एक दिनाँ करम और लच्छिमी में बाद परि गऔ । करम कहै कै मैं बड़ौ ऊ और लच्छिमी कहै कै मैं बड़ी ऊँ । अब वे ब्रह्मा के जौरें गए । बिन्नें कही कै महाराज हम दोऊन में कु'सौ[1] बड़ौ ऐ । ब्रह्मा नें मन में सोची कै जो याइ[2] बड़ौ बतामतूँ तौ जि बुरौ मानत्वै[3] और जो जाइ बड़ी बतामतूँ तौ जि बुरौ मान्ति[4] ऐ । जा ते मैं इन्नें लैकें सिवजी के जौरें‡ चलूँ, सो बानें कही : कै सिविजी के जौरें चलौ । वे सिवजी के जौरें गये ।

बिन्नें सिवजी ते ऊ वुही बात कही । सो ब्वानें कही कै बिशनू भगमान के जौरें चलौ । सो वे बिशनू के जौरें गए ।

सो बिन्नें बिशनू ते ऊ जिही बात कही । सो बिशनू भगवान नें कही कै मिरतलोक कूँ चलौ । सो वे मिरतलोक में पौंहँचे । सो वे एक गरीब बिराम्मन के द्वार पै डटे । ब्वा बिराम्मन कें एक अम्माई सो वु बिराम्मन राजा के जेंगरान‡‡ पै रहैंऽतो । सो ब्वाइ राजा सेरभर् जौ दैं तो । सो वे दोऊ मा-बेटा गुजर करि लैंते । ब्वा दिना वु बिराम्मन जौ लैकें आयौ सो औन्नें धरिकैं बिन महात्मान के चरनन में परि गयौ सो ब्वानें दरिया रँधवायौ । जब दरिया रँधि गऔ तौ अपने जाति के घर ते थारी माँगिबे गयौ सो काऊ नें थारी न दई । अब वु बरहे कूँ गयौ सो माँते पत्ता तोरि कैं लायौ । सो पत्तरि बनाइ कैं दरिया सिराइ दीऔ । जब सीरौ है गऔ तौ बिन्नें बुलाइबे आयौ सो बिन्नें बौहौतेरी नाँईं करी परि वु न मान्यौ ।

सो भगमान नें एक धूरि की चुटकी लैकें बाके घर माँऊँ फैंकि दई सो ब्वा घर कौ एक मैहल बनि गऔ और ब्वाई मैहल में

---

१ कुन्सौ   २ जाइ

३ मानतुऐ (यहाँ त, उ, ऐ एक ध्वनि बन गये हैं)

४ मान्ति = मान्-ति (न नितान्त लुप्त होकर अनुस्वार नहीं बन जाता)।

‡ पास

‡‡ बछिया–बछड़े, छोटे पशु, यथार्थ में किशोर अवस्था के बछड़े ।

बहौत सी लालटेंन बरिबे लगि गईं और सात थार पचमेल मिठाईन ते भरे आये। सो बे जैंमे गये। सो पाँच थार तौ बिन्नें लै लीये और दुऐ थार रैह गए। सो दुऐ थार बिन माँ-बेटान्नें लै लिये। जब जैं लिए तौ बाहर आइ गए सो बु बिराम्मनु भगमान के पाँय मसकन लगौ। सो भगमान नें पूछी कै तू दिन कैसें बितामतु ऐ। बु बिराम्मनु बोल्यौ: महाराज मैं राजा के जेंगरान पै रैंऽतू सो मैं बिन जेंगरन्नें सिविजी के मन्दिर के जौरें चरामतूँ। सो राजा की बेटी सिविजी पै जानैं कहा चढ़ाइबे आमत्यै सो आधौ परसाद बाँदी ऐ दैंत्यै[1] और आधौ मोइ दैंत्यै[1]। भगमान बोले कै तू कल्लि कूँ परसाद लीजो मति। जब बु पूछै तौ कहि दीजो कै तू या[2] सिवजी पै कहा माँगत्यै[1]।

जब चराइबे गयौ तौ जब राजा की बेटी बोली क मेरे ब्याह में इन्दुर कौ हाथी और बापै भगमान, मेरौ पति और कर्म लच्छिमी आमें और हाथी के आगैं बारंगना नाचती आमें। वा लड़िका[3] नें परसाद[4] लै लियौ। फिर बछरान कूँ चराइ कैं घर आयौ।

तौ राति कूँ फिर पाँव दाबिबे लग् गयौ। फिर भगमान ने पूछी कै कहा कही? बु छोरा बोल्यौ: महाराज न्यों[5] कही कै मेरे ब्याहु में इन्दुर कौ तौ हाथी आवै और वा पै बैठि कैं भगमान मेरौ पति, कर्म, सिवजी, लच्छमी आवैं। और लच्छिमी चौंर ढोरत आवै। फिर भगमानु बोले कि कल्लि तू फिर परसाद[4] मति लीजो और न्यों[5] पूछियो कै ऐसैं मेरे ब्याह में आवें तौ तू मेरे संग ब्याहु करि लेगी। तौ बु छोरा हाथ जोरि कै ठाढ़ौ भयौ कि महाराज तोप के मुँहड़े ते उड़वाइ देगी। तौ फिरि भगमान बोले कै तू कछू[6] बात की चिन्ता मति कर।

---

१ दैंत्यै, माँगत्यै = यहाँ ब्रज में यथार्थ शब्द है दैंति ऐ = मांगति ऐ। त, इ, ऐ उच्चारण-लाघव में 'त्यैं' के निकट पर उससे भिन्न बोले जाते हैं, 'ति' और 'ऐं' उच्चारण-लाघव में एक दूसरे से सटे अवश्य हैं, पर अपनी ध्वनियों में एक दम परस्पर भिन्नता नहीं डालते।

२ जा

३ लरिका

४ परसाद

५ जौ

६ काऊ

तौ फिर् सबेरें गयौ तौ फिर् परसादु[1] दैबे लगी। बानें फिर् नाँय लीयौ। वु बेटी बोली–तू दो दिना ते परसादु[1] क्यों[2] नांइ लैंतुई। व्या ने कही कै मेरे व्याह मैं ऐसेई आइ जाँय तौ तू मेरे संग्ग व्याहु कर् लेगी ? वा छोरी नें ई[3] बात सुनतई परसादु[1] तौ फैंकि दियौ और ढीम † दैबे लग् गई। तौ फिर् दोऊ बगल ते ढीम वाजे। तौ राजा की बेटी रोती रोती[4] अपने घर गई और खट-पाटी लैकें परि गई। व्वाकी राजा के पास खबर पहुँची। राजा नैं पूछी कै कहा बात ऐ। व्वा छोरी नें बताइ दई। तौ फिर व्वाके सिर काटिबे कौ हुकमु दै दियौ।

इतने में एक दीवान चल्यौ आयौ। व्वानें कही कै याकूँ[5] क्यों लै जाय रहे हौ[6]। नौकर बोले : साब, महाराज कौ हुकमु है[7]। व्वानें दीवान नें कही : याकूँ उल्टौ बगदाय लै चलौ। तौ फिर व्वानें राजा ते कही कै न्यावु करौ नाँय, हुकम सिर काटिबे कूँ भेज दियौ। तौ फिर राजा नें जा दीमान की सला ते व्वातें कही कै कल्लि सबेरें हमारे नेगी आमिंग्गे। और सवा मन मोती लिंग्गे, तैनैं दै दिये तौ अपनी लड़की कौ व्याहु तेरे संग्ग करि दुंग्गो। और न दियें तौ सबेरे सिर कटैगौ।

तौ फिर वु छोरा रोतौ रोतौ घर आयौ तौ भगवानु बोले कहा बात है। वु छोरा बोल्यौ कै महाराजु न्यों[8] कह दयी है[7] कि कल्लि सबेरें मेरे नेगी आमिंग्गे। बिनकूँ सवा मन मोती दै दीजौ नहीं तौ सिर कटैगौ। तौ फिर भगवानु बोले कि कोई चिन्ता मति करै।

तौ फिरि सबरे शहर में नोंतौ दियौ कै सिक्का कूँ गीत गाइबे आ जायें। तौ फिर व्वाके घर कोई न आयौ। तौ फिर

१ परसाद
२ चौं
३ जि
४ रोमँति रोमँति
५ जाकूँ
६ औ
७ ऐ
८ यौं

† ढेले

भगवानु नें मट्टी की चुटकी लैकें ऊपर कूँ फेंकि दई। तौ वारंगना नाचती चली आई। तौ सबेरें फिर नेगीन् नें कही कि लाव सवा मन मोती लाओ। वा छोरा नें कही कै महाराज मोती कहाँ ते आमें ? तौ फिर भगमान बोले कै लै तारी लै जा वा कोठरी मैं ते तौल दीजो। तौ फिर बु छोरा तारी लैकें चल्यौ। तौ फिर व्वानें कै तौ तारौ खोल्यौ[1] तौ चनान की सी रासि निकरि परी। तौ तौलि कैं मोती दै दिये और ई[2] कह दई कै राजा पै जितने सबेरे तक चलें जितने लै जाय। तौ बिन नेगीन् नें राजा के घर जाइकैं गठरिया गेर दई। राजा नें कही : भाई या नें तौ दै दिये।

फिर रानी पै खबरि करी। रानी ने कही : व्याहु करवाओ तौ। फिर बाकौ व्याहु करवाऔ। सो इन्दुर कौ तौ हाथी, वा पै भगवान, ब्रह्मा, शिवजी, कर्म, लच्छिमी और वा छोरी कौ पती। लच्छमी चौंर ढोरत आवै। सो व्याहु है गयौ।

जब फिर वे चलबे लगे तौ सब कहें कि भाई याकौ तौ कर्म चेति गयौ। तौ फिर लच्छिमी बोली कै महाराज हमारौ न्यावु नाँय करौ तौ फिर भगवानु बोले : तू अबऊ नाँय सुनैं। सबरे गाँव में तौ न्यौं[3] है रही है कै कर्म चेति गयौ। अब तू काए ते बड़ी रही। सो लच्छिमी सुनिकैं अपने घर कूँ गई।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल, बिलौठी।

---

१ खोलो   २ जि

३ ज्यौं

३. धर्म की कथा



काऊ शहर में एक बड़ो धर्मातमा राजा ओ । वु नित्त दान पुन्न कियौ करत्वो, एक दिनाँ एक साधू आयौ । व्वानें आइकें राजा ते सवाल कियौ कै हे राजा हमें कछू दे । राजा बोल्यौ : महाराज, माँगौ, कहा लेओगे[1] । साधू बोल्यौ : राजा चाहें तौ बारह वर्ष कूँ अपनौ राजपाट दै दै, चाहें अपनौ धर्म दै दै। साधू की बात सुनिकैं राजा बड़े सोच-विचार में परि गओ और मैहलन में जाइकें रानी ते बोल्यौ : रानी साहब एक साधू हमारे न्याँ[2] आयौ ऐ। और वु कह् रह्यौ ऐ कै राजा चाहें तौ अपनौ राजपाट दै दै चाहें अपनौ धर्म दै दै। अब कहा करनौं चँहियै । रानी बोली : राजा ! राजपाट कूँ भलेंई दै दीजौं, परि अपने धर्म कूँ मति दीजौं। रानी की बात सुनि कैं राजा के ऊ मन में भरि गई और आइकैं साधू ते बोल्यौ : महाराज माँगौ, कहा चँहिएँ । साधू जी बोले : राजा हम तौ माँगि चुके । अब तेरी राजी में आवै सो दै दै। राजा बोल्यौ : महाराज मैंने राजपाट सब तुम कूं दीयो । राजा साधू कूं सब राजपाट दैकें चलि दीयौ ।

चलत-चलत गैल में एक बगीची आई । बगीची के पास एक प्याऊ और कूआ। पेड़न की सीरक‡ । बड़े भारी आराम व्वा जगह पै। म्वाँई एक बर के पेड़ के नीचैं पींड़ि* ते एक बौहौत कछू अच्छौ और जीन कस्यौ सुन्दर घोड़ा बँधि रह्यो और एक अस्तिरी† बड़ी खमसूरत[4] व्वा पेड़ के नीचे बैठी अकेली रोइ रही । राजा बोल्यौ तू क्यौं रोइ रही है[3] । राजा कैं बड़ी स्यौं गई कै न्या[2] कोई मानस न्याँ मती ना जि रोइ क्यौं रही ऐ। वु औरत बोली कै मेरौ पती मोइ न्याँ[2] बैठारि कें निभटिवे कूँ चल्यौ गयौ ऐ । सो न जानें काऊ नें मारि दीयौ कै कहूँ अंत‡ कूँ चल्यौ गयौ। मोइ बेठें बैठें

---

१ लेउगे
२ ज्या
३ ऐ
४ खबसूरत=सुन्दर
‡ शीतल छाया ।
* वृक्ष का तना
† स्त्री ।
‡ अन्यत्र

न्यां[1] साँझ है गई। अब मैं पीहर कूँ जाऊ तौ बाप-भइया कहिंगे व्याइ कहूँ मारि कैं डारि आई और आपु भगि आई और सासुरे कूँ जाऊँ तौ वे कहिंगे कै जब बुही नाँइ तौ तेरौ न्यां[1] कहा होइगौ। सो अब मैं कितऊ की न रही। याते तौ मोइ तुमई अपने संग लै चलौ। राजा बोल्यौ : भाई मैं कैसें लै चलूं। बु औरत बोली : कै अब तौ मैं तिहारे ई संग चलूंगी। राजा ते बोली : लेउ ज्या[५] घोड़ा पै बैठि चलौ। राजा बोल्यौ मैं नांइ बैठूं। घोड़ा पै तुही बैठि लै। 'भलौ, कहूँ आदमी के अगार बइअर बैठि सकत्यै। महाराज तुम ही बैठि जाऔ, मैं पैदर चलूंगी। राजा बैठि घोड़ा पै चलि दीयौ और एक दूसरे राजा के शहर में गयौ। औरत बोली : महाराज तुम शहर में जाऔ और एक बढ़िया सौ मकानु किराये पै ठहराइ आऔ। राजा बोलौ, भाई मो पै धेलाऊ पास नायें और जि ऐसी बात कर रही है। जौ तक बु बोली : महाराज रुपया-पइसा की ज़रूरत होइ तौ मो पै ते लै जाऔ। ब्वानें निकारि कैं पान-सात म्हौर व्याइ दै दईं। राजा शहर कूँ गयौ। एक बढ़िया सौ मकान ज्यामें पंखा, बिजली, पलँग सब बात कौ आराम। एक साहूकाल कौ मिल्यौ। राजा व्वा साहूकाल ते बोल्यौ : ज्या मकानैं हमें किराये पै दै दै। साहूकाल देखि व्वाकी हुलिया बोल्यौ : लै लेउ साब, आप व्वा में ठहरौ। राजा व्वा मकान कूँ ठहराइ कैं व्वा औरत के पास आयौ और कही कै मकान तौ मिलि गयौ, चलौ। बु औरत व्वा के संग गई और व्वा मकान में पौहोंचे।

बु औरत बोली : महाराज आप रुपइया लै जाऔ और बजार कूँ जाऔ। खाइबे कूँ सामान, घोड़ा कूँ घास-रातब दानों लै आऔ। राजा लै रुपइया बज़ार कूँ आयौ और खाइबे कौ सामान लैकेँ, घास-दानों लैकें मकान कूँ आयौ। व्वा रानी नें भोजन बनायौ। भोजन बनाइ कैं राजा ते बोली : महाराज आप भोजन करि लेउ। राजा बोल्यौ : आप करौ। रानी बोली महाराज पहलें आप भोजन करौ। अस्तरियो[२] का[३] जि धर्म नहीं[४] है कै

१ ज्या
३ कौ
५ जा
२ यह खड़ी बोली के प्रभाव से रूप बना है : पाठान्तर अस्तिरीनु
४ नाँय

मर्द ते पहलें भोजन करैं। राजा नें भोजन करे। ज्याई[1] तरह[2] वे रहें।

एक दिनाँ रानी बोली : महाराज ज्या[3] घोड़ा की खशामद-वरामद कूँ एकु नौकर लै आओ। बु राजा बोल्यौ : भाई मेरे पास एक धेला नाहें और जि वेई राजन्सी बात कह रही है। बु रानी बोली : महाराज तुम शशिपंजा‡ में मति परि जाऔ करौ। अपने कामें करि लाऔ करौ। मैं औरत बानीऊँ†। नहीं मैं अपने आप इन कामन्नें कर् लायौ करती। रुपइया पइसा की कोई चिन्ता मति कीयौ करौ। मो पै माँगि लेउ करौ। राजा गये और एक नौकर लै आए।

एक दिनाँ रानी बोली : राजा हमारे न्यां जि एकु घोड़ा अच्छौ नाँइ लगै राजा की घुड़सार में ते दो चारि घोड़ा खरीदि लाऔ। एक दिनाँ फिर रानी कहिबे लगी कै महाराज आप बैठे बैठे हैरान नाँइ होइ का? एकु काम करौ, राजा की कचहरीन पै चले जाऔ करौ और जो कछु बात सुन्यौं करौ व्याय मोते आइ कह्यौ करौ। अब तौ राजा रोजु रोटी-पानी जेंई और कचहरी में चल्यौ जाइ। और म्वां जाइ कैं एक खंम्भ ते बैठि जाइ। राजा कहै कै जि कोई मेरे कामदारन कौ लगामाती ऐ। और कामदार समझैं कै जि राजा कौ कछू लगामाती ऐ। याते कोई कछू न कहै।

एक दिनाँ राजा बोल्यो : च्यों भाई जि आदमी जो रोज खंम्भते बैठतु ऐ तिहारौ कछू लगामाती ऐ? कामदार बोले कै राजा साब हमतौ तिहारौ कछू लगामाती* समझि रहे। राजा बोल्यौ : अच्छौ कल्लि हम पूछिंगे। दूसरे दिनाँ जब बु राजा आयौ तौ राजानें अपने ढिंग बुलाइ कैं पूछी। व्वा राजानें अपनौ सब बतौ दीयौ। बु राजा व्वा की सब बातन् नें सुनिकें बोल्यौ : भाई

१ जाई २ तनें
३ जा

‡ असमंजस।

† वैयरबानी शब्द के भाषा विज्ञान की शक्ति से दो भाग हुए। 'वैयर' शब्द पृथक होकर स्त्री का अर्थ देने लगा है। 'बानी' यहाँ 'औरत' के साथ लगाकर 'जाति' का अर्थ दे रहा है।

* सम्बन्धी।

व्वा शहर कौ राजा बड़ौ धर्मात्मा राजा ऐ और बड़ौ ई ज्ञान-मानु ऐ। भाई मोइ तौ तुहू राजा-सौ दिखाई पर् रह्यौ ऐ। व्वा राजा नें व्वाकी हुलिया देखि कें ई पैहचान लयौ। और अपने ढिंग गद्दी पै बैठारि लयौ और बोल्यौ : भाई हम तुम दौनौं पगड़ी पल्टा यार बनि जाँय। अपनी पाग व्वाके मूँड़ पै धर् दई और व्वाकी पाग अपने मूँड़ पै धर् लई। जब साँझ कूँ घर गयौ तौ रानी ते सबु हालु कह्यौ।

फिर दूसरे दिनाँ जब कचहरी में गयौ तौ वु राजा बोल्यौ : भाई तिहारौ कल्हि कूँ नौंतौ ऐ। हमारें सबु अइयौं। व्वाने आइकें अपनी औरत ते कही। दूसरे दिनाँ वे सब रानी सुद्धाँ* राजा के न्यां गये। एक दिनाँ वु रानी बोली : महाराज ! या राजानें तौ हमपै अपनों न्यौतौ चढ़ाऊ कर् दियौ; परि एकु काम करौ, आज तुमऊँ सब सहर कौ, फौज-पल्टन सुद्धाँ राजा कौ नौंतौ करि अइयौं। वु राजा अपने मन में बोल्यौ : भागमान तू कहा कहै। जो हम छै महीना अगार ते लगते तौ जब कहूँ कछू थोरी-घनी सल परती। रानी बोली : राजा तुम कैसी बात कर् रहे हैं[1]। तुमें इन बातन ते कहा परी तुम नौंतौ दै आऔ।

राजा कचहरी में गयौ। राजा ते बोल्यौ : भाई साब आपकौ और सब फौज-पलटन कौ और तमाम शहर कौ मेरे न्याँ कल्हि कौ नौंतौ ऐ। राजा बोल्यौ; कहूँ भाँग पी लई ऐ का ? खैरि बकन देउ, यारु ई तो ऐ। कोई बात नायँ। साँझ कूँ जब वु अपने घर चल्यौ गयौ तौ राजानें एक सिपाई ते कही कै देखि कें आऔ ज्याके न्याँ कहा कहा ठाटु-बाटु ऐ। सिपाई चल्यौ और व्वाके मकान पै आयौ और देखै कै म्वां तौ कोई कैसीऊ किरसाखोरी नाँयें। लौटि कें राजा ते कही : साब म्वां कोई किरसाऊ नाँयें। राजा बोल्यौ अरे वु बकत्वो, भांग-फांग पी लई होइगी। अब व्वा राजानें अपनी रानी ते कही कै मैं तौ सब सहर सुद्धाँ राजा कौ नौंतौ करि आयौऊँ और तेरे न्यां मोइ कछूई नाँय दीखै। रानी बोली : राजा साब ! आप भोजन करिकैं सोइ जाऔ। सबु मैं देखि लुंगी। राजा

---

* सहित। १. एँ

बोल्यौ : भाई यानें अच्छौ मेरौ फजेतौ[1] कीयौ। धोंताएँ राजा जानैं मोते कहा कहैगौ ? राजा कूँ कल न परै। रानी ते फिरि कही। रानी बोली, महाराज दिन निकरन देउ तुम चिन्ता मति करौ। जब समेरे के चारि बजे तौ राजा निभटिबे के मूँड़े चलि दीयौ। रानी बोली : महाराज ! आप कहाँ जाइ रहे हैं। और दिनाँ तौ ज्या[2] टट्टी में निभटिबे जाँते आजु कहा बातै जो बाहर जांतौ राजा बिचारौ लौटि आयौ। रानी बोली : एकु कामु करौ कै तुमकूँ खबर नायें तौ घोड़ा पै चढ़िकें देखि आऔ मेरौ सबु सामान व्वा बगीची पै ऐ ज्यापै ते मोइ लिवाइ कें लाये, सो पतौ तौ लाऔ कहा ढंगु यै।

राजा घोड़ा पै चढ़ि के म्वाँई पौहोंच्यौ। जब प्याऊ के ढिंग पौहोंच्यौ तौ दूरतेई तम्बू डेरा निघा परे। राजा बोल्यौ : भाई न्यां तौ वड़ौ वैभव निघा परि रह्यौ है। जब राजा व्वां के ढिंग पौहोंच्यौ तौ कहा देखै कै देवता सबु काम करि रही हैं और वाराङ्गना गीत आनन्द ते झिंगार मचाइ रही यैं। देखिकें वैभवै राजा अचंभे में रहि गयौ और म्वां ते घोड़ा दौड़ायौ। सूधौ राजा की कचहरी में आयौ और राजा ते बोल्यौ : राजा आप अपनी तैय्यारी करि लेउ। राजा अपने मन में बोल्यौ : बावरौ ऐ, भांग-फांग पी आयौ यै। बकन देउ। राजा नें फिर आदमी भेज्यौ कै देखौ तौ सही जि झूँठ बोलै कै सांची बातै। वु बोल्यौ : राजा साब मेरौ सबु सामान आपके शहर ते एक मील दूरि प्याऊ पै ऐ। राजा नें म्वांई आदमी भेज्यौ। वु आदिमी देखि वैभवै उलटौई भग्यौ। आइकें राजा ते बोल्यौ : महाराज माँ तौ बड़ो भारी जोर को ठाठु यै और म्वां तौ जिहू सल नायें कै वे काम करवइया आदिमीयें कै जानें देवता। राजा नें व्वाई वखत शहर में खबरि कराइ दई कै सब शहर मेरे यार के न्यां दावत खाइबे चलै। सब तैयार है गये। और इतमें वु राजा रानी सबते पहिलें म्वा पौंहोंचि के एक तम्बू में जाय बैठे। अब व्वा राजा की फौज पलटन और सब शहर के आदमी आये तौ देवतान नें व्वाकी बड़ी अच्छी तरह खातरि तसल्ली करी और ज्या बात की काऊ यै खबर तक न परी

१ सहित २ फजीतौ

कै का खन जिमाइ दये। छत्तीसों तरह के भोजन बिनकूँ कराये। जब सबनें भोजन करि लये तौ फिरि राजा कूँ व्वा राजा नें अपने तम्बू में भोजन कराये। व्वा राजा की सात रानीई सो सब कूँ एक एक जोरा दयौ। जो बड़े बड़े कीमती बिनमें मोती, हीरा, जवाहर जड़े हे। जब सब कूँ जिमाइ कें निरचू भए और सब कूँ दै लै लीयौ तौ थोरी देर में सब अन्तरध्यान है गये। न म्वां तम्बू और न कोई आदमी। बु राजा और रानी केवल दो पिरानी रहि गये। बु रानी बोली : महाराज मोइ जितौ बताऔ कै तुम अपने राजपाट कूँ कै बरस कूँ दै आये। राजा नें लिख्यौ पढ़यौ देख्यौ तौ बोल्यौ रानी व्वाकूँ तौ कल्लि बारह बरस है गईं। रानी बोली : तौ अब तुम अपने घरकूँ जाऔ। राजा बोल्यौ : भागुमान मैं तौ तोय छोड़ि कें न्याते न्या पाय न धरुंगो। रानी बोली : महाराज मोइ तुम कहा समझि रहे हैं। मैं तुमारी स्त्री नाँऊँ। मैं ऊँ तुम्हारौ धर्म। सो हे राजा देखि जब तैंनें मैं नांइ त्यागौ तौ मैंनेऊ तू नांइ त्यागौ। तेरी औरत बनिकें तेरे संग रह्यौ और काऊ बात कौ दुख न दीयौ। परि अब तेरी राजी।

[सं० क० कन्हैयालाल : अकबरपुर।

———

नारद कौ घमंड दूरि करयौ



भगमान बोले : नारद जी चलौ तुमें माँझ लोक की शैल कराइ लायें।

नारद जी बोले : चलौ महाराज।

दोऊ चलि दीये। और मिरत लोक में आये।

एक किसान वन नराइ रहयौ। तौ वे व्वा वन के खेत में है कें परि लीये। किसानु बोल्यौ : चौंरे खेत में हैकें गैलै का! दीखतु नांइ का। तिहारी हीये-माथे की फूटि गई यें। पामन ते पेड़ खुंदतें और टूटतें। बावरे हैकें मति चलौ, गैल चलौ। बनि गये साव बाबाजी। दूसरे कौ "ज्यानु" करि रहे हैं।

नारद जी बोले : सुनि लेउ भगमान!

भगमान जी बोले : नारद जी तुम चले आओ।

आगें चले तौ दूसरे के खेत में हैकें परि गये। वु किसान खेत नरामत ते ठाड़ौ है गयौ और साधू न्नें देखि कें दूरि ते दंडौत-प्रनाम करन लग्यौ और बोल्यौ : महाराज जी! वेसे दुष्ट की बातन पै ध्यान मति धरियों। और आपु ते जो कछू कही यै आपुं मोते कहि लेउ। ज्या दुष्ट के खेत में न जांते और महाराज अब तौ आप मेरे न्यां भोजन करिकें जइयों। अब न जान दुंगो। वे साधू वानें रोकि लीये। भगमान बोले : नारद जी भुगति लेउ। इतने में व्वा किसान की औरति रोटी लैकें आइ गई। किसानु अपनी औरत ते बोल्यौ : रोटीन् नें बगदाइ लै जा और इन महात्मान कूं अच्छी तरह न्हाइ धोइकें, चौका-बासन करिकें रोटी करियौ। मैं इन्नें संग लिवाइ कैं लाइ रहयौ हूं।

भगमान बोले : बच्चा हमें जान दै। बौहौत दूरि जानों एं। किसानु बोल्यौ महाराज अबतौ भोजन करिकें चले जइयों। भगमान बोले : नारद जी, भुगति लेउ। जितौ जानई नाँइ देइ। वा किसान के म्वां द्वै बरध बँधि रहे। भगमान बोले : भाई!

तेरौ बरधु मरि गयौ। तू हमें जान दै। किसान बोल्यौ : महाराज मैं एक बरध तेई खाइ कमाउँगो परि भोजन करिकैं जान दुंग्गो। इतने में दूसरौ बरधुऊ मरि गयौ। भगमान बोले : बच्चा तेरौ दूसरौऊ बरधु मरि गयो तू हमें जान दै। बु बोलौ : महाराज मरजान देउ। मेरी खुरपिया तौ नाँइ मरि गई; मैं याते खाइ कमाउँगो। जब दुपहर भयौ तौ बु साधून नें सँग्ग लैकें घर पौहौंच्यौ। ब्वाकौ एक लड़काओ, बु आँगन में खेलि रह्यौ सो खेलत[1] खेलत बु मरि गओ। भगमान बोले : बच्चा देखि तेरौ लड़िका मरि गओ ऐ। तू याकौ[2] इन्तजाम करि। बु बोल्यौ : महाराज बड़ी देर ते खेलि रह्यौ सो खेलत खेलत[1] हारि गयौ और सोइ गयौ ऐ। तुम भोजन करि लेउ। ब्वानें भोजन परोसि दिये। ब्वाकी औरत पूरी सेकतई सेकत मरि गई। साधू बोले : बच्चा तेरी तौ औरतिऊ मरि गई, भाई! हम अब न भोजन करिग्गे। साधू छोड़ि थारीन कूँ उठि कें चलि दीये। बिनके संग्गई लै लुटिया डोरि किसानऊँ चलि दीयौ। साधू बोले जि अच्छी आफति लगी। किसानु बोल्यौ : महाराज ठैहर जाओ। तुमें प्यास लगैगी तौ पानी तऊ प्याइ दउँगो और हारि जाउगे तौ पाँय दाबि दउंगो। मोऊ ऐ संग्ग लै चलौ। तीन्यौं चलि दीये।

साधू बोले : बच्चा मरे प्यासे। भाई पानी पिवाइ। बु बोल्यौ : महाराज आप ज्या[3] पेड़ के नीचें सीरक में बैठि जाऔ, मैं पानी लै आऊँ। साधू पेड़तर बैठि गये और किसानु पानी लैबे गयौ। भगवान बोले : नारद जी! चलौ पेड़न की ओट में है कें निकरि चलौ। साधू पेड़ की ओटई ओट अन्तर्ध्यान है गये। इतमें किसानु कूआ पै पौहोंच्यौ और कूआ में लोटा फांसि दयौ। लोटा कूआ में पौहोंच्यौ और बन्दर नें पकरि लयौ। किसानु बोल्यौ : कहा आफति लगि गई। मेरे तौ साधू प्यासे मर् रहे ऐं। बंदर बोल्यौ : भाई तू मोय ऊपर निकारि लै। भाई तेरौ कछू काम परैगौ तौ मैं जी जान ते हाजिर रहूँगो। किसान ने बन्दर निकारि

१ खेल्त २ जाकौ
३ जा

दयौ। बंदर बोल्यौ : भाई यामें एक सुनार परौ ऐ ब्वाइ मति निकारिश्रो।

किसान नें फिरि लोटा फाँस्यौ। लोटा फिरि स्यांप नै पकरि लीयौ। किसानु बोल्यौ : भाई मैं तोइ नहीं निकारुंगो, तू मोइ खाइ जाइगौ। स्यांपु बोल्यौ : भाई मेरे-तेरे बीच गंगा-जमुना जो मैं तोते कछू कहूं परि तू मोइ निकारि लै। ब्वानें स्यांपऊ निकारि लयौ। स्यांपु अब जाइ ना। बु बोल्यौ : भाई तू जा। स्यांपु बोल्यौ : भाई तू डरपै मति मैं तोते कछू न कहुंगो। परि एक कामु करियो। कै जब तो पै मुसीबति परै तौ नेंक मोइ यादि करि लीजो। श्रौर या सुनारै मति निकारियो।

फिरि ब्वानें लोटा फांस्यौ तौ सुनार नें पकरि लीयौ। बौहौत सी वानें नाँही करी परि सुनार के नें लोटा न छोड़्यौ। ब्वानें सुनारऊ निकारि दयौ। श्रौर लोटा मांजि कैं पानी भरि कैं ब्वा पेड़ तर आयो तौ म्वां कोई न पायौ। बु बौहौत घबड़ायौ श्रौर बन में खूब ढूँड़े परि कहूं न पाये। हारिकैं एक पेड़ के नीचें बैठि गयौ। पानी पीयौ। कछू होश भयौ। फिरि पेशाब करिबे बैठ्यौ तौ पेशाब की ठौर पै कछू सौने चांदी कौ जेबरु मिल्यौ। जेबर कूँ लैकें बु ब्वा शहर में बेचिबे कूँ गयौ श्रौर वाई सुनार कैं जाइ पौहुँच्यौ। बु जेबरु ब्वा सुनारै दिखायौ। सुनार अपने मनमें बोल्यौ कै जि जेबर तौ राजा की बेटी कौ ऐ, जाइ चोर लै गये। सुनार बोल्यौ कै भाई तू तनक बैठि जा मैं घर ते रुपइया लै आऊँ। सुनार ज्या मूँड़े ते राजा के जौरैं पौहोंच्यौ श्रौर राजा ते बोल्यौ : महाराज! आपकी लड़िकी कौ जो जेबर चोरी चल्यौ गयौ काश्रौ, बु आजु मिलि गयौ श्रौर बु आदिमीऊ मेरी दुकान पै बैठ्यौ ऐ जो ज्याइ[1] लायौ यै। राजा नें सिपाई भेजिकें बु पकरवाइ लयौ श्रौर हवालात में मुँदवाइ दयौ।

बु बोल्यौ[2] : भाई ज्याई[3] मारें बु स्यांपु श्रौर बंदर नाहीं करि गये कै ज्या सुनारै मति निकारिश्रो। परि मोइ कहा खबरी[4]

१ जाइ
२ बोलौ
३ जाई
४ 'खबर ही'

कै मेरे संग ऐसौ होगौ। परि खैर भगमान मालिक हैं। किसान मन में बोल्यौ[1] कै भाई आजु स्यांपै तौ परचाऔ। बानें स्यापु यादि कीयौ। स्यांपु चल्यौ और हवालात के चार्यौ लंगं† सूराख ढँढ़त फिरै। परि कहूँ कोई गैल न मिलै। ऊपर चढ़ि कैं खिरकी में है कैं व्याके ढिंग आयौ औरु बोल्यौ[1] कै भाई कैसें यादि कीयौ। किसानु बोल्यौ भाई अबहू बताइबे की कसरि रही ऐ का। हवालात में तौ बंद पर्यौऊँ। स्यांपु बोल्यौ: भाई मैं जाइ रह्यौ ऊँ और राजा कूँ खाउँगो। और कितने ऊ बाइगी उतारौ परि मैं न उतरुंगो। और तू उतारै तौ भूटेऊ कूँ उतरि आउँगो।

स्यांप चल्यौ और राजा की पन्हा ‡ में बैठि गयौ। राजा नें जब पन्हा पहरी तौ स्याँप ने काटि खायौ। राजा बेहोश है गयौ। बड़े बड़े बाइगी इखट्ठे* भये परि स्यांपु न उतरै। शहर में हल्ला मचि रह्यौ। किसानु हवालात के पहरे वारे ते बोल्यौ भाई जि काए कौ हल्ला मचि रहयौ ऐ। पहरेदार बोल्यौ: भाई हमारौ राजा स्यांप नें खाइ लयौ यै। और बड़े बड़े बाइगी आये यें परि स्यांपु नाँइ उतरै। बु बोल्यौ: भाई नेंक मोऊ ऐ दिखाय देगौ? पहरेदार बोल्यौ: भाई मैं रानी साब् कूँ पूछि आऊँ। बु दौरौ दौरौ रानी के पास गयौ और व्या कौ सबु हाल सुनायौ। रानी बोली: छोड़ि देउ। व्याऊ ऐ देखन देउ। मति कहूं व्याई के हात जस आइ जाय।

पहरेदार नें बु छोड़ि दयौ। और बाकूँ लैकें राजा के जौरें पौहोंच्यौ। व्यानें सबु आदिमी बाहर निकारि दये। और थोड़ी सी राख लैकें राजा के पाय ते लगाई। राख के लगामत खैम राजा कूँ होसु भयौ। शहर में हल्ला मचि गयौ कै कैदी नें राजा

---

१ बोलौ

† ओर

‡ यहाँ लिंग प्रयोग में असावधानी है। 'पन्हाँ' शब्द पन्हैयाँ अथवा जूती की भाँति स्त्री लिंग में प्रयोग किया गया है, है यह पुल्लिंग।

* इकट्ठे, एकत्रित।

की जानि बचाइ दई। जब राजा कूँ खूब होश भयौ तौ रानी राजा ते कहन लगी महाराज जानें आपकौ ज्यौ दान दीयौ है। व्वाकूँ कछू इनाम जरूर दै देउ। राजा के मन में आई। राजा नें आधौ राज व्वाकूँ दै दयौ। और अपनी लड़िकी कौ व्याहु व्वाके संग में करि दयौ। अब तौ किसानु खूब ते रहन लग्यौ।

एक दिना बु घोड़ा पै चढ़िकें जंगल में शिकार खेलिबे कू गयौ। शांझ कूँ जब लौटि आयौ तौ व्वाइ एक पेड़ पै बंदर बैठ्यौ पायौ। बंदर नें कही कै भाई लै एकु अमर फलु मोइ मिल्या ऐ सो ज्या तू खाइ लै। तू सदा अमर है जाइगौ। किसानु व्वा अमर फल कूँ लैकें घर आयौ। और जब भोजन करिबे बैठ्यौ जब व्वाइ यादि आई। बु व्वा राजा की बेटी ते बोल्यौ कै लै जि हम पै एकु फलु ऐ। या के द्वै टूँक करि लै। आधौ तू खाइ लै आधौ मोइ दै दै। दोऊ अमर है जाँइगे। राजा की बेटी बोली : महाराज एकु और लाओ सो हमारे महतारी बापऊ अमर रहें। किसानु अच्छी आफति आई। अब जानें बंदरु मिलै कै नांइ। व्वानें भोजन ऊ न करे। कसि घोड़ा चलि दीयौ। आर व्वाई ठौर बंदरु म्वांई बैठ्यौ पायौ। बंदर ते बोल्यौ भाई एक फलु और दै दै नहीं मेरे घर कलेसु होगौ। बंदरु बोल्यौ, भाई मैं तो नारदजी पै ते लायो। 'चलि भाई म्वाँई लै चलि।' वे नारदजी के पास पौहोंचे नारदजी ते कही। नारदजी बोले : भाई मैं तौ श्री विश्नु भगमान पै ते लायौ चलौ म्वांई चलौ। अब श्री बिश्नु भगमान ते कही कै एकु फल देउ। विश्नू भगमान बोले : अच्छौ भाई फल जरूर दिग्गे। परि एक काम करि तू हमारी दरसराय की जब तक शैल करि आ। हम तेरे काजें अमर फल लै आमें। बु किसानु दरसराय की शैल करिबे गयौ तौ कहा देखै कै बाके दोऊ बरध बँधि रहे हैं। फिरि आगें चल्यौ तौ देखै कै छोरा खेलि रह्यौ और आगे बढ़्यौ तौ औरत व्वाई रसोइया में पूरी करि रही है। और घर में देखै तौ बेई साधू भोजन करि रहे हैं। बिनें देखिकें सब फलै भूलि गयौ। भगमान बोले देखौ मिरतलोक में मेरे ऐसे ऐसे भगत परे यें। जिननें आँखिन देखें सबु सुख त्यागि दीयौ और हमारे संग चलि दीयौ। [सं० क० कन्हैयालाल अकबरपुर।

५. करमु और लक्ष्मी



एक घसखुदा ठीक दुपहरी[1] में घासु खोदि रह्यौ ओ। इतने[2] में कर्म और लच्छिमी दौनों चले आये। लच्छिमी जी कहन लगीं कै कर्मराज जी! जि कोई बड़ौ दुखिया ऐ जो दुपहरी[1] में ही घासु खोदिबे लगि रह्यौ ऐ। तुम नेंक कहि देउ तौ मैं जाइ कछू दै आऊँ। सो जि अपनी चोखी तरह[3] गुजर करै। कर्मराज बोले कै जाऔ मैं कब नाहीं करि रह्यौ हूँ[4]। तौ लच्छिमी जी घसेरे† के जौरें आईं औरु चारि असरफ़ी दैकें बोलीं कै अब तू घासु खोदिबे मति अइयो। घसेरौ पैहलें तौ बड़ौ डरप्यौ। बानें समझी कै खेत-वारी आइ रही ऐ। सो पहल ते पहलेंई ठाड़ौ ह्वै कें चूतर झारन लग्यौ। परि जब असरफ़ी मिलीं तौ बड़ौ मगन भयौ। बेचारौ असरफ़ी बानें फटे से स्वाफ़ा में बाँधि लईं औरु घास खोदिबे लगि गयौ।

जौरेंई एक मूँसेन कौ भिट्टौ* औ। बामें ते एकु मूँसौ निकस्यौ और बा गाँठि कूँ कतरि कें भिटे* में लै गयौ। घसेरौ लैं थोरी सी घासु उलाइतौ सौ 'चलि दीयौ[5]' औरु सहर में आयौ। तौ औरु दिना चारि आना की बिकती, बा दिना छै पइसा की बिकी। लै छै पइसा घर कूँ आयौ। घरकी ऐ बे पइसा दीये। बु बोली कै बज़मारे‡ आजु छै ई पइसा ए। इन्नें तोइ खबाऊँ कै बाल-बच्चेन्नें खबाऊँ कै मैं खाऊँ। घसेरौ बोल्यौ कै भाई एक बौहरी मोइ चार असरफ़ी दै गई ऐ। सो जिलै[6]। अब बु स्वाफा उतारिकैं गाँठि

---

१ दुप्हैरी, धौंपर — २ इत्ते

३ तर्‌है — ४ ऊँ

५ चल्दीयौ — ६ जिल्लै

† घास खोदने वाला।

* बिल।

‡ गाली वज्र से मारा हुआ।

टटोरै परि गाँठि न पाई। वानें बड़ौ अचम्भौ कीयौ कि जि का भई। घरवारी ते बोल्यौ कै भाई अब तौ मैं भूँटौ परि गश्रौ। कछू खाइवे होइ तौ दै दै नहीं तेरी राजी ऐ। घसेरौ भूँकौ-प्यासौ सोइ गयौ। धौंताई पीरी की फाटनि* लै खुरपिया चलि दीयौ और वाई ठौर पै घासु जाइ खोदी। लच्छिमी और करमु फिरि आये।

कर्म बोले : लच्छिमीजी! जि तौ फिरि घासु खोदि रह्यौ है। लच्छिमी जी बोली : अबकें कछू और दै आऊँ। कर्म बोले दै आश्रौ। लच्छिमी जी घसेरे के ढिंग आईं और आठ असरफी फिरि दै दईं। वानें अपनी आँटी में लगाइ लईं। फिरि लेह-देह चल्यौ औरु बंबे के पुल पै हैकें रोज की गैल न गयौ। बीच ई बीच पानी में घुसि कें चलि दीयौ। धोवती भीजिबे के मारें खोलि लई। वे असरफी पानी में गिरि परीं। सहर में आइकें घासु बेची। बुई छै पइसा की बिकी। लैकें घर आयौ। घर आइकें पइसा दीये। घरवारी नें बाइ गारी दईं। बिचारौ चुप है गयौ। जब घरवारी कछू स्वाँइति में आई जब बोल्यौ कै भाई आजु बु बौहरी मोइ फिरि आठ असरफी दै गई। परि बंबे में जाइ परीं। घरवारी बोली कै कैसीऊ बात बनाइ, रोटी तौ मिलिबे की हति नाँयें। बिचारौ भूकौई सोइ गयौ औरु भूके कूँ कछू आँघ आई कछू न आई। धौंताई लै खुरपिया फिरि चलि दीयौ। बाई खेत में घास जाइ खोदी।

फिरि कर्म और लच्छिमी आये। कर्म बोल्यौ कै जितौ फिरि घासु खोदि रह्यौ ऐ। लच्छिमी जी बोलीं कै आजु कछू फिरि दै आऊँ, फेरि चाहें मरौ चाहें जीश्रौ। कर्म बोले : दै आश्रौ। लच्छिमी जी आईं औरु बारह असरफी दैकें बोली कै अबई जा। घसेरौ लै दोऊ हातन में घर कू आयौ। घरवारी ते बोल्यौ : लै तू रोजु भूँटु जान्ती अब तौ भूँट नाँहें। बु मोइ रोजु दै जातीं। घरवारी बड़ी मगन भई औरु लैकें नौंन के में धरि दईं[1]। एक

१ धर्दईं

* प्रातः उषाकाल, पौ फटने पर।

परौसिनि सुनि रही। बु बोली कै आजु तौ निश्तौं कछु लै आयौ ऐ। जि लैनौं चहियैं। देखि-दाखि कें परौसिनि बा के घर आई। बु चूनु माँड़ि रही। परौसिनि बोली : ए दारी, आजु हमारें नोंनु नाँइ रह्यौ नैंकसौ नोंनु दै दै। बु बोली : बहन, मेरे तौ चून में हात एँ। तू लै आ। बु चली सो बारह हू असर्फीन्नें लै आई। अब व्वानें देख्यौ तौ म्वाँ कछू ना। घसेरौ बोल्यौ कै तू तौ मोइ यै दोषु दियौ करती। तेरौ तौ घरु ई खाइ गयौ। ये जी हम्बै, तिहारी सबु साँची यै। तुमें रोजु मिलति हुंग्गी। घसेरौ बिचारौ लै खुरपी फिरि चल दीयौ। बाई खेत में पहुँच्यौ[1]।

लच्छिमी और कर्म फिरि आये। कर्म बोल्यौ कै लच्छिमी जी अबकै याके ढिंग मैं है आऊँ। लच्छिमी जी बोली : है आऔ। कर्म आये और सोलह असरफी दई। घसेरौ लै असर्फी घासु समेटिबे लग्यौ। बु गाँठिऊ पाइ गई। माटी के संग्ग मूसेन्नें बाहर फेंकि दई। अब घसेरौ चल्यौ। घर आयौ। गैल में बम्बाऊ सूखि गयौ। बे आठऊ असरफी कीच में परी पाइ गईं। फिरि घर आयौ।

घर की ते बोल्यौ : आजु मेरी खोई भई सबु चीज पाइ गईं। परौसिनि काँपी कै कहूं नाम तौ नाँहिं पूछि आयौ। अब डरके मारें बारह असरफी लैकें बाके घर गई। बु चूनु माँड़ि रही। परौसिनि बोली : भैना आजु औरु नैंकसौ नोंनु दै दै। बु बोली : भैना लैआ। झट-पट गई और धरि असरफी डिगरि आई। बानें देख्यौ नोंनु तौ बे असरफी पाइ गईं। बु बोली : सुनौ असरफी तौ मेरीऊ धरी पाइ गईं।

घसेरौ बोल्यौ कै "कर्म फलै तौ सब फलै भीख बंज व्यौपार।"

[सं० क० पातीराम, अकबरपुर।

---

१ पौंह्च्यौ

६. राजा विक्रमाजीत

(पर दुख भंजन हार)



उज्जैन नगरी कौ राजा विक्रमाजीत पराये दुख दूरि करिबे में लग्यौ रहत्वो† ।

एकु बिराम्मनु बौहौत गरीब, रोज लकड़ियाँ बेचिकैं अपनी गुजर करै। एक समै ऐसौ भयौ कै ज्या दरवज्जे में हैकें राजा निकर्यौ व्वाई दरवज्जे में हैकें लकड़ियान कौ गट्ठा लैकें बु गरीबु बिराम्मनु आयौ। राजा बोल्यौ : ठहर जा भाई लै जि पाँच असरफ़ी लै जा और गट्ठा कूँ पटकि दै और अब ज्या हैकें लकड़ियाँ लैकें मति अइयो।

व्वानें कहा काम कर्यौ कै बे असरफ़ी मोंह से[1] लगाइ लईं और मन में भारी मगन हौंतु भयौ चलि दीयौ। जब सहर ते कछू आगें बढ्यौ तौ कारे घोड़ा पै बैठ्यौ भयौ सनीचर देवता आयौ। और आइकें बिराम्मनु ते बोल्यौ : रे बिराम्मन डार् दै जो कछु तो पै होइ। बिराम्मनु बोल्यौ : महाराज मो पै कछू नाँएं। सनीचर-देवता घोड़ा पै ते उतर्यौ और उतरि बाके मौंहड़े पै थप्पड़[2] मार्यौ। थप्पड़ मारिकें सब असरफ़ी डराइ लईं। बिचारौ बिराम्मनु उदास है कैं चलि दीयौ। औरु बोल्यौ कै काए कूँ तौ दईं और चौं लै लईं। और दिना सेर भर जौ तऊ मिल जातो, आजु बुहू न रह्यौ।

बिचारौ फिरि लकड़िया लैबे गयौ। और व्वा दरवज्जे कूँ छोड़ि कैं दूसरे दरवज्जे कूँ गयौ। भगमान कौ ऐसौ करनौ भयौ, व्वाई दरवज्जे में हैकें राजा गए। फिरि बु लकड़िहारौ मिल्यौ। व्वा ते बोल्यौ च्यों भाई समेरें तौ तो कूँ पाँच असरफ़ी दईं हतीं। तू न मान्यौ। फिरि आइ गयौ। अब बिराम्मनु बोल्यौ : महाराज आपनें च्यौं दये और चौं लै लये। मैं तौ अपने सेर भर नाज ऊ ते रहि गयौ। राजा सुनि कें बड़े अचम्भे में परि गयौ। और व्वाते

---

१ ते   २ थप्पड़

† रहतु + ओ = रहत्वो।

बोले : कै लै अबकें दस असरफ़ी लै जा। बिराम्मनु लै दस असरफी और डारि गट्ठा म्यां ते चल्यौ। व्याके पीछें पीछें राजा ऊ चलि दीये।

जब गाम बाहर निकरे तौ बुही शनीचर-देवता मारें‡ घोड़ा पै आयौ। और आइकैं बिराम्मन ते बोल्यौ : बामन डारि दै। व्यानें दो पोत कही। घोड़ा ते उतरि कें मुँहड़े पै थप्पड़ मारयौ। सबु असरफ़ी डरवाइ लईं। लै असरफ़ी, चढ़ि घोड़ा पै चलन लग्यौ। इतेकई में राजा विक्रमाजीत बोल्यौ : अरे भाई ठहर जा। तू को जाय रहौ पे। सनीचर देवता ठाड़ौ है गयौ। राजा बोले : च्यौं भाई मैं देंतु देंतु बावरौ है गयौ। तू या पै ते छींड़ि लेंतु ऐ। याइ बताइ दै कै तू को ऐ? सनीचर देवता बोल्यौ : मैं सनीचर ऊँ और या बामन पै साढ़े सात बरस कूँ आयौ हूँ। खाली सेर नाज खाइबे कूं दुंग्गो। बढ़ती होगौ तौ वाई कूँ लै जांग्गो। राजा बोल्यौ : च्यौं भाई याइ कैसेंऊँ छोड़िऊ देगौ। सनीचर बोल्यौ : नाँ छोडंग्गो, राजा बोल्यौ : भाई तू मो पै आइ जा परि या कूँ छोड़ि दै। सनीचर देवता नें बिराम्मनु तौ छोड़ि दीयौ और व्या की सब असरफ़ी दै दईं। और राजा पै आइ गयौ। राजा बोल्यौ कै भाई : अब नगर कूँ न चलनौं चहियैं, चौं कै न जानैं जि राज में कैसौ बिघन डारि दे। या ते तौ साढ़े सात बर्स काऊ जंगल में बितानी चहियैं।

(२)

राजा ऐसैं सोचिकैं चलि दीयौ। चलत चलत दस कै बीस कोस पै व्या कूँ दिन मुंदि ग्यौ। वियाबान जंगल में राति है गई। राजा एक पेड़ के नीचैं घोड़ा कूँ बाँधि कैं सोइ गयौ। आधी सी राति के अरसा में कछू आदमीन की रोइबे की अवाज सुनाई परी। राजा विनके जौरैं गयौ। म्वां कहा देखै कै एक कोठरी बनी भई। व्या में कहूं हैकें दरवज्जौ ना†। व्याकी भीतिन पै चढ़िकैं कछू

‡ मारैं आयौ = दबाये आया, शीघ्रता से।

† 'ना' यहाँ नाँ ओ (नहीं था) का लघु रूप है। इसी प्रकार 'रहे' 'रहे ए' का लघु है। अतः 'रहे' में 'हे' के उच्चारण पर 'ए' स्वर पर बल (accent) रहेगा। यहाँ इस बल का रूप प्रगति-बल (pitch) होगा।

सिपाही भीतर के आदमीन्नें मारि रहे और भीतर के आदिमी हाइ-ई-हाइ मचाइ रहे। राजा बोल्यौ : चौं भाई! तुम कोऔ जो ऐसैं बुरी तरह इनकूँ मारि रहे हैं[1]। सिपाई बोले हम राजा के नौकर हैं[1] और जि चोर हैं[1]। हमारे राजा की चोरी करि लाए ऐं सो हम इनमें मारि लगाइ रहे हैं। राजा बोल्यौ : भाई! तुम इनकूँ छोड़ि देउ और मोइ लै चलौ। वे बोले : चौं भाई तू को ऐ। राजा बोल्यौ : मैं चोट्टान कौ गुरू ऊँ। सिपाई बोले : चोरै‡ पकरौ सो चोरन के गुरू कूँ[2] न पकरौ। वे सब राजा कूँ लिवाइकैं चले। राजा कौ घोड़ा काऊ सिपाई ऐ मोंहड़े ते खान लग्यौ काऊ ऐ टापन ते मारन लग्यौ। सिपाही बोले : चोट्टान के गुरू! या घोड़ा कूँ पकरि लै। राजा नें घोड़ा डाटि लयौ।

वे सिपाई राजा ऐ लिवाइकें सहर में आये और अपने राजा के ढिंग लै गये। बोले : महाराज! हम चोट्टान के गुरू कूँ पकरि लाऐ हैं। राजा ने न्याबु कीयौ न हिसाब, सिपाहीन कूँ हुकमु दीयौ कै याके हात-पाँम काटि कैं चौराहे पै डारि देउ। सिपाही राजा कूँ पकरि कैं लैं गए और हात-पाँय कौन्हीन पै ते काटि कें चौराऐ पै डारि दीयौ और घोड़ा घुड़सार में बाँधि दीयौ। सब के मर्द-बईअर या तमासे कूँ देखिबे कूँ आये। ब्वा राजा की बेटी अपनी संग सहेलीन ते बोली कै भैना चलौ हमऊँ देखि आमें-चोट्टान कौ गुरू कैसौ है[3]।

राजा की बेटी अपनी सहेलीन के संग ब्वाकूँ देखिबे आई। देखिकैं सहेली वा राजा की बेटी ते बोलीं : बहना तेरे पिता ने जो कीयौ सो तौ अच्छौ कीयौ, परि हमारे कहें ते एकु कामु तौ तू करि दै कै याकूँ अबतौ दो[4] रोटी भिजवाइ दै और फिरि एक कोठरी बनवाइ दै, ज्याते ब्वामें बिचारौ पर्‌यौ रहैगौ। राजा की बेटी की समझ में आइ गई और जाइकें अपनी बाँदी के हातन

१ ऐं २ 'कूँ' के स्थान पर यहाँ 'ऐ' अधिक ठीक रहता।
३ ऐ (क्रिया) ४ दुऐ

‡ यहाँ पर 'रै' में 'र+ऐ' की संन्धि होगयी है। यह 'ऐ' क्रिया नहीं, कर्म का चिह्न है = को।

दो[1] रोटी और एक लोटा पानी भिजवाइ दीयौ। बाँदी लैकें आई। औ राजा चोट्टान के गुरु तें बोली : लै भाई चोट्टान के गुरू रोटी खाइ लै। राजा बोल्यौ : तू को ऐ? बु बोली : मैं बाँदीऊँ। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ लै जा। मैं बाँदी के हात से[2] भोजन न करुंगो। बाँदी बिचारी लैकें चली आई और आइ कैं राजा की बेटी ते बोली : हमारे हात से[2] ब्वानें रोटी नाँय खाई। फिरि राजा की बेटी आपुई रोटी औरु एकु लोटा पानी लैकें ब्वाके पास पहुंची और ब्वाते कहन लगी कै ए चोट्टान के गुरू! अब तौ मैं रोटी जिमाइबे आई ऊँ, परि कल्लि ते एकु बिराम्मनु तेरे लियें रोटी लायौ करैगौ। सो तू चुपचाप खाइ-पी लेउ करियो। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ : पानी तौ एकई लोटा लाई ऐ, याते न्हाइऊ लुंगो और पीऊ लुंगो। राजा की बेटी बोली : मो पै तौ जिही एकु लोटा पानी ऐं। चाहें तौ याइ पीलै, चाहें न्हाइ लै। बु बोल्यौ : तौ अपनी रोटी-पानी कूँ लै जा। मैं तौ न्हाए बिना रोटी नाँऐं खाइ सकूँ। राजा की बेटी ने ब्वाई लोटा ते ब्वा की देह चुपराइ दई औरु धोती बदलि दई। फिरि ब्वानें रोटी खाई। राजा की बेटी अपने घर कूँ आई। ब्वा की रोटी पानी के काम पै एक बिराम्मनु राखि दियौ और म्वाँई एक कोठरी बनवाइ दई।

(३)

एक समै राजा ने अपनी बेटी कौ सहम्बर* रच्यौ। देश देश कूँ चिट्ठी भेजीं और सब शहर में हुक्म कर् दयौ कै शहर की अच्छी तरह सफाई है जाइ। माली कूँ हुक्म दियौ कै बाग की रौस-पट्टी ठीक बनि कें, फुलवारी खिलि जाँइ। तेली कूँ हुक्म दीयौ कै मेरौ साढ़े सात सै मन तेल कौ हौद तेल ते भरि जाइ। जौ न भरौ गयौ, जन-बच्चा कूँ कोल्हू में पिरवाइ दउंगो। वे सोचे कै इतनौ काम द्वै दिना में कहा चलाई छै महीना और बर्स दिना में न है सकैगौ। याते तौ या शहर कूँ छोड़ि चलौ। तेली अपने बाल बच्चेन कूँ लैकें राति में ई चलि दीयौ। अब ब्वा चोट्टान के

१ दुऐ.   २ ते

* स्वयंवर।

गुरू की कोठरी के ढिंग आयौ तौ एकु बच्चा रोइ उठ्यौ। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ भाई तुम को औ? और राति के समैया में घर छोड़ि कें च्यों जाइ रहे हैं? तेली बोल्यौ : महाराजा विपता के मारें जाइ रहेएँ। बु बोल्यौ भाई हमेंऊ बताऔ कहा विपता लागि रही है। तेली बोल्यौ : महाराज! राजा की लड़की कौ सहम्बर जुरैगौ। सो बाने हमते हुकमु दियौ ऐ कै मेरौ साढ़े सात सै मन तेल कौ हौद दो दिन में भरि जाइ। सो महाराज न हौदु भरौ जाय न हम मरिबे कूँ डरें। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ : भाई तुम अपने घर कूँ जाऔ और राजा ते जि कहि देउ कै अपने हौद ते और कोल्हू तक पक्की मोरी बनवाइ दै, और सरसों बोरीन में भरिकें कोल्हू के पास धरवाइ दें। तेली अपने घर कूँ आयौ। राजा ते जि सबु बात कह दई। राजा नें सब इन्तिजाम करि दयौ। फिरि तेली चोट्टान के गुरू के जौरें आयौ, और बोल्यौ : महाराज तिहारौ बतायौ भयौ सबु कामु राजा नें करवाइ दयौ ऐ। बो बोल्यौ : भाई एक कामु करि, कै मोइ गोद में लै चलि, और अपने कोल्हू की पाटि पै बैठारि दै। तेली ब्वाइ गोद में लै गयौ औरु कोल्हू की पाटि पै बैठारि दयौ। राजा विक्रमाजीत नें अपने बीर संहरे‡। बीर आये और कोल्हू चलायौ। बात जि है कै राति भीतर में हौदु भरि गयौ।

धौंताइ होंत ई तेली राजा पै गयौ औरु बोल्यौ : कै महाराज अपने तेल कूँ समगाऔ†। फिरि ब्वा चोट्टान के गुरू कूँ लैकें ब्वाई कोठरी में करि आयौ। दूसरे दिन माली अपने बाल-बच्चेन कूँ लैकें राति में चलि दीयौ। ईश्वर की करनी, ब्वाऊ कौ बच्चा ब्वाई ठौर रोइ उठ्यौ। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ : चों भाई! तुम को औ, जो राति में बाल बच्चेन कूँ लैकें जाइ रहे औ। माली बोल्यौ : महाराज हम बिपता के मारे जाइ रहे एँ। बु बोल्यौ ऐसी कहा बिपता लगि गई, हमेंऊ बताइ देउ। माली बोल्यौ महाराज! न्याँ के राजा की बेटी कौ सहम्बर जुरैगौ, सो राजा नें हमकूँ हुकमु दयौ ऐ कै राति भीतर में बाग की रौस-पट्टी डरि जाँय और सब

‡ स्मरण किये।

† सम्हाल लो।

तरह की फुलवारी लगि जाँय। सो महाराज छै महीना कौ कामु न तौ राति भीतर में होय और न हम मरिबे कूँ डटें। चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ : भाई जब राजा की बेटी कौ सहम्बर जुरै तब हमेऊँ तमाशौ दिखाइ दीजौ और तू लौटि जा। तेरौ सब काम, राति भीतर में है जाइगौ। माली अपने घर कूँ आयौ। चोट्टान के गुरू राजा विक्रमाजीत नें अपने बीर यादि किये और कही : कै भाई राति भीतर में या बाग की रौस-पट्टी बनि जाँय और फुलवारी खिलि जाँय। बीर नें राजा की आज्ञा पाई और दिन निकरत सबु काम तैय्यार करि दयौ। जब राजा की बेटी कौ सहम्बर जुरौ जब तेली आपु कूँ भग्यौ और माली आपकूँ भग्यौ। राजा विक्रमाजीत के ढिंग आये और बोले : महाराज चलौ राजा कौ सहम्बर जुरि रह्यौ है। राजा झट्ट गयौ। माली नें एक फूटीसी भींत पै राजा बैठारि दयौ।

जब राजा की बेटी जैमाला लैकें निकसी तौ बोली : हे गणेश बाबा! वर पाऊँ तौ राजा विक्रमाजीत पाऊँ, नहीं क्वारी रहि जाऊँ। गणेश जी चले। ढूंढ़त ढूंढ़त ब्वाई फूटी भींत के पास आये और राजा की नारि में जैमाला पहराइ दई। सबु राजा बोले : भाई भूल है गई। जितौ चोट्टान कौ गुरू है। फिर दुबारा जैमाला देउ। दूसरी बार ऊ माला ब्वाई की नारि में डारि दई। सबु राजा बोले भाई अबकें तीसरौ डंडा मोर (?) अबकें जा काऊ की नारि में जैमाला डारि दे ब्वाई के संग में ब्याहु करि दीयौ जाइगौ। फिर जैमाला लैकें चली और बोली : हे गणेशजी महाराज! वर पाऊँ तौ राजा विक्रमाजीत पाऊँ, नहीं तौ क्वारी रहि जाऊँ। तीसरी कूँ माला ब्वाई की नारि में डारि दई। सब बोले भाई बौहौत बुरौ कीयो। अब तौ याई के संग ब्याहु करि देउ। जैसी करनी पार उतरनी। यानें तीनों पोत माला याई की नारि में डारी पे। अब याकूँ कोई कहा करै। राजाऊ पिस्याइ गयौ और बोल्यौ कै याकूँ कछू मति देउ। खाली या लड़की कौ ब्याहु करिकें तारि देउ, और खाली सेर जौ खाइबे कूँ देउ। राजा नें अपनी लड़की कौ ब्याहु ब्वाके संग कर् दयौ। ब्वाकूँ नित्त सेर जौ खाइबे कूँ मिलें। याके सिवाइ और कछूना, चाहें तौ इनकूँ खाइ लेउ, चाहें साग-भाजी मँगाइ लेउ।

राजा बीर विक्रमाजीत, राजा की बेटी ते बोल्यौ कै आजु मेरे घोड़ा कूँ एक महीना भूकौ-प्यासौ मर्‌तु है गयौ । आजु व्वा कूँ पानी तौ पिवाइ दै । राजा की बेटी बोली : महाराज मोइ च्यौं मरवाइबे भेजतौ. बुतौ आदिमी कूँ जौरैं आमनई नाँय दे । बु बोल्यौ कै तू जा और जि कह दीजौ कै तू मेरे मालिक नैं यादि कीयौ यै । जौ मोते कछू न कहै तौ तोइ लै चलूं । राजा की बेटी गई और बोली कै तू मेरे मालिक नें यादि कीयौ यै । जौ मोते कछू न कहै तौ तोइ लै चलूँ । घोड़ा नें इतनी सुनी तौ नीचे कूँ नारि करि दई । राजा की बेटी खोलिकैं चलि दई और पानी प्याइ लाई । पानी प्याइकें व्वाके ढिंग लै आई । घोड़ा ब्वाके ढिंग आइकैं बौहोत रोयौ । बु बोल्यौ : अरे रोवै च्यौं एं । मैं का मरि थोरें ई गयौ ऊँ ।

एक समय व्वा सहर के राजा के न्यां बौहोत से महमान आये । बु राजा बोल्यौ कै कैसेंऊ ज्या चोट्टान के गुरू कूँ मारि कें आऔ । वे बोले कै ज्या कौ कहा मारिबौ ऐ, जितौ आपुई मरयौ मरायौ यै । वे गये और व्वाके जौरें आये । व्वाते बोले कै चलौ आजु तौ जंगल में शिकार खेलि आमें । बु बोल्यौ : भाई मैं कैसें चलूँ । मैं हात-पायन ते लाचार ऊँ । परि खैर तुम आये औ तौ चलुंगो । राजा की बेटी ते बोल्यौ कै भाई मेरे घोड़ा पै जीन कसिकें मोइ बैठारि दै । व्वानें जीनु कसिकें, लगाम चढ़ाइकें बु वैठारि दयौ और हात के ठूंठ ते लगाम बाँधि दई । अब बु बिन के संग गयौ । वे बोले कै तुम अगार चलौ । बु बोल्यौ : तुम चलौ । तिहारे पीछें पीछें मेरौ ऊ घोड़ा चल्यौ चलैगौ । वे बोले अजी तुमहीं चलौ, झट बु चोट्टान कौ गुरु आगें परि गयौ । जब वे दूरि चले गये और बिननें वाकूँ मारिबे कौ इरादौ कियौ, ज्यों ई वानें बनी में आगि लगाइ दई । अब पजरेई जाँइ । चोट्टान के गुरु ते वे बोले : महाराज हमें बचाऔ, हम मरे । बु बोल्यौ : भाई मैं कैसें बचाऊँ । मैं ऊ जरि चल्यौ अब वे हात जोरन लगे । तौ वाकूँ दया आइ गई और बिनते बोल्यौ कै भाई जौ तुमें बचनौं यें, तौ अपने अपने घोड़ान की पूँछ काटौ और अपनी अपनी चुटिया काटि कै मोइ देउ । बिन्नें बिचारन्नें ऐसौई कीयौ । व्वानें बु आँच बुझाइ दई । फिरि बोले कै लेउ घोड़ान की दौड़ करौ । चोट्टान कौ गुरू बोल्यौ : भाई मेरौ घोड़ा महीना भरि कौ प्यासौ

मरौ यै, यामें कहा रह्यौ ऐ। भाई तुमई आपुस में दौड़ करौ। वे बोले : अजी नाएँ थोरे घने तौ दौराऔ। बिन्नें घोड़ा दौड़ाये। चोट्टान के गुरू नें अपने घोड़ाते कही कै भाई तेरे मन में होइ तौ दौर नईं मैं तौ कहूँ नाऊँ, घोड़ा नें दौड़ लगाई और सबके घोड़ान नें छोड़ि कैं आगें पहुँच्यौ। साँझ कूँ घर आये। बे बोले ब्वाकौ मरनों बड़ी मुसकिल बात यै।

एक समै कर्म-धर्म-लक्ष्मी और ईमान में वाद भयौ। वे आपुस में बोले कै मैं बड़ौ, मैं बड़ौ। हौंत हौंत बु किस्सा राजा के पास आयौ। राजा बड़ौ चक्कर में पर्‌यौ। फिर ब्वाकूँ ध्यान भयौ कै भाई ब्वा चोट्टान के गुरू कूँ बुलाऔ। मैं कौन कूँ बड़ौ बताऊँ और कौन कूँ ल्हौरौ बताऊँ। इनके न्याब कूँ बु करि दे तौ करिदे, नहीं और काऊ के बस की बात नाहें। ब्वा राजा नें बौहौत कछू अच्छी बग्घी सजाइ कें ब्वाके लैबे कूँ भेजी। राजा बीर विक्रमाजीत बग्घी में बैठि कें आये। ब्वा राजा नें बड़े आव आदर लै आधौ सिंहासन बैठिबे कूँ दीयौ। बे बैठि गये।

राजा बीर विक्रमाजीत बोले : राजा साहब आजु हम कैसें यादि किये? राजा बोल्यौ : कै एकु न्याबु करिबे कूँ आपु बुलाये हैं। बु न्याबु जिहै कै कर्म कहै कै मैं बड़ौ, धर्म कहत्वै कै मैं बड़ौ, लक्ष्मी कहँत्यै कै मैं बड़ी और ईमान कहत्वै कै मैं बड़ौ। सो राजा साब! अब आपु जि बताऔ कै इनमें कुन्सौ बड़ौ ऐ। राजा विक्रमाजीत बोले कै राजा साब चारि बांस मँगाइ दै। राजा नें चारि बाँस मँगाए और सबते पहले ईमान कूँ बुलायौ। ईमान ते कहन लगे कै भाई मैंने तोय न छोड़्यौ और तैनें मोकूँ छोड़ि दीयौ। नौकर कूँ हुकमु दीयौ कै लगै यामें बाँसन की मार। मेरे हात-पाँम तक कटि गये परि मैंने याकूँ न छोड़्यौ। ईमान बोल्यौ महाराज मोय मारौ मति मैं तुमारे एक हातै जोरि दुंग्गो। राजा बोल्यौ जोरि झट्ट। ईमान नें एक हात जोरि दीयौ।

अब कर्मदेव जी बुलाये और कही कै च्यों भाई मैंने इन हातन ते कबऊ काऊ कौ बुरौ न कीयौ परि तौऊ मेरे हात कटि गये। लगै बाँसन की मार। कर्मदेव बोले : महाराज मारौ मति

एक हाते मैं जोरि दुंग्गो। राजा बोल्यौ : जोरि। कर्मदेव नें ऊ एक हात जोरि दीयौ।

अब लछिमी जी आईं। राजा बोल्यौ : लछिमी जी तिहारे होंते मैंने कबऊ बुरी ठौर पाय न धर्‌यौ। फिरिऊ मेरौ पाय कटि गयौ। राजा बोल्यौ : लगै याऊ में बाँसन की मार। लच्छिमी जी बोलीं : महाराज मारौ मति एक पामै मैं ऊ जोरि दुंगी। राजा बोल्यौ : जोरि। व्वानें एक पाँम जोरि दीयौ।

अब धर्मदेवजी रहे। राजा बोले : महाराज मैंने आपको कबऊँ नाहिं छोड़्यौ। परि आपु मो कूँ छोड़ि गये। अब रही आपुकी राजी मेरे एक पाम रह्यौ यै। सो चाहें जोरौ चाहें मति जोरौ। धर्मदेव बोले महाराज एक पाँमै मैं ज्योरि दुंग्गो। झट एक पाँम धर्मदेव नें जोरि दीयौ।

हात-पाय ते राजा ठीक हैकें और साढ़े सात बरस बिताइकें अपने नगर कूँ आयौ।

[सं० क०–ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

—दो—

चमत्कारों की कहानियाँ

[ये तीन कहानियाँ हैं । इनमें जादू तथा विद्या के विविध कौशलों का वर्णन हुआ है ।]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं :—

१. राजा भोज : चौदई विद्या
२. गुरू-चेला
३. फूलनदेई : कोलनदेई



१. राजा भोज : चौदईं विद्या



राजा भोज तेरह विद्या निधान ओ, और चौदहीं विद्या सीखिवे डोलि रह्यौ।

अपने शहर में ज्या बात की ड्योंड़ी पिटवाइ दई कै जो कोई मेरे शहर में तमासौ करै वु चौदह विद्या जानैं तौ करै नहीं मेरे शहर में ऊ न घुसै। हाली-हम्माली ज्या बात कौ पहरौ दैन लगे।

एक दिन एक नट और नटिनी तमासौ करिबे आये। पहरेदारनें वु रोकि दिये। नट ते बोले कै ज्याँ तमासौ करिबे कौ राजा कौ हुकमु नाँएँ। नट बोल्यौ : भाई मैं तमासौ करिकैं जाऊँग्गो। पहरेदार राजा के पास गये और बोले : राजा साब एक नट तुमारे शहर में तमासौ करिबे आयौ ऐ। व्वाते नाँहीं करि लई परि वु नाँय मानै। राजा बोल्यौ : अच्छौ करन देउ।

नटिनी नें ढोलक बजाई और नट नें एक कच्चे सूत की अँड़िया मँगाई और अँड़िया कौ एकु छोर पकरि कें ऊपर कूँ फैंकि दई। डोरा सैं सूधौ है गयौ। अब नट व्वा डोरा कूँ पकरि कैं ऊपर चढ़ि गयौ। कछू देर पीछें ऊपर ते पहिलें तौ एक हात गिरयौ, फिरि दूसरौ हातु, फिर एक पाँम, वाते पीछैं दूसरौ पाँम गिरयौ। फिरि सबु शरीर गिरि परयौ।

नटिनी बोली : राजा साब मेरे पती देवतान की लड़ाई में मरि गये। अब याकी दाह क्रिया करवाइ देउ। राजा नें ईंधन मँगाइ कें चिता बनवाइ दई, और नट कूँ धरवाइ कें आगि लगवाई। व्वाई में नटिनी सत्ती है गई। राजा और सबु आदिमी बिनें फूँकि कैं पजारि कैं आये ई हते कै इतमें व्वा सूत पै हैकें नट्ठ उतरि कें आयौ और राजा ते बोल्यौ : राजा मेरी नटिनी कहाँ ऐ। राजा बोल्यो : भाई तेरौ शरीर कटि कटि कें धरती में आयौ सो वु तौ तेरे संग चिता में जराइ दई। वु तौ संग-सत्ती है गई। नट्ठ बोल्यौ : महाराज ! तुम मेरी नटिनी कूँ मोकूँ दै देउ। ऐसी बहाने बाजी मति करौ। और हमारी तिहारी ज्याति पाँतिऊ तौ

एक नाँये । आप ब्वाइ राखिकैं कहा करौगे । महाराज ! हम नट-कंजर और आप राजा-महाराजा । हमारौ तिहारौ मेलु कहा ? ऐसौ मति करौ । मेरी नटिनी मोइ दै देउ । राजा बड़े ससिपंज में और सोचै कै जि बड़ी आफति लगी । जीमती होंती तौ ढूँढ़िकें ऊ लामतौ अब कहा करूँ ! नट बोल्यौ महाराज नाँइ देउ ? राजा बोल्यौ : भाई हमतौ जराइ आये तेरे संग ।

नट्ट बोल्यौ : मैं बोलूँ और देखौ नटिनी तुमारे घर में तेई निकरैगी । नट नें अवाज दई । नटिनी बोली : महाराज मैं राजा नें सात तारे भीतर मूँदि राखी हूँ । नट बोल्यौ : तौ तारेन कूँ तोरि कें निकरि आ । तारे अपुढ़ारे खूँटत गये और नटिनी बाहर आ गई । राजा भोज नें बड़ौ अचम्भौ मान्यौ और नट ते बोल्यौ : भाई ! या विद्या कूँ मोइ सिखाइदै । नट बोल्यौ : महाराज मेरे डेरान कूँ चलौ और सीखि आऔ । राजा महलन में आयौ, और रानी ते बोल्यौ कै मैं चौदहौं विद्या सीखिबे जाइ रह्यौ हूँ । जब लौटिकें आऊँ और तो पै बिन बोलें पानी माँगूँ तौ जानियौ कै राजा यै । और कहिकैं पानी मागूँ तौ जानियौ राजा ते दगा है गई ऐ । फिर तू सम्हरि कैं अपनौं राज-काज करियौ । राजा इतनी कहिकैं और अपने संग एक नौंकर लैकें नट के संग विद्या सीखिबे कूँ गयौ ।

नट्ट अपने डेरा में पौंहोंच्यौ और राजा कूँ विद्या सिखाइबौ शुरू कर दियौ । नौकर के ते कह दई कै जब हम विद्या सिखायौ करैं जब तू डेरा ते एक खेत दूरि चल्यौ जायौ करि । नौंकर एक खेत दूरि चल्यौ जायौ करै । परि जब राजा विद्या सीखै और नट चारि बात बतावै तौ नौंकर कान लगाइ कें चारयौ बातन्नें सीखि लेय और राजा दोई बात सीखै । जब राजा विद्या में खूब निपुन है गयौ तौ अपने शहर कूँ लौट्यौ ।

गैल में एक तोता मरयौ परयौ ऐ । पहलें जाई पै जाँच करौ । राजा बोल्यौ : देखि तू मेरे चोला पै माखी तक मति बैठन दीजौ । मैं याकी जाँच करलूँ । नौकर बोल्यौ : अच्छौ महाराज । राजा अपने चोला कूँ छोड़ि कें तोता के चोला में जाइ घुस्यौ । अब नौंकर के नें कहा कामु करयौ कै ब्वाई बखत अपनौं चोला छोड़िकैं राजा के चोला में जाइ घुस्यौ । और घोड़ा पै बैठि कैं

शहर कूँ आयौ। आइकें दरवज्जे पै हल्ला मचायौ : पानी लाऔ, पानी लाऔ ! इतनी सुनतई रानी आई, बाइ राजा की बताई बात यादि आइ गई और सोची कै राजा ते दगा है गई। परि खैर भगमान मेरौ धर्म बचामिंग्गो।

जब राति भई तौ बु राजा रानी के साथ में भोग करिबौ चाहै। रानी बोली : देखि राजा ! छैः महीना तक तौ तू मेरौ भइया और मैं तेरी बहन। बाद छै महीना के मैं तेरी स्त्री और तू मेरौ पती। राजा बोल्यौ अच्छौ।

बु अपने मन में बोल्यौ कै छै महीना कछू बड़ी बात नाँयें, सही। अब ब्वा राजा नें कहा करमु करयौ कै अहेरिया और बधिकियान कूँ हुक्म दयौ कै जो कोई मरौ तोता लावैगौ वाकूँ पाँच रुपइया इनाम दई जाइगी। इतनी बात सुनि कें बे चले। कोई मरयौ तोता लाइ रह्यौ है कोई जीमतौ लाइ रह्यौ ऐ। एक अहेरिया द्वै दिना ते बड़ौ परेसान। ब्वाके हात एक ऊ तोता न आवै और न मरौई कोई पावै। एक पीपर के पेड़ पै साँझ कूँ बहत्तर तोतान की टोली बैठी पाई। बु ब्वा पेड़ै अच्छी तरह देखिकें गयौ। दूसरे दिन धोंताई बु ब्वा पेड़ पै कोई चुपकनी चीज लगाइ आयौ।

इतमें ब्वाई दिना बु तोता जो राजा भोज तोता बनि रह्यौ ओ बु बिन में आइ मिल्यौ। वे तोता ब्वाते बोले : भइया तू हम में काए कूँ आइ मिल्यौ ऐ। कहूँ हमें पकरवइयों मति ! ब्याँ राजा भोज नें अत्याचार करि राख्यौ ऐ। तोतान कूँ पकरवाइ पकरवाय कें मारि रह्यौ ऐ। बु बोल्यौ : भाई जब तुम मरौगे तौ मैं ऊ मरि जाउँगो और तुम बचौगे तौ मैं ऊ बचि जाउँगो। परि अब तौ तिहारेई संग रहुंग्गो।

साँझ कूँ सब चुगि-चुगाइ कें ब्वाई पेड़ पै जाइ बैठे। और बैठत खैम सब के पाम पेड़ ते चुपक गये। बिन में ते एक तोता बोल्यौ : देखि लेउ हमनें कही कै नाँइ कै जि हमें मरवाइ देगौ। बुई बात भई। बु तोता बोल्यौ भाई यामें मेरौ कहा खोटु ऐ। परि एक अकलि बताऊँ। बचिबे की जौ मानि जाऔ तौ। वे बोले : बताइ भइया, कोई अकलि ऐसी बताइ जाते बचि जाँइ, बु बोल्यौ

कै जब दिन निकसै, बु लैबे आवै जब सब अपनी अपनी नारि दुरकाइ जइयौं और ऐसे है जइयौं मानों मरि गये। और जो पहिलें गिरै बु ही बहत्तर गिन लीजो। जब बहत्तर गिन्ती में है जाँय जबई उड़ि चलियौं।

समेरें अहेरिया आयौ और ब्वाइ दूरितेई देखिकें वे नारि मुरकाय कें उसास खैंचि गये। अहेरिया बोल्यौ मन में : चलौ और नायें तौ बहत्तर रुपइया तौ सूधे भये। लै छुरी पेड़ पै चढ़्यौ और एक एक छुड़ाइ कें धरती में डारन लग्यौ। जो पहिलें तोता गिर्‌यौ बु गिन्ती गिनन लग्यौ। इकहत्तर तोता आइ गये, और बहत्तर की पोत हात ते छुरी छूटि परी। सो वानें जानी कै सबु आइ गये। झट उड़ि धर्‌यौ[1] वाके पीछें सबु उड़ि गये। अहेरिया बड़ौ भारी खिस्यायौ। और बुई एक तोता राजा भोज रहि गयौ। ब्वाते बोल्यौ कै तैनें मेरे बहत्तर रुपय्यान में पानी लगायौ है। सो तोइ का छोडुंगो जि सब अकलि तैनें ई वताई ऐ। अहेरिया ब्वा तोता कूँ लैकें घर आयौ और अपनी औरत सै बोल्यौ कै तू या तोता की पंख-फंक उचेलि कैं चीर लै। मैं बजारते मसालौ लै आऊँ। यानैं बड़ौ ज्यानु कर्‌यौ ऐ। मेरे बहत्तर रुपइयन में पानी दीयौ ऐ।

अहेरिनी ब्वा तोता कूँ जब चीरबे बैठी तौ तोता बोल्यौ : भागुमान तू मेरी जानि बचाइ दै। मैं ब्वाकूँ बहत्तर रुपइया दिवाइ दुंगो। ब्वा तोता की बात सुनि कें बाकूं तरसु आइ गयौ और बु न चीर्‌यौ। अहेरिया आयौ : ब्वानें बु चिर्‌यौ न पायौ तौ जरि भुंजि कें खाक है गयौ। और ब्वाकूँ मारिबे दौर्‌यौ। बु बोली : सुनों जी, यानें मोते न्यों कही कै मेरी जान बचाइ दै। मैं बहत्तर रुपइया दिवाइ दुंगो। अहेरिया बोल्यौ : कहाँ ते दिवाइ देगौ। तोता बोल्यौ : भाई राजा भोज की उज्जैन नगरी छोड़ि कें मोइ काऊ शहर कूँ लै चलि। अहेरिया ब्वा तोता कूँ लेकें चलि दीयौ। और काऊ शहर में लैकें पौंहोंच्यौ।

अहेरिया बोल्यौ : भाई अब मैं काऊ ते कहा कहूँ? तोता बोल्यौ भाई तू काऊ ते कछू मति कहै। जहाँ चारि-छै आदमी बैठे

---

१ धरि उड्यौ

होंय म्वां मोइ लै चलि। मैं आपु कहि लु'ग्गो। अहेरिया बजार में गयौ। और एक दुकान पै कछू बनियां बैठे चौफर खेलि रहे। एक बनिया की जबते बु खेलिबे बैठ्यौ जबई ते हार है रही। और जब बु अहेरिया व्वा तोता ये लैकें व्वाके माँऊ तमाशौ देखिबे ठाड़ौ है गयौ जबई ते व्वाकी जीत हौन लगी और सब बाजू बराबरि करि दई। बनियां बौल्यौ : जि माया कहा भई भाई । पीछें फिरिकें देखै तौ तोता लैकें आदमी ठाड़ौ ऐ। बु बोल्यौ : च्यों भाई या तोता कूँ वेचै का बु अहेरिया बोल्यौ : वेचूँ हूँ। बनियाँ बोल्यौ : कहा लेगौ ? अहेरिया बोल्यौ : जो तोता कह दे सो । बनियाँ बोल्यौ : कह भाई तोता ! तुही कह। तोता बोल्यौ : तुम लेउगे ? बनियाँ बोल्यौ : लिंग्गो। "तौ बहत्तर रुपइया याकूँ दै देउ । बनियां नें बहत्तर रुपइया दैकें तोता लै लियौ । अहेरिया लै रुपइया अपने घर कूँ गयौ।

तोता बोल्यौ : सेठ जी ! तुमनें मैं लै तौ लियौऊँ परि मेरी बातऊ मानौंगे। सेठ जी बोले : मानूँगो। तोता बोल्यौ : तौ अब ईख कौ बवारौ ऐ। सो जितनी बुवाई जाइ बितनी ईख बुवाइ देउ। तोता के कहेंते सेठजी नें दस बीघे कै जानें बीस बीघे ईख बुवाइ दई। और व्वा की निकाई गुड़ाई ते खूब कमाई करवाई । बड़े जोर की ईख भई। शहर भरि में हल्ला हैगौ : कै तोता वारे सेठ की ईख बड़ी जोरदार है। भाई व्वाके तौ ईख में करारे है गये।

अब ईख के पेरिबे कौ बखतु आयौ। सेठ बोल्यौ : भाई तोता कहा डौर करैगौ। अब ईख के पेरिबे कौ बखतु आयौ। तोता बोल्यौ : सेठिजी मानौ तौ बताऊँ। सेठिजी बोले : हम चों न मानिंगे। हमारौ तौ मालिकुई तू ऐ, हम कोयें न मानिबे बारे। तोता बोल्यौ : अच्छौ तौ ईख में आगि लगाइ देउ सेठ बोल्यौ : जानें अच्छौ कर्‌यौ। बरस दिना कमाई-रखाई अब आगि लगाइबे की कह रह्यौ ऐ। कहूँ भइया रिस तौ नाँइ है गयौ। सेठानी ते बोल्यौ : कछू तैनें तौ नाँइ कह लई ? सेठानी बोली : ये जी ! मैंने तौ कछू नाँइ कही। अरे कछू चुगे की तौ भूल नाँइ परि गई ? 'नाँइ तौ जी ! मैं तौ नहाइ-धोइ कें बढ़िया पानी लाऊँ और तीन्यों टैम बढ़िया चुगौ धरूँ'। तौ कहा बात भई । चलि हम तुम दोनों

मनायें। सेठ और सेठानी दोऊ तोता के जौरें गये। और हात जोरि कै बोले : भाई तोता ! कैसें रिस है गयौ ऐ? तोता बोल्यौ : ईख में आगि लगवाइ दई? सेठ चुप है गयौ। और ईख में आगि लगाइबे गयौ। सेठजी नें ईख में आगि लगाइ दई। दुनियाँ ब्वातें कहन लगी कै देखौ! जि कैसौ बाबरौ यै। एक जिनाबर के कहें ते पैदा में आगि लगाइ दई। ऐसौऊ कोई मूरिख होगौ? भगमान की करनी ऐसी भई ईख की खसबोई लैकें समुंदर में ते हंस आये। और हंसन ते सबु खेतु भरि गये।

राति भरि हंस रहे और मोतीन की छेर करी। तौ मोतीन के ढेर जमि गये। तोता बोल्यौ : सेठजी! दस-बारह फावरे इकट्ठे करौ और गाड़ी लै चलौ। और मैंहनती लै चलौ। सेठजी नें सामानु इखट्टौ कर्यौ और लै मेंहनती खेत पै गयौ।

तोता बोल्यौ : भाई फावरेन ते मोती भरि भरि कें गाड़ीन में भरौ। बड़ी दुबाई करी। बात जिहै कै सेठिजी पूरे साहूकार करि दीये। अबतौ सेठजी कौ हल्ला है गयौ और पूरौ व्यौपार करन लग्यौ। एक दिना तोता बोल्यौ : भाई सेठ तेरें एक लड़की यै सो ऐसौ याकौ ब्याह और करिदै। सेठु बोल्यौ : बताइ भाई। सगाई कहाँ करूँ? तोता बोल्यो : भाई और कहाँ बताऊँ, राजा भोज कूँ सगाई भेजि दै। सेठ ने ब्वाई बखत उज्जैन नगरी के राजा भोज कूँ सगाई और चिट्ठी भेजि दई। ब्वानें बड़ी खुशी ते सगाई लई। अब व्याह के सामान जुरन लगे।

मूर बात जि है कि राजा भोज की बरात गई। साहूकार के न्यां बड़े बड़े ठाट बनाये गये। तोता ब्वा सेठ ते बोल्यौ : कै भाई सेठ मेरी एक बात माननी परैगी। सेठजी बोले : भाई एक नां द्वै मानुंगो। तोता बोल्यौ जब राजा की बरात आवै जब मोय दुबकाइ दीजौ। और एक काम जि करियौ कै राजा ते ज्या बातै कहियौ कै महाराज तुम चौदह विद्या सीखि कें आये हो। सो हमें चौदई विद्या कौ तमासौ दिखाइ देउ। जब व्याहु करिंगो। जब राजा भोज की बरात आई तौ सेठजी नें तोता तौ दुबकाइ दीयौ और राजा ते कही कै चौदहवीं विद्या कौ तमासौ दिखाइ देउ। तुम सीखिकें आये हौ। वु बड़ौ खुशी भयौ और एक बकरा

मँगवायौ और बु मरवायौ। अब व्वा सेठ ते बोल्यौ कै मेरे चोला पै माखी न बैठन पावै। मैं तुम्हें तमासौ दिखाऊँ।

इतमें तोता सेठानी ते बोल्यौ कै मेरे पींजरा की खिरकी खोलि दै। सेठानी ने पींजरा खोलि दीयौ। इतमें बु राजा चोला छोड़िकें बकरा के चोला में घुस्यो और राजा भोज तोता कौ खलरा छोड़िकें अपने में घुसि गयौ। और फिरि व्वा बकरा के ऊपर तेल छिरकवाइ कें आगि लगवाइ दई। और राजा भोज अपने शहर कूँ आयौ।

आई जैसी गाई।

[सं० क० ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

———

२. गुरु–चेला



एक बिराह्मन के दो लरिका ए। बिराह्मन बहुत गरीबो[1]। बु बड़ौ परेशान। ब्वानें बिराह्मनी ते कही कै न होय तौ इन छोरान्नें कहूँ पढ़िबे करि आऊँ। बिराह्मनी बोली : करि आऔ। बिराह्मनु बोल्यौ : भाई गैल कूँ चारि रोटी तौ करि दै। बिराह्मनी नें काऊ के घर ते चून लाइ कैं ब्वाकूँ चारि रोटी करि दईं। बिराह्मनु लै छोरान्नुएँ चलि दीयौ।

चलत चलत जानें दस कै पाँच कोस पै पहुँच्यौ। एक जंगल में बड़े जोर की भारी परी। वामें एक बाबा जी कौ अस्थान बड़ौ रमनीक ओ। बिराह्मन पानी पीबे के काजें वा अस्थान पै मुरकि पर्यौ। बाबाजी नें पानी प्याऔ और बिराह्मन ते पूछी : भाई कहाँ कूँ जाइ रह्यौ है। बिराह्मन बोल्यौ : महाराज! कहा बताऊँ कछू बात होइतौ बताऊँ। बाबाजी बोल्यौ कै भाई बताइ तौ सही कहाँ जाइगौ। बिराह्मनु बोल्यौ : महाराज मैं अपने इन छोरान्नें काऊ के ढिंग पढ़िबे करिबे जाइ रह्यौ हूँ। मेरे पास तौ धेलाऊ हतु नायें काऊ के भीतर दया आ जाइ तौ और कोई पढ़ाइ देगौ ब्वाई के जौरें छोड़ि जाउँगो[2]। बाबाजी बोल्यौ : हम पढ़ाइ दिग्गे हमारे पास छोड़ि जा। बिराह्मनु बोल्यो : अच्छो महाराज आपुकी बड़ी महरबानी होगी[3]। बिराह्मनु दोऊ बालकन्नें छोड़ि कैं अपने घर कूँ आयौ और बिराह्मनी ते बोल्यौ कै एक बाबाजी के जौरें करि आयौ ऊँ। ब्वाके पास ज्या घरी तौ खूब आनन्दु ऐ। गइयनु कौ दूध पियौ और खूब बाबा के टिक्कर खाऔ और पढ़ौ। बिराह्मनी कूँ पैहलें तौ बड़ौ भारी रंज भयौ पीछें कछु तसल्ली ऊ भई।

अब बाबाजी नें बड़े लड़का कूँ तौ बिराह्मन की संस्कृत विद्या पढ़ाई और लहौरे छोरा कूँ चौदह विद्या अच्छी तरह पढ़ाईं, हाँ एक बात जो बिराह्मन ते ठहराई ही वु जिही कि एकु छोरा यै तू

---

१ गरीबो = गरीब+ओ

२ जाउँगो

३ होइगी

लै जइयो और एक छोरा ऐ मैं राखि लुंगो। और चाहैं जुन से कूँ तू लै जइयौ। याई बात पै बामनी खूब रोई ही। अब बाबा बड़े छोरा कूँ तौ खूब लत्ता कपड़ा चीज वस्त पहराइ कें राखैं और ल्हौरे कूँ कोपीन लँगोटी पहरावैं। बड़ो छोरा बिराह्मन-विद्या संस्कृत में खूब हुस्यार कर दियौ और ल्हौरौ चौदहू विद्या निधान कर दीयौ।

अब दस कै जानें बारह बर्स पीछें बिराह्मनी बोली कै अबतौ तुम छोरान कूँ लै आऔ। बिराह्मनु बोल्यौ : बात तौ ठीक कहि रही है। लाउँगो ना तौ देखि तौ आउँगोई। परि मेरे काजें दो रोटी तौ करि दै। बिराह्मनी नें कहूँ ते चून लाइकें दो रोटी करि दईं। बिराह्मन लै रोटी चलि दीयौ। चलत चलत साझ कूँ वा जंगल में पहुंच्यौ। वाकौ ल्हौरौ छोरा कोपीन लगी भई, नंगे भेष में लकड़ियाँ बीनि रह्यौ, ब्वाकी निघा परि गयौ तौ बिराह्मनु छोरा के जौरें गयौ। छोरा देखि कें रोइ गयौ। बोल्यौ : पिताजी तुम मोइ लै चलियौं। खडुआ और गहने-कपड़ा के लोभ में मति अइयौं। बड़े भइया कूँ बाबाजी नें खडुआ, ढोलना, कपड़ा बहुत-सी लोभ की चीज पहराइ रखीं हैं। सो तुम ब्वा लोभ में मति अइयौ। इतनौ सामानु तौ मैं रस्ता चलतई चलत पैदा करवाइ दुंगो। और अब तुम जल्दी चले जाऔ। जौ कहूँ ब्वाइ खबरि परि गई तौ बु मोकूँ और तुमकूँ दोऊन कूँ मारैगौ। सो तुम जाऔ। बिराह्मनु म्वां ते चलि दीयौ। और बाबा जी के अस्थान पै आयौ।

दंडौत परनाम करी। आशीरवाद दयौ। बाबाजी ते राजी-खुशी बच्चान की पूंछी, बाबाजी नें ब्वाते पूछी। बिराह्मनु दो दिना खूबु डाट्यौ। जब तीसरौ दिन भयौ, बिराह्मनु चलिबे कूँ भयौ। तौ बाबाजी नें दोऊ लरिका ठाड़े करि दीये और कही कै लै भाई तोइ जुनसौ बालक प्यारौ लगै ब्वाई कूँ लैजा। बिराह्मनु बोल्यौ : महाराज ल्हौरे छोरा पै जा की मा कौ भारी प्यारु ऐ। बु रोइ रोइ कें पागल सी है गई है[1] सो महाराज जी मैं ल्हौरे छोराई कूँ लै जाऊँगो[2]। बाबाजी कूँ बड़ौ दुःख भयौ। बाबाजी

---

१ ऐ २ जांगो

नें ध्यान धरिकें देख्यौ कै यामें कौन की चालाकी है तौ ब्वा छोराई की बताई बातै[1]। परि खैर, देख्यौ जाइगौ। 'ल्हौरे छोराई कूँ लैजा'। बु बिराह्मनु ल्हौरे छोरा कूँ ई लै गयौ।

म्वाँ ते जानें दो कै चारि कोस वे दोऊ पहुँचे। एक गाम के नजीक* एक गड़रिया भेड़ बकरिया चराइ रह्यौ ओ। बिराह्मन कौ छोरा बोल्यौ पिताजी मैं एकु बहुत बड़ौ बकरा बनुंग्गो। या गड़रिया की पाग में पाँच रुपइया बँधि रहे हैं[2] सो तू बकरा के पाँच रुपइया माँगियौ, जि मोकूँ लै लेगौ फिर मैं मानस बनिकै आइ जाउँगो[3]। परि एक काम करियौ भाई जेबरा ऐ मति दीजौ। बु छोरा बौहौत कछु अच्छौ और बड़ौ सौ बकरा बन्यौ। बिराह्मनु जेबरा यें पकरि कें लै जाइ रह्यौ। गड़रिया की निघा ब्वा बकरा पै परी। बु आयौ और ब्वाते बोल्यौ : ओ बकरा बारे बकरा कूँ बेचतु ऐ का। बिराह्मनु बोल्यौ बेचि दुंग्गो कोई लेगौ तौ। गड़रिया बोल्यौ याकौ कहा मोलु ऐ। बिराह्मन बोल्यौ पाँच रुपइया ऐं। गड़रिया नें पाँच रुपइया अपनी पाग में ते खोलिकें दै दिये और बकरा लै लियौ। बिराह्मनु लै रुपइया चलि दीयौ। परि जेबरा न लियौ।

छोरा बोल्यौ पिता नें बौहौतु बुरौ कियौ। थोरी देर में गड़रिया नें बु भेड़न में चरिबे छोड़ि दियौ, बु चरत चरत एक हाँसि के ओट में जाइकें मानसु बनि गयौ और अपने पिता के पास जा[4] पहुंच्यौ। फिरि दोऊ बाप-बेटा चलि दीये।

आगें एक बड़ौ सौ कसबौ गाम आयौ। बु छोरा बोल्यौ : पिता तुम न्याँ बैठि जाऔ। या प्याऊ पै। और मैं या गाम की शैल करि आऊँ। देखूं कै या गाम में काए चीज कौ जादा शौखु ऐ। बु छोरा वा गाम में आयौ तौ कहा देखै कै ठौर ठौर मेंढ़ा लड़ाइबे कौ भारी चाव पायौ। बिराह्मन कौ लरिका आइकें अपने बाप ते

---

१ बात ऐ
२ रए हैं
३ जांग्गो
४ जाइ
* नज़दीक - पास।

बोल्यौ कै पिताजी मैं एक बौहौत कछू अच्छौ मेढ़ा बनूंगो[१] परि तुम मेरी सांकर काऊ पे मति दीजौ। बिराह्मनु बोल्यौ न दुंग्गो। अब छोरा मेंढ़ा बन्यौ और बिराह्मनु ब्वाकूँ पकरि कें ब्वा गाम में बेचिबे लै गयौ। एक सौकीन बोल्यौ : भाई मेंढ़ा कूँ बेचैगौ का? बु बोल्यौ : बेचुंग्गो। 'कहा लेगौ?' बिराह्मनु बोल्यौ : पन्द्रह रुपइया। ब्वानें पन्द्रह रुपइया दै कें मेंढ़ा लै लियौ। बु बिराह्मनु मेंढ़ा की सांकर कूँ खोलिबे लग्यौ। परि ब्वानें सांकर न खोलन दई। बिचारौ बिराह्मनु सांकर कूँ छोड़िकें चलि दीयौ। ब्वा छोरा नें अपने मन में कही कै पिता नें बहुत बुरौ कियौ। परि खैर देखी जाइगी। ब्वानें मेंढ़ा सांकर सुद्धा छोड़ि दीयौ और दुकान के आगें ब्वाकूँ नाज डार दीयौ। मेंढ़ा नाज खांत खांत एक गली में चल्यौ गयौ और बिलुकइयाँ‡ दैकें बनि छोरा अपने पिता के पास पहुँच्यौ। बिराह्मनु बड़ौ खुशी भयौ, अब दोऊ बाप-बेटा चलि दीये।

इतमें बाबाजी नें ध्यानु धर्‌यौ। देख्यौ कै बु छोरा कहा कहा काम करि रह्यौ है। वे दोऊ बाप-बेटा एक सहर में आए और लड़िका एक बौहौत आलीसान डबल घोड़ा बन्यौ और ब्वा कौ बाप पकरि कैं ब्वाइ लै जा[२] रह्यौ। बाबाजी नें देख्यौ कै बु घोड़ा बन्यौ ऐ। बाबाजी चल्यौ और भेष बदलि कें म्वांई आ गयौ[३]। बु घोड़ा वारे ते बोल्यौ कै घोड़ा कूँ बेचि दै। बिराह्मनु बोल्यौ : बेचि दिंग्गे। बाबाजी बोल्यौ : कहा लेगौ? बिराह्मनु बोल्यौ : द्वै सौ रुपइया लिंग्गो। बाबाजी नें बाकूँ द्वै सै ऊ रुपइया दै दये। और घोड़ा लै लियौ। बिराह्मनु लगाम उतारन लग्यौ। बाबाजी नें न उतारन दई और कहन लग्यौ कै लगाम–कंठी–घरिका (?) जो सब चीज संग दई जाँय[४]। या बातै सब्रु आदिमीऊ कहन लगे कै हाँ भाई ये सब चीज़ घोड़ी-घोड़ा के संग दई जायें। बिराह्मनु बिचारौ खिस्यानौं सौ रह गयौ। इतमें छोरा घबड़ायौ कै आजु सनीचर छोड़े ना। लै घोड़ा कूँ और बाबा जी चल्यौ।

१ बनुंग्गो
२ जाइ
३ आइ गयौ
४ जांय ऐं
‡ कलामुंडी।

कहूँ गंगा-जमुना की सी रेती में दोपैहरी के समैया चढ़िकें खूब रेघौ† और बोल्यौ कै तोइ जीमत न छोडुंग्गो। तैनें बड़ी दुनियाँ ठगी यें। और ठगतौ। बात जिहै कै घोड़ा पसीनान ते तल हैगौ। बाबाजी नें फिर वाकूँ कीचड़ में दौड़ायौ। व्वाकौ लगि जाइ दाबु, पानी में अर्राइ पर्‌यौ और लेह देह घोड़ा कौ शरीर छोड़ कैं मच्छी कौ शरीर बनाय लियौ। बाबाजी नें मगरु बनिकें पकरि लई और बु छोड़ि मच्छी की देह चील बनिकें उड़ि गयौ। बाबाजी बाजु बनिकें पकरिबे दौर्‌यौ। बु छोरा बौहौतई बच्यौ परि व्वा की पेश न जाय। एक राजा की रानी अपने महल पै केश सुखाय रही। जब ऊपर कूँ मुँह करिकें बार पीछें कूँ करे जब ही बु छोरा एक बहुत कछु उम्दा हार बनिकें व्वाकी गोद में आइ पर्‌यौ। रानी बड़ी खुश भई।

व्वानें राजा ते कही। राजा बड़ौ खुशी भयौ। व्वा हार में एक बढ़िया मनिका बनिकें बिराह्मन कौ लरिका बड़ौ दमकन लग्यौ। बाबा जी बोल्यौ : छोडूँना, चाहें कहूँ दुबकि लै। बाबाजी नें कहा काम कर्‌यौ कै नर कौ भेषु बनाइकैं राजा की कचहरी में नट-लीला करी। बड़े जोर कौ तमाशौ कियौ। राजा बड़ौ प्रसन्न भयौ। राजा बोल्यौ : मांगि भाई तोकूँ कहा चहियैं। तौ 'आप देउगे ना?' राजा बोल्यौ : मांगि दिग्गे। नट बोल्यौ : महाराज रानी की नारि के हार कूँ दै देउ। राजा बोल्यौ तैनें माँगी तौ जबर चीजै परि जा दिग्गे। राजा नें रानी ते मनय* करी। राजा बोहौत पीछें पर्‌यौ। रानी नें रिस्याय कैं हारु फैंकि कें धरती में मार्‌यौ। वाकौ एक एक दानौं है गयौ। बाबाजी नें कहा काम कर्‌यौ कै मुर्गा बनिकें एक एक दाने कूँ बीनन लग्यौ। एकु दानौं एक ईंट तर ओझिल में पर्‌यौ। व्वा की बिलइया बनि गई। बिलइया बनिकें मुर्गा की नारि पकरि लई और तोरि मरोरि कें अलग करौ।

म्वां ते बु बिराह्मन कौ लड़िका अपने पिता के पास आयौ, दोऊ बाप-बेटा फिरि बाबाजी के अस्थान कूँ आये। म्वांते अपनौ बड़ो भइया और सब माल-टाल लैकें अपने घर कूँ आये।

[सं० क० ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

---

† दौड़ाया।   * विनय।

३. फूलनदेई : कोलनदेई



एक फूलनदेई औरु कोलनदेई दो बहन थीं।[1] फूलनदे की माँ हती‡ और कोलनदे की माँ नाँईं। कोलनदेई गैया चरायौ करैई। तौ वाकी मौसी ऊपर ऊपर चून औरु नीचें गोबर की रोटी करिकें भेजैई। तौ कोलनदेई चून चून तौ चाट लेई और गोबरै गाढ़ि दे ई। तौ एक दिनाँ उसकी मा उसे सुपने में दीखी। तौ वाकी मानें पूछी: बेटी दुखी कै सुखी? वानें कही: मैया बहुत दुखी। वाकी अम्मा नें कही: मैं बम्बे पै बेरिया बनूँगी। वानें कही: मा फूलनदेई न खान देगी। कोलनदेई की मा नें कही कि तू बेर खायगी तौ पीरे पीरे, औरु फूलनदेई खायगी तौ वहीं[2] हरे कच्च।

एक दिन कोलनदेई बेर खाय[3] रही ई। तौ फूलनदेई रोटी लैकें आई। वानें पूछो बीबी का खार्यी[4] है। बानें कही: बीबो बेर खा रई[4] हूँ। तूबी खा ले। जब कोलनदेई खाय तौ पीले पीले औरु फूलनदेई खाय जब हरे कच्च। जब वह[5] फूलनदेई घर गई तौ बानें अपनी माते कही: या बम्बे पै एक बेरिया ऐ। जब कोलनदेई खाय तौ पीले पीले और जब मैं बेर उठाऊँ तौ वह हरौ कच्चंद। तौ वाकी मा अंसटपाटी* लैकें परि गई।

जब फूलनदेई कौ चाचा आयौ तौ बानें पूछी कि तू कैसें पड़ी है। वानें कही बम्बे पै जो बेरिया ऐ बाएँ कटवावैं तौ रोटी खाऊँ नहीं तौ रोटी न खाऊँ। बाके चाचा नें बेरिया कटवाई। जब वह बेरिया कटि गई तौ कोलनदेई की मा सुपने में फिरि आई। बानें पूछी: बेटी अब दुखी कै सुखी। बानें कही:

---

१ ई
२ मँई
३ खाइ
४ खाइ रयी है
५ बु
‡ थी।
* खटपाटी।

माँ अब मैं औरवी दुखी। बाने कही : देखि बेटी मैं तेरे घर में मोखी बनुंगी। बामें जब तू खाय[1] करैगी तौ लड्डू पेड़ा, जब बु फूलनदेई खाय[2] करैगी तौ कंकड़ पत्थर।

एक दिन कोलनदेई लड्डू पेड़ा खा[2] रई। इतने में आगई[3] फूलनदेई। तौ वाने कही : बीबी का खा[2] रई है। कोलनदेई ने कही : बीबी लड्डू-पेड़ा खा[2] रही हूँ। आजा तू बी खा ले। जब कोलन खावै तौ लड्डू पेड़ा और फूलनदेई खाय तौ कंकड़-पत्थर। फूलनदेई नें अपनी अम्मा ते जाइकें न्यौं कहि दई कि अम्मा कोलनदेई तौ लड्डू-पेड़ खाय[2] करै। वाकी अम्मा फिरि अनसट-पाटी लैकें पड़ि पई। फूलनदेई कौ चाचा आयौ तौ वानें पूछी कि तू चौं अबकें कैसें पड़ी। वानें कही कि हमारी या मोखी पै बन्द करा देऔ तौ अंजल पानी† करूँ, नईं तौ मैं मरुंगी। वानें मोखी भी बन्द करा दी।

एक दिन फूलनदेई की मानें कही कि तुम कोलनदेई की ऐसी जगह सगाई करियौ कि जो लकड़ी बेचतौ हो। औरु मेरी बेटी की ऐसी जगह सगाई करियौ जो राजा महाराजा हो। तौ व्वानें ऐसी ई जगह सगाई करी।

तौ फूलनदेई की बरात खूब सज धज कैं आई और कोलन-देई की बरात मामूली आई। फूलनदेई की बरात में खरबोरिया मचिगौ और कोलनदेई की बरात में खूबु झमझमाहट आ[4] गयौ। फूलनदेई पै कछू भी गहनों न रह्यौ और कोलनदेई पै खूबु गहनों ह्वैगौ। तौ वाकी मौसी नें कही कि कोलनदेई तू कुछू गहनौं अपनी बहन कूँ दै दै।

जब फूलनदेई की मानें कोलनदेई कौ सिर बाँधौ तौ वाके सिर में बाँधती जाय और कील ठोकती जाय। तौ जब सबरी कील

---

१ खायौ
२ खाइ
३ आइ गई
४ आइ

† भाषा विज्ञान का एक विचित्र उदाहरण है—अन्न+जल = अंजल। इसका एक अर्थ रह गया और यह अन्न का पर्याय बन गया। पानी तब और जोड़ना पड़ा।

ठुकि चुकीं तो वह चिड़िया बनि कें उड़ि गई। तौ कोलनदेई की जगह बानें फूलनदेई भेजि दई। तब वाके पती न पूछी क तू तौ कारी नाँयी, अब तू कारी क्यों है गई। तौ वानें कही कि मेरी मौंसी मोपै कोला पिसवाय करै ई। तो मैं कारी है गई। ब्वानें कही : अच्छा।

जो चिड़िया बनकें कोलनदेई उड़ गई तो वह रोज उनके घर पै बैठ कें न्यों कह करैई कि : कोलनदेई डोलै मारी मारी। फूलनदेई सोवै चित्तरसारी।

तौ एक दिना बु चिड़िया कोलनदेई के पती नें पकड़ ली, जब वाके सिर में से कील निकारीं तो देखी तो कोलनदेई। जब कोलनदेई नें यह बात देखी तो वानें कही कै फूलनदेई ऐ देस निकारौ दे दो। तो कोलनदेई महलन में रहन लगी औरु फूलनदेई कूँ देस निकारौ दै दीयौ।

[सं० क० जगदीश प्रसाद कोसी कलाँ, मु० तालाबशाही, मथुरा. ब्र० सा० मं० के संग्रह से]

—तीन—

कौशल की कहानी

[यहाँ एक कहानी दी जा रही है। इस कहानी की नायिका ने वररुचि की स्त्री उपकोषा के जैसे कौशल का उपयोग किया है।]



यह कहानी इस प्रकार है:—

१. ठाकुर रामपरसाद



१. ठाकुर रामपरसाद



ठाकुर रामपरसाद और इनकी ठकुरानी जे घर में खाली* द्वै पिरानी है। हलुकौ–पतरौ खेतुऊ करत्वे। वापै एक भैंसि, द्वै बरध ऐं। भैंसिया दूध दैंती। खेत में कछु ऐसी पैदा न भई। ऐसें करिकें तीन बरस की वापै भेज रुकि गई। कारिन्दा पटवारी औरु लंवरदार कौ नित्त तगादौ आयौ करै। जब कारिन्दा कौ सिपाई तगादे कूँ आवै जबई नित्त छाछि लै जायौ करै। और जब पटवारी तगादे कूँ आवै तौ बाकी सबु दही यै लै जायौ करै। और जब कबऊ कारिन्दा कौ चक्कड़ होइ तौ बु सबु दूधै लै जाइ। बिचारौ रामपरसादु बड़ौ तंग है गयौ। और भूखनु मरन लग्यौ।

अब कारिन्दा पटवारी बोले कै कैतौ तीन बरस की माल-गुजारी दै जा नहीं कुड़कमीन लाइकें हम कुड़क कराँइगे। रामपरसादु आइकें अपनी बहू ते बोल्यौ कै आजु कुड़कमीन आवैगौ सो मैं तौ दुबकि जाऊँ और तू तारौ दैकें घर में बैठि जइयौ। मैं अबेरी सौ राति में आउँग्गो। रामपरसादु दुबकि गयौ।

अब रामपरसाद की बहू हात पाम धोइकें, नई फरिया ओढ़िकें पानी भरिबे गई। गैल में पटवारी मिल्यौ। बोल्यौ : कै कोयै रामपरसाद की सी बौहौटिया ?

'येजी हम्बै', फिरिकें ठाड़ी है गई।

'रामपरसादु कहाँ गयौ यै। भेजि देय नहीं कुड़की होगी।" ठकुरानी बोली : ये जी वे तौ तिहारे डर के मारें कैऊ दिना के भगि गये।

'भलौ !'

'हाँ जी !'

'तौ पौहे ढोरन की कैसें हौंति होगी ?'

'ये जी मैं ई करतूँ।'

---

* केवल।

'कोई चिन्ता मति करै। हम आजायौ करिंगे।'

आगें चली तौ कारिन्दा पायौ। बोल्यौ कै को जाति ये ? रामपरसाद की सी बहू।' फिरिकें ठाड़ी है गई : 'ये जी हम्बै।'

'तौ रामपरसादु कहाँ गयौ यै। भेज-फेज दै-दाय दे नहीं कुड़की होगी।'

'वे तौ कैऊ दिना के भाजि गये।'

'भलौ ?'

'हाँजी।'

'तौ ढोर-पौहेन की को करि रह्यौ है।

'ये जी सबु मैं ई करि रही हूँ।

'कोई चिन्ता मति करियौ राति कूँ हम आइ जाँइगे।'

'आगें चली तौ सिपाई पायौ। बोल्यौ कै ठकुरानी यै का।

बोली : 'हम्बै जी।'

'रामपरसादु कहाँयें ?'

'ये जी बे तौ भागि गये।'

'भेज-फेज को देगौ ? नहीं कुड़की आवैगी। परि कोई बात नायें। घबड़ैयौ मति, राति-बिराति कूँ हम आइ जायौ करिंगे। और भेजऊ की देखी जाइगी।'

अब दिन मुंद्यौ। राति भई। तौ सिपाई आयौ। फाँटिकु खटखटायौ। बोल्यौ कै रामप्रसादु हत्वै का। ठकुरानी बोली : ठैरियों,आई फाँटिकु खोल्यौ। भीतर गये। खाट बिछाइ दई। सिपाई बैठि गयौ। बोल्यौ कै रामप्रसादु भगि चों गयौ। मैं भेज दै देंतौ। इतेकई में पटवारी आइ गयौ। बोल्यौ कै रामप्रसादु हत्वै का। ठकुरानी बोली ठैरियों आई।

सिपाई बोल्यौ : कोयै ?

'पटवारी जी यें।'

'तौ बीर ! तू मोइ दुबकाइ। तू मेरी धर्म की बहन, मैं तेरौ भइया। मोइ बचाइ।'

बोली : कै सबु लत्ता उतारौ।

बानें सबु लत्ता उतारे। ठकुरानी नें पोतना लैकें सबरौ पोति कें औरु मूँडु पै माटी धरिकें और ऊपर दीयौ धरि कें कौने में ठाड़ौ कर दीयौ। अब फाँटिकु खोल्यौ। पटवारी आए। खाट पै बैठि गये। बोले चिन्ता मति करियौ। तीन्यों बरस की भेज स्याहे में दाखिल करि दुंगो। इतेकई में कारिन्दा आयौ। बोल्यौ : रामपरसादु हत्वै का ? ठकुरानी बोली : ठैरियों जी आई।

पटवारी बोल्यौ : कोयै ?

'ये जी कारिन्दा यें।'

पटवारी बोल्यौ : भागुमानु मोइ दुबकाइ।

वानें कही : सबु लत्ता उतारौ।

वानें झट्टई उतारि दिये। बु बोली कोठी की छाँनि के नीचें घुसि जाऔ। परि मूँडु नेंक नीचें राखियों ज्या में एकु कारौ स्याँपु कैऊ दिना कौ बैठ्यौ है। जानें कहूँ आँधरौ है गयौ यै का। कितऊ कूँ जाई* नायें। वानें कही : भागुमान कान तौ हलाउंगोई ना।

ठकुरानी नें फाटिकु खोल्यौ। कारिन्दा आयौ। औरु खाट पै बैठि गयौ। बोल्यौ कै रामपरसादु कबते नायें। ठकुरानी बोली : ये जी बिन्नें तौ अठबारेनु है गये। कारिन्दा बोल्यौ : कोई बात नायें। मैं सबु देखि भारि लुंगो। और तीन साल अगिली औरु तीन साल पिछली सबु भेज माफु करि दुंगो। बु बोली : ये जी बे तौ गये। अब तुम्हें दीखै जैसें करौ। इतेकई में रामपरसादु आइ गयौ। बोल्यौ कै फाटिकु खोलियौ। ठकुरानी बोली : ठैरियों दूधै धरि आऊँ। आई।

कारिन्दा बोले : कोयै ?

ठकुरानी बोली : बेई एँ।

'को, रामपरसादु ?'

'हाँ जी।'

* जाता ही।

'अरी तौ पनमेसुरी मोइ दुबकाइ ।'

'ये जी कहाँ दुबकाऊँ ?'

'अरी बीर ! तू मेरी धर्म की बेटी। परि मोइ दुबकाइ। नहीं मेरी बड़ी जाति बिगारैगौ।'

'अच्छा तौ, लत्ता-पिछौरा वेगि उतारौ।'

वानें डर के मारें सबु उतारि दिये। बु बोली : देखौ तुम कोठी में घुसि जाऔ। परि एक कामु करियौ या में मेरी परु की दवाईन कौ तेलु धरयौ है कहूँ हलियौ झुलियौ मति। नहीं सबु तेल फैलि जायगौ। चुप बैठे रहियौ। मेरें गठिया दुख कबऊ कबऊ है जातुऐ। फैलि गयौ तौ कौन पै मँगाउँगी। कारिन्दा बोल्यौ : भागुमान उसासु तौ लुंग्गोई ना और की कहा चलाई।

अब फाँटिकु खोल्यौ। रामपरसाद आयौ। बोल्यौ : भाई मैं दिन भरि कौ भूखौऊँ कोई रोटी-फोटी, दरिया-महेरी होइ तौ दै। परि जि तौ बताइ, कोई तगादे-फगादे कूँ तौ नाँइ आयौ। बु बोली : आये तौ हते । अबेरे से आये । ठकुरानी नें महेरी परोसि दई। औरु बाई में दूधु करि दीयौ । रामपरसादु बोल्यौ : भाई जितौ नेंक तातो यै। बु बोली बीजना लै लेउ। सीरौ करि लेउ।

अब बु मन में बोली कै न जानें पटवारी कहूँ भूखौ है का। बड़ी देरते इतई कूँ छानि में ते देखि रह्यौ है । न होइ तौ ज्याइ दूधु दै आऊँ। पटवारी ते बलाइ कामु परत्वै। बेला में दूधु लैकें गई और कोठी के ऊपर दैन लगी । बु तौ बिचारौ डरके मारें चुपु बैठ्यौ। तातौ बेला हात में ते छूटि गयौ । कोठी के ऊपर फैलि गयौ। बिचारौ पटवारी भुरसि गयौ । फफोला परि गये और धमारे में ह्वैकें कोठी में भीतर गयौ । कारिन्दा बैठ्यौ। बाकी पीठि पै परयौ। सबु सरीर पै परयौ वाऊ कै सबु सरीर में फफोला परि गये। बोल्यौ : भागुमान मैंने नाहिं फैलायौ जि तेरौ तेलु आपुई फैलि गयौ यै। परि बड़ौ गरमु है । पटवारी बोल्यौ। हल्यौ मैं ऊँ नाऊँ। मो ताईं कैसें आइ गयौ । रामपरसादु बोल्यौ : महेरी तौ पीछेंई खाउँगो परि जि को कोठी में बबरयौ बैठ्यौ है।

ज्या देखूँ। गयौ औरु कारिन्दा कौ हातु पकरि कें खैंचि लियौ। वानें कही कै तैनें बड़े पाम उखारे। अब बताइ दै ? कारिन्दा नें हात जोरे औरु बोल्यौ कै भाई जन्म भरि भेज मति दीजौ परि मोइ छोड़ि दै। कारिन्दा जी छोड़ि दीये।

फिरि बोल्यौ कै जि छानि में को हलिबे बारौ ये ज्याइ देखूँ। बिचारौ पटवारी पाम पकरि कें खैंचि लियौ औरु खूब मार लगाई। पटवारी बोल्यौ कै भाई तेरौ खातौ माफ़ीदार में करि दुंगो। तू मोइ छोड़ि दै। पटवारीऊ छोड़ि दीयौ।

अब बोल्यौ भाई मैंने जे बड़े-बड़े आदमी मारेयें। जे अब मोइ पिटवाइंगे। सो चलि राति में ई भगि चलें। सबु सामान बाँध्यौ। बोल्यौ : सोटि लकड़िया यै को लै चलै। मरन दै। परि एक कामु करि मेरौ डंडा ला। देखि जि तैनें दीवटि कैसी नीठि ते रचि-पचि कें बनाई यै और कान-नाक, आँख-भौंह कैसे बढ़िया बनाये यें। कोई वैसेंई तौ लै जायगौ। ज्याइ फोरि चलें। इतनी सुनिकें सिपाई बोल्यो कै अजी ठाकुर साहब मरि जाँउगो।

'अरे कै सारे मेरी छाछिऊ तक नहिं छोड़तो।'

'अजी मैं ज्या नौकरी यै ई न करुंगो। कबऊ न आउंगो मोइ छोड़ि देउ वाऊ कूँ छोड़ि दियौ। धेला काऊ कूँ न दियौ।

[सं० क० पातीराम अकबरपुर; ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

———

—चार—

जान-जोखिम की कहानियाँ

[इसमें दो प्रकार की कहानियाँ संग्रहित हैं। एक तो ठगों से संबंध रखने वाली; दूसरी विशेष जान-जोखिम अथवा साहस की यहाँ ये कहानियाँ दी गयी हैं।]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं :—

१. ठगों को ठगने वाला
२. चोर घरी में जनम
३. शेखचिल्ली
४. बदकार माता
५. यार की यारई
६. देवर-भावी
७. सपने कौ देसु



१. ठगौं कौ ठगने वाला



एकु राजा ओ। ब्वाके एकु बेटा ओ। ब्वा बेटा पै ब्वाकौ बहुत भारी प्यारु ओ। परि ब्वाकौ मनु नाओ लगतु। एक दिना राति कूँ उठि कै बु चलि दीयौ। चलाचल चलाचल बु एक और दूसरे सहर में पहुँच्यौ। ब्वा सहर में एकु साहूकार रह्यौ करतो। बु साहूकार बहुत धनी ओ। ब्वाके धन कौ कछू वार पार नाओ। परि ब्वाकें कोई बेटा नाओ।

जब राजा कौ बेटा ब्वा नगर में पहुँच्यौ तौ ब्वा साहूकार ऐ खबरि परी। ब्वानें बु बुलायौ। बु गयौ तौ साहूकार नें ब्वाते पूछी कि रे तू को ऐ, कहाँ ते आयौ ऐ? ब्वानें अपनौ सबरौ अहवालु कहि दीनों। साहूकार नें बु राखि लीनों।

साहूकार के सहर में एकु सरोवरि ई। साहूकार कौ जि हुकमु ओ कि कोई आदिमी ब्वा सरोवरि में न अन्हावै। साहूकारु जब जाइकें ब्वामें डुबकी लगाऔ करतु ओ, तौ ब्वाके हाथन में हीरा, पन्ना, जवाहिराति आइ जायौ करत ऐ। परि ब्वानें राजा के बेटा ते तौ न्हाइबे की कहि राखी ई। राजा कौ बेटा जब ब्वा में डुबकी लगावै तौ कंकर पत्थर ई ब्वा के हात में आमें।

भौतु दिना राजा के बेटा ऐ म्वाँ रहत रहत है गए। एक दिना वानें साहूकार ते कही: पिताजी अब हमें अपने मा-बाप की यादि आइ रही ऐ। अब हम उनके जोरें है्वे जांगे। साहूकार नें कही: भौतु अच्छा बेटा। परि लै कहा जागौ। ब्वानें कही: एक घोड़ा देउ और पोसाक पहरिबे कूँ देउ। औरु द्वै चारि लाल ई देउ। साहूकार नें सबु चीज ब्वाकी भेट करी।

अब राजा कौ बेटा चलि दीनों।

(२)

दर कूँच दर मंजिल तै करतु भौ बु अपने नगर कूँ चलिबे ...यौ। आगे जाइकें ब्वाइ एक ठगन की नगरी परी। एक ठगु ...सबु ठगनु को सिरदार हतु काओ, समझि गौ कि जितौ कोई

सौने की चिरैया ऐ। बु ब्वाते झूठी सांची बात बनाइ के अपने घरकूं लिवाइ लैगौ।

ब्वा ठग की द्वै बेटी ईं। ब्वानें अपनी बेटीन ते कही: देखौ जि सौने की चिरैया ऐ जैसें बनै जैसें जाइ ठगौ। बेटीनु कही: अच्छा पिताजी!

राति भई। राजा कौ बेटा ऊपर चित्तरसारी में सोइबे कूँ भेज्यौ। अब एक बेटी चौमुख दिवला एक हात में लैकें और तरवारि लैकें ब्वाके जौरें गई। जाँत खैम ब्वाकी छाती पै चढ़ि बैठी। और ब्वाते कही: तो पै जो कछू होइ सो धरि दै नईं तौ तोइ मारति ऊँ। ब्वानें कही: भागिमान, मो पै कछू नाँएं। जौ तू मोइ मारि देगी तौ ऐसेंई पछितावैगी जैसें लाखा बनजारौ अपने कुत्ता ऐ मारि कें पछितायो का ओ। ब्वानें कही: लाखा बनजारौ कैसें पछितायौ। ब्वानें कही: जौ तू मेरी छाती पै ते उतरि परै तौ बताऊँ। सोई बु छाती पै ते उतरि परी। अबु बु कहिबे लग्यौ:

देखि ठग की बेटी! एकु लाखा बंजारौ ओ। ब्वापै एकु कुत्ताओ। एक पोत ब्वापै औखा परी। ब्वानें पांनसौ रुप्या में अपनौ कुत्ता गहनै धरि दीयौ एक साहूकार के यां।

ब्वा साहूकार कें एक दिना चोर चोरी करिबे आए। कुत्ता उन चौरनु देखि रह्यौ। ब्वानें सोची: जौ जौ मैं भूँसतु ऊँ, तौ तौ जे मोइ मारि दिंगे। जाते ला चुप्पु चापुई देखतु रहूँ कि जे कहा करत ऐं। चोरनु सबु मालु असबाबु निकारि लीयौ। सबु रुप्या औरु माल असबाबु उन चोरनु जाइकें एक ताल में गाढ़ि दियौ कुत्ता नें सब बात देखि लीनी।

सबेरें भएं हल्ला सोरु मँच्यौ। कुत्ता सबन कें लत्तानु पकरि कें खैंचै। परि काऊ की समझ में ब्वाकी बातई न आवै। फिरि एक डोकरा नें कही: भाई जा कुत्ता के संग चलौ, जि कछू बतावैगौ। सोई सबु जने ब्वा कुत्ता के पीछें चलिबे लगे। कुत्ता ब्वाई ताल में जाइकें कूदि परयौ। लोगनु सोची: कुत्ता करतु कहा ऐ। कुत्ता नें डूबक मारी औरु अपने मुँह में एक रुप्यान की थली उठाइ लायौ। लोगनु सोची भाई मालु जाई में ऐ। कै ते उननें घुसि कें ब्वा में ढूड़ा खखोरी मचाई, सोई उन्नें सबु मालु–मता पाइ गयौ अब बु साहूकारु कुत्ता पै बड़ौ राजी भयौ और

ब्वाते कही : जा अब तू अपने मालिक के जौरें जा । ब्वानें सब बात एक चिट्ठी में लिखिकें ब्वाकी नारि में बाँधि दीनी।

अब बु कुत्ता लाखा बंजारे के जौरें चल्यौ। जब लाखा बंजारे ने कुत्ता आमतु देख्यौ तौ ब्वानें अपने मन में सोची कि कुत्ता साहूकार ते दगा करिकें चल्यौ आयौ ऐ । सोई ब्वानें तरवारि निकारि कें कुत्ता कौ मूड़ काटि दियौ।

जब ब्वाइ ब्वाकी नारि में चिट्ठी देखी तौ ब्वानें बु खोलिकें पढ़ी। पढ़िकें एक दम ब्वाइ झमा आइ गयौ। और ब्वाइ हाय कुत्ता हाय कुत्ता करिकें रोइबे लग्यौ। सो हे ठग की बेटी ! जौ तू मोइ मारि देगी तौ तुइ ऐसें ई पछितायगी, चौंकि मेरे पास कछू हतु नाँएं।

× × ×

ब्वा राजकुमार नें बे लाल अपनी जाँघ चीरि कें ब्वा में भरि लए।

दूसरे दिना दूसरी ठग की बेटी आई औरु बुई ब्वाकी छाती पै चढ़ि बैठी। राजा के बेटा नें ब्वाते कही : जौ तू मेरी जानि लै लेगी तौ तू ऐसेंई पछितावैगी जैसें राजा अपने बाज ऐ मारिकें पछितायौ काओ। ब्वानें पूछी राजा कैसें पछितायौ? ब्वानें कही: मेरी छाती पै ते उतरि तब तोइ बताऊँ। बु छाती पै ते उतर परी। राजा कौ बेटा कहिबे लग्यौ :

देखि ठग की बेटी ! एक राजानें एकु बाजु पारि राख्यौ। जब राजा सिकार खेलिबे जायौ करतौ तब बु अपने पंखन ते ब्वाकी छाया करतु जायौ करतु ओ। एक दिना राजा ऐ बड़ी प्यास लगी। परि पानी कहूँ न । ब्वाई बखत एक चील एक स्यांप ऐ मारि कें एक पेड़ पै डारि गई ब्राके मुँह में ते ज़हर की बूँद झर्यौ करैं। राजा नें समझी कि ईसुर नें मेरे काजें पानी बरसायौ ऐ। सोई एक कटोरा में उन बूँदनु कौं लैबे लग्यौ। बाज ऐ सब बातन की खबरि ई। सोई ब्वानें राजा के कटोरा पै झपट्टा मार्यौ, सो कटोरा गिरि पर्यौ। राजा ऐ बड़ी रिस आई। ब्वानें तीर कमान ते झट्ट बाजु मारि दीयौ।

जब बु ऊपर कूँ चाह्यौ सोई ब्वाइ स्यांपु दीस्यौ। अबु बु हाय बाज हाय बाज करिकें रोइबे लग्यौ। सो हे ठग की बेटी!

मेरे ऊ पास कछू नाँय। जौ तू मोय मारि देगी तौ तुइ ऐसें ई पछितावैगी।

बु व्वा दिना लौटि गई और अपने पिता ते जाइकें कही : पिताजी जाके पास कछू नाएँ। बापु नें कही : हतु कैसें नाँय।

× × ×

तीसरे दिना बु पहली ठग की बेटी फिरि आई। व्वानें आइकें व्वाते कही : देखि राजा के बेटा! हमारौ बापु ठगु ऐ। व्वाके चंगुल में ते तू बचि नाएँ सकतु। जाते तू मेरौ एकु कहनौं मानि। मेरे बाप की द्वै ऊँटिनी ऐ। एक ८० कोस जाँति ऐ और एक ६० कोस जाँति ऐ। तू अस्सी कोस बारी ऊँटिमी ऐ खोलि लीजो और मोऊ ऐ अपने संग बैठारि कें भाजि निकरियो।

राजा के बेटा नें हामी भरि लई। अबु बु ऊँटिनी ऐ खोलिबे चल्यौ। परि व्वाइ पहँचानि न परी कि कुनसी ऊँटिनी ८० कोस चलति ऐ। व्वानें साठि कोस चलिबे बारी ऊँटिनी खोलि दई।

अब बे दोऊ व्वा पै बैठिकें भागि निकरे। आगें जाइकें साठि कोस पै ऊँटिनी बैठि गई। अब ठग की बेटी नें कही : मेरौ बापु आइकें अब्हाल पकरें लैंतु ऐ। चौंकि अस्सी कोस बारी ऊटिनी रहि गई ऐ। तू तौ अब जा पेड़ पै चढ़ि जा और मैं नीचें ठाड़ी ऊँ।

पीछें ते व्वाकौ बापु आइ ई चौं न गयौ। अब व्वाकी बेटी नें कही : पिता बु ज्याँ ते अब्हाल ई भाजि कें गयौ ऐ। तुम साठि कोस बारी ऊँटिनी पै चढ़िकें जाऔ और व्वाई पकरि लाऔ। मैं जब तक जा अस्सी कोस बारी पै चढ़िकें अपने घर कूँ जाँति ऊँ। ठग नें कही अच्छी बात ऐ।

ठगु व्वाइ ढूँड़िबे चल्यौ। व्वाकी बेटी ८० कोस बारी ऊँटिनी पै बैठी और राजकुमारु ऊ बैठार्यौ। अब राजा कौ बेटा ऊँटिनी पै चढ़िकें अपने सहर कूँ चल्यौ। रास्ता में व्वानें अपने मन में सोची : जौ जि अपने बाप की ई नाँइ भई तौ मेरी कहा होगी। सोई व्वानें तरवारि ते व्वाऊ की नारि उड़ाइ दई।

अब बु अपने घर आइ गयौ। और राजपाटु करिबे लग्यौ।

[सं० क० चंद्रभान : लोहबन।

२. चोर घरी मैं जनम



एकु साहूकारु बड़ौ मालदारु ओ। परि ब्वाकैं कोई संतान नांही। भगमान की ऐसी करनी भई कै बुढ़ापे में बिनुकें एकु लरिका पैदा भयौ। साहूकाल नें बड़ी खुशी मनाई। खूब डट्टौनु* कियौ। माया गोविन्द की ऐसी भई कै ज्या दिन ते लरिका पैदा भयौ ब्वा दिन ते पइसा में घटोतरी हौंन लगी। और धीरें धीरें जब बु लरिका स्यानौं भयौ तौ अनेक बुरी आदति ब्वामें परन लगीं। पढ़िबे ते ज्यौ चुरामन लग्यौ। नशेबाजी, सराफखोरी, जूआ खेलिबौ बौहौत सी बुरी टेब ब्वा में परि गईं। धीरें धीरें घर कौ पइसा जब बरबाद ह्वै गयौ, तौ चोरी करन लग्यौ।

ब्वानें कहा कामु कर्यौ कै लुहार कैं जाइकैं लोहे की मेख बनवाई और एक हतौरा लीयौ। राजा के महलन में चोरी करिबे जाय। भीत में मेख गाढ़ि दे और चढ़ि जाय। ऐसैंई ऊपर चढ़ि गयौ। और ऊपर चढ़िकें मोरी में लेजु बाँधिकें भीतर महलन में उतरि गयौ और राजा की छोरी की चीज-वस्त गहनें-गाठें ऐ लै आयौ। धौंतायौ भयौ तौ महलन में हल्ला मच्यौ कै राजा की बेटी कौ जेबर चोरी चल्यौ गयौ।

राजा नें सुनी। राजा नें सुनिकें पहरेदारन ते कही। पहरे-दार बोले : महाराज तारौ टूट्यौ ना, औहँड़ौ लग्यौ ना, अब और बात कौ कहा इंतजाम करें। राजा नें कहा कामु कर्यौ कै अपने पहरेदार और सिपाही सबु बुलाये। और बुलाइकें हुकमु दीयौ कै चोर कूँ को पकरैगौ। दरोगा जी बोले कै आजु पहरौ मैं दूंगो और मैं ई चोर ऐ पकरुंगो।

इतमें साहूकाल के लरिका की एक सिपाई ते यारई ई। सिपाई ब्वाके ढिंग गयौ और ब्वाते सबु किस्सा कहि दियौ। कि आजु तोइ पकरिबे कौ बीरा दरोगा जी नें खायौ ऐ। बु बोल्यौ देखी जायगी[1]। दरोगा नें कहा कामु कर्यौ कै चौराहे के खरंजा पै रुपइया बखेर दिये। और हतकड़ी-बेड़ी लैकें पहरौ दैन लग्यौ।

---

१ जाइगी

* दृष्टौन = नामकरण संस्कार का भोज।

जब आधी रात कौ समैयौ भयौ तौ चोर नैं कहा कामु करयौ कै जनानों भेष बनायौ। और खूब बढ़िया लहँगा पहरयौ और खूब बढ़िया फरिया ओढ़ी और सोलह हू सिंगार बनायौ। और पामन में गुर की लपटी लपेटी और हात में चौमुख दिबला जोरि कें ब्वा दरोगा कें चलि दीयौ। जब ब्वा दरोगा के जौंरें पौंहोंच्यौ तौ दरोगा बोल्यौ कौन ? आधी राति पै कहाँ जाइ? बु बोल्यौ : श्री महाराज ! आज हम श्री दुरगाजी कौ बरतु रहीं सो जोति-बाती करिकैं पथवारी पै पूजन करिबे जाइ रही ऊँ। इतनी बात सुनिकें दरोगाजी नें ब्वाकूँ छोड़ि दीयौ। परेते जब वापिस हैकें आई तौ दूसरी सड़क की गैल आइकैं सब रुपइया पामन में चुपटाइ लए। औरु फिरि दरोगा के ढिंग आयौ और दरोगा जी ते घूँघट की ओट करके धीरें धीरें बोली : श्री महाराज ! तिहारे हात में जि कहायै ? दरोगा जी बोले : जि हात-पामन को हतकड़ी-बेड़ी यें। दरोगा जी पै ते लैकें अपने हात-पामन में पहरन लगी। और कहन लगी : श्री महाराज ! कैसें पहरत ऐं ? दरोगा जी बोले : नेकवक्त ऐसे नाँय पहरें। देखि जि हातन में पहराई जाति यें और जि पामन में पहराई जाँति यें। और ऐसें तारौ लगायौ जांत्वै। दरोगा जी या सबु काम कूँ अपनेई हात-पामन में करन लगे। और तारौ लगाइ कें बोले : लेउ तुम खोलि देउ। ये सब ऐसें पहरी जांति एं।

लै तारी कूँ बु लंबी परी। दरोगा हतकड़ी-बेड़ी में बँधे पड़े रहे। समेरें भयें खबरि लगी कै दरोगाजी हतकड़ी बेड़ी में बँधे परे एं। और कहन लगे कै धोकौ है गयौ।

दूसरे दिन दीमान साब नें बीरा खायौ। कै आजु हम पकरेंगे[१]। सिपाई नें ब्वाते जाइके कही : कै आजु दीमान साब नें पकरिबे कौ बीरा खायौ ऐ ! बु बोल्यौ : देखी जायगी।

चोर नें कहा कामु करयौ कै फटे पुराने लत्ता बाँधि कैं और धोबिनि कौ भेष बनाइकैं ताल पै लत्ता जाइ धोये। आधी सी राति पै दीमान साब आहट सुनिकें ताल पै पहुँचे। और धोबिनि

१ पकरिंगे

ते बोले तू इतने खन क्यों लत्ता धोइ रही यै । धोबिनि बोली : महाराज फसल कटिबे कौ बखतु ऐ। दिन में तौ नाज-पानी की आस में डोलें याते महाराज याई खन सोफतौ परत्वै । दीमानु बोल्यौ : इतै‡ कहूँ तूनें[1] कोई आदिमी देख्यौ यै। धोबिनि बोली : महाराज कहा बताऊँ मेरी एक धोबती यै पटवारी की धोबती धोइबे लाई सो लै गयौ । दीवानु बोल्यौ कहाँ गयौ ? बु बोली : महाराज ! अब्हाल[2] ई जाई गली में घुसि गयौ यै। परि साहब[3] तिहारे या भेष और घोड़ा की टापन के आहटै सुनिकें तौ भागि जायगौ[4] । एकु काम करौ कै ज्या भेष ऐ तौ उतारि देउ और तुम मेरे बाने ऐ पहरि कैं लत्ता धोओ। न्याईं मिलि जायगौ[4] । दीमान की समझ में आइ गई । अपनौं भेषु तौ उतारि दीयौ और व्वाके लत्ता पहरिकें लत्ता धोमन लग्यौ ।

बु चोर लै व्वाके लत्तान्नें† चढ़ि घोड़ा पै भग गयौ। धौंताईं खबरि मिली कै दीमान साब पै खूबु लत्ता धुवाये यें । सबेरें भयें कोतवाल साब नें बीरा खायौ। कै आजु हम पकरिंगे । सिपाई नें आइकें कही कै आजु कोतवाल साहब ने पकरिबे कौ बीरा खायौ । चोर बोल्यौ देखी जायगी[5] ।

कोतवाल साब नें कहा कामु करयौ कै एक ऊँट पै खूबु धन-माल लादि कें छोड़्यौ। और कही कै देखैं याइ को पकरै । घूमतु-घूमतु जब ऊँटु आयौ। झट व्वानें घर में घुसाय[6] लियौ और धनुमाल लैकें फूटे से घर में ऊँट काटिकैं दाबि दओ।

अब कोतवाल नें ऊँटु ढुड़वायौ। म्वा कहूँ होइ तौ ऊँटु पावै। बड़ी सी भारी ढूँड़-खोज करी परि पते न चले । राजानैं

१ तैनें
२ अभाल
३ साब
४ जाइगौ
५ जाइगी
६ घुसाय

‡ इधर।

† लत्तान+ऐं = यह ब्रज बोली में चल रही नवीन संश्लिष्टता की प्रवृत्ति का द्योतक है। यथार्थ में इसका उच्चारण साधारण 'नैं' से भिन्न है, यह ऐंकार 'उदात्त' स्वर से बोला जायगा।

एक दूती बुलाई और ब्वाते कही कै तू ऊँट कौ पतौ लगाइ दै। जो मागै सो दुंगो। दूती चली और ठौर ठौर बइयरन में बैठि-बैठिकैं कसोड़† लगामति डोलै। एक ठौर ब्वानें सुनी कै बहना ब्वाइ तौ डरु ई नाँइ लगै। परि देखियौ काऊ दिना अजामकई* जानि जायगी। इतनी बात सुनिकें दूती म्वांई बैठि गई। और बोली : बहना मेरी आँखिन्नें दो महीना है गये। घूआ मारते मारते। बौहौतेरौ ऐलाजु करबाइ लयौ परि कोई फाइदा ई नाँय[1] परै। इतेकई‡ में म्वां चोट्टा की मा बोली कै बहिन[2] कोई दवाई करि। बु बोली : दवाई कहा करूँ। वैद ऐसी अनखटोटी दवाई बतामतैं जो कहूँ न मिलि सकै। बु बोली : कहा दवाई बताई ये। दूती बोली ऊँट कौ खूनु बतायौ ऐ। काजर की तरह आँजिलै। बु चोर की मा बोली : तू को ऐ। दूती बोली : बहिन[2] मैं गैल चलती ऊँ। चोर की मा बोली : काऊ ते किस्सा मति करियो। कल्लिई मेरे छोरानें ऊँट काट्यौ ऐ। चलि मैं दऊँ। दूती बोली बीर तेरौ रामु भलौ करै। तैनें मैं बचाइ दई। ब्वानें एक खीपरा भरिकें खूनु दै दीयौ, दूती नें कहा कामु कर्यौ। लगायौ सो लगायौ ब्वाकी के ते ब्वाके दरवज्जे पै साँतिये काढ़ि आई। इतेकई में ब्वाकौ छोरा आयौ। ब्वानें बु साँतियौ कढ़्यौ देख्यौ। ब्वानें कहा कामु कर्यौ कै लै खीपरा में खूनु गली गली में घर घर पै साँतिये काढ़ि दीये। बाँदी कोतवाल कूँ लै कें आई। कै महाराज मैं ब्वाके दरवज्जे पै साँतिये कौ निसानु बनाय[3] आई हूँ। अब कोतवाल साब और दूती दोऊ देखत डोलें। म्वाँ[4] गली गली में घर घर पै निसान बनि रहे। दूती चकराइ गई। हारि कें लौटि आई।

अब राजा साब नें फिरि बीरा डार्यौ। बीरा काऊ नें न उठायौ तौ सिपट्टर‡ साब ने बीरा खायौ और कही कै आज हम

१ नाँइ
२ बहैन, भैन
३ बनाइ
४ मुआँ, मुँहा
† टोह, खोज।
* अचानक ही।
‡ इतने ही।
‡ इंस्पैक्टर।

पकरिंगे। सपट्टर ने हुकमु दीयौ कै हम चोट्टा की जब तारीफ जानें जब हमारे हात में पकराई दे । राति के समैया पै चारुयौं ओर रोशनी कराइ दई और एक कौने पै डेरा तानि कें सिपट्टर साब नें अपनी चौकी लगाइ लई और ठौर ठौर सिपाही पहिरे पै करि दीये। चोर के यार नें खबरि दई कै आजु सिपट्टर साब नें बीड़ा खायौ ऐ। और जि सरारति* ठहराई ऐ कै जब जानें हात में हात पकराइ दे। बु बोल्यौ देखी जायगी।

आधी सी राति के अरसा में बु चल्यो। एक हात में तलवार लई और एक मरे से महा गरीब बनियां की दुकान पै आयौ। ब्वाते बोल्यौ कै बनिया के । बनिया डरपतु-काँपतु बेगि सीना† बोल्यौ : हाँ जी। 'तेरें बूरौ हतु ऐ'। बनियां बोल्यौ : हतुऐ जी ! बु बोल्यौ : दै तौ एक रुपइया कौ । बनियाँ बिचारौ बूरौ तौलिकैं लायौ और ब्वाऊ कें आगें तोल्यौ। ब्वानें कहा कामु कर्यौ कै तरवारि ते ब्वाकी कुहनी पै ते बाँह काटि दई । लै बाँह कूँ चलि दीयौ। और सिपट्टरु के डेरान की ओर चल्यौ, एक ओर ते डेरान में ईंट फैंकी।

ईंट के लगत ही सिपाई ब्वा ओर भगे। इतमें सिपट्टर साब अकेले रहि गये। बु झट्ट तम्बू में घुसि गयौ और सिपट्टर साब ते बोल्यौ : लेउ मेरी बाँह पकरौ चोट्टाऊँ। ब्वा बनियां वारी बाँह लम्बी करिकें पकराइ दई और आपु भाग गयौ।

इतने[1] में सिपट्टर साब नें हल्ला मचायौ कै चले आऔ मैंने चोट्टा की बाँह कतर लई है । अब बु बोल्यौ कै समेरें एकु एकु आदिमी की जाँच करौ। ज्या काऊ की बाँह कटी मिलै तौ समझौ कै बुही चोट्टा ऐ।

जब धोंतायौ भयौ तौ एक-एक आदिमी देख्यौ गयौ। बु बनियाँ देख्यौ तौ ब्वाकी बाँह कटी पाई। बे बोले तेरी बाँह कहाँ गई। बु बोल्यौ : महाराज ! राति एकु बूरौ लिवैया आयौ सो बूरौ-

---

१ इत्ते

* 'शर्त' का सादृश्य साम्य से 'सरारति' हो गया है।

† से।

फूरौ तौ कहा लीयौ मेरी बांहै काटि लैगौ। राजा बोल्यौ : बड़े अचम्भे की बात यै, चोट्टा हात नाँय आवै। राजा बोल्यौ : आजु हम पहरौ दिंगे।

चोर के यार नें खबरि दई कै आज राजा तुमें पकरिंगे। बु बोल्यौ देखी जायगी।

ब्वानें कहा कामु कर्यौ कै एक बोरी नाजु भरि कें और एक दतरा लैकें चमरिया कौ भेषु बनाइकें एक दुकान पै दानों दरन लग्यौ। जब राजा पहरौ दैंतु आयौ तौ ब्वाते बोल्यौ कै तू को ऐ। जो इतने बखत चाखी चलाइ रही ऐ ? बु बोली महाराज दिन में तौ किसाननु कौ खेतु काटिबे जाँनों परत्वै और इनकौ दाने कौ भारी तगादौ होत्वै। सो श्री महाराज ज्याते याई बखत दरिबे आई हूँ। राजा बोल्यौ : कोई और आदिमी तौ नाँइ देख्यौ ? चमरिया बोली : महाराज अभालई न्याँ हैकें एकु आदिमी गयौ यै। चों तुम कहा करते ? 'अरे बु चोरु ऐ, हम ब्वाइ पकरिंगे। बु बोली : महाराज चोर ज्या तरह ते तिहारे हात न आवैगौ। हाँ एक तरह ते हात आइ सकत्वै कै तुम मेरे बाने कूँ पहरि लेउ और ज्याई ठौर पै बैठि जाओ। भलें दानों मति दरियौ। मैं तौ फिरि दरि लूंगी। परि आवैगौ ऐसेई हात। और मैं तिहारे घोड़ा-फोड़ा यै तिहारे महल पै पौंहोंचाइ आऊँ।

राजा की समझ में आइ गई और ब्वाको बानों पहरि कें दानों दरन लग्यौ। समेरे की हौनि में खबरि लगी कै राजा पै राति-भरि दानों दरवायौ यै। राजा के कपड़ा और घोड़ा कूँ लैकें रमतौ भयौ।

राजा बोल्यौ : भाई हम हारे और चोर जीत्यौ परि अबु बु हमते मिलि जाय। हम ब्वाकूँ आधौ राजु दिंगे। चोट्टा राजा के ढिंग या बात यै सुनि रह्यौ औ। बु बोल्यौ। राजा साब तिरबाचा भरौ। मैं लाऊँ वाकूँ। राजा तिरवाचा भरि गयौ। बु बोल्यौ : मारौ चाहें छोड़ौ, मैं ऊँ चोर। राजा नें पीठ ठोंकी और आधौ राजु दै दियौ।

[सं० क० कन्हैयालाल, अकबरपुर; ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

---

३. शेख शिल्ली



एक चोट्टान कौ गाम हौ। एक डोकरी नें चोट्टान ते कही कै हमारे शेकशिल्ली ऊ पे ले जाय करौ। चोट्टान नें कही कै लै जाय करेंगे। तौ शेक शिल्ली बिनके संग जाय करें।

एक दिना चोट्टा चोरी करिबे गये। तौ चोट्टा तौ अच्छी चीज उठावें और शेकशिल्ली नें चाकी चलाइ दई। तौ घर बारे जाग परे। चोट्टा तौ भाग गये और शेकशिल्ली रह गयौ। घर बारेन्नें बु पकर लीयौ। तौ शेकशिल्ली बोल्यौ कै मैंने तौ तुम्हारौ घर बचायौ यै। तुम मोकूँ खीर पूरी खवाऔ। सो बु खूब खाय कैं घर कूँ गयौ।

तौ चोट्टान नें बा डोकरी ते कही : यी तौ खीर-पूरी खाय कें आवै और हमें पकरवायगौ। तौ वा डोकरी नें कही कै नाईं कर दूंगी। सो दूसरे दिना फिर एक कमरा में घुस गये। सो बे तौ रुपैयान की थैली उठामें और शेकशिल्ली नें ढोलक बजाय दई। सो घरबारे जग परे। चोट्टा तौ भाग गये और शेक शिल्ली रह गयौ। बिन्नें शेक-शिल्ली पकर लयौ। सो शेक शिल्ली बोल्यौ कि मैंने तौ तुम्हारौ घरौ बचायौ। फिर बाकूँ खूब महमानी खवाई। फिर अपने घर कूँ गयौ।

सो चोट्टान ते वाकी डोकरी बोली : मैं नांई कर दुंगी। तौ फिर एक डोकरी के घर में घुसि गये। सो बु डोकरी खीर राँध कें धर के सो गई सो चोट्टान नें खीर परसि लई। सो बु डोकरी हाथ पसार कें सो रही। सो शेकशिल्ली बोल्यौ कै देखौ यी डोकरा खीर माँग रही है। सो वाके हात पै खीर धर दई। सो जग परी। सो चोट्टा भाग गये। बा छोरा कूँ गारी गई। सो बु बोल्यौ मैंनें तौ तेरौ घर बचायौ है। सो बानें खूब खीर खाई और अपने घर कूँ चलौ गयौ।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल बिलौठी; ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

४. बदकार माता



एक साहूकार के लड़का और राजा के लरिका की दोस्ती ही।

जो साहूकार कौ लड़िका काहो वानें समंदर में जहाज चालू कर दई फिर वाके यार कूँ मालुम भई सो अपने पिता ते बोल्यौ कि मेरौ यार परदेश कूँ गयौ है। मैं ऊ जहाज लैकैं जाऊँगो। फिर ब्वा लड़का कौ पिता बोल्यौ : हमारौ काम राजनीति कौ है बे साहूकारें। बिनकौ काम साहूकारी कौ है। सो राजा कौ लरिका जिद्द बाँधि कैं और जहाज लदवाइ कै चलि दियौ।

चलत चलत दो मंजल[1] पै यार मिल गयौ। एक मंजल आयकें बाकी राजधानी निकरि गई। सो आगें बढ़कें देखै कि[2] दूसरे राजा के लरिका शिकार खेलते पाये। सो राजा कौ लरिका अपने यार ते बोल्यौ कि[3] भाई साहूकार के लरिका तू अपनी जहाज कूँ लै जा। मैं तौ जहाज कौ लंगर डारकैं कोई घोड़ा लुंग्गो। सो जहाज में ते उतर कें गाम गाम घोड़ा देखत डोलै। जा घोड़ा की पीठ पै हाथ धरै सोई नब[4] जाय। बु घोड़ा वाइ ना पसंद लगै। आगें बढ़िकें कोई बनी में घोड़ा हीस्यौ। सो वानें कही या घोड़ा ऐ और देख चलूँ जब जहाज पर[5] चलुंग्गो। सो आगें बढ़ कैं देखै कै बनी में घोड़ा मिल्यौ अगारी-पछारी लगु रही है और लील बछेरा यै। और वाके आगें हरी हरी घास परी। चना की दार दूध ते नांदि भरी रही। घोड़ा कूँ देखकें खुशी है गयौ कि हम याई घोड़ा ऐ लैंगे। जब आगें देखै बढ़के, उस घोड़ा कौ सहीस सोय रह्यौ। तो उस सहीस को[6] पूछी कि या घोड़ा कूँ बेचैगौ। सहीस बोल्यौ कि मालिक कूँ पूछें ते मालुम परै। तो सहीस और राजा कौ बेटा दोनों मालिक के पास चले।

---

१ मंजिल २ तौ
३ कै ४ नवि
५ पै ६ ते

तौ मालिक के पास आये तौ फिर मालिक ते पूछी : कह या घोड़ा यै बेचौ तौ यह राजा कौ लरिका लै ले। राजा के कुमर नें पूछी कि[1] आप याकी कीमत कह दें। तौ घोड़ा के बराबर रुपैयान कौ ढेर कर दे तौ घोड़ा कूँ दै दैं। तो फिर राजा कौ लरिका बोल्यौ इस घोड़ा कूँ समुंदर के किनारे लै चलौ म्वाँ मेरी जहाज ठाड़ी है सो म्वाँ रुपा दे सकूँ। सो जहाज में ते रुपया निकार कें घोड़ा की बराबर ढेर कर दयौ। सो घोड़ा राजा के लरिका कूँ दै दियौ। सो राजा कौ लरिका घोड़ा ते बोल्यौ कि[3] तू याकौ कि मेरौ? जब घोड़ा बोल्यौ कि अब तौ मेरे मालिक आपु ही हौ।

जब घोड़ा के ऊपर राजा कौ लरिका सवार भयौ। तौ जब घोड़ा नें उड़ान भरी। राजा कौ लरिका घबड़ायौ कि मैं यानें गेरयौ। जब घोड़ा बोल्यौ : हे राजा के कुँवर अपने मन में दहसत मत करै। मैं तोय नाँय गेरुंगो। आपु अपने मन में विचार करकें यह बताऔ कि तुम्हारौ मकान कौनसी दिशा में है। 'हमारे नगर कौ नाम उज्जैन पुरी है। और उत्तर दिशा में है।' बताऔ।

सो घोड़ा उड़ान भरि कें वा राजा के शहर में आ पहुँचौ। सो राजा के हाली-हमालीन्नें मालुम भई कि राजा कौ लरिका परदेश ते आइ गया। सो राजा के कुमर नें घोड़ा घुड़सार में बँधवाइ दयौ। जब राजा कौ कुमर कचहरी में गयौ। सो राजा की कचहरी में उस वक्त मैंफल जुरि रही। सो राजा के कुमर नें अपने पिता ते हाथ जोरि कें दंडवत कीनी। सो कुमर पुचकारि कें गोदी में लै लियौ। राजा पूछन लग्यौ कि राजी खुशी रहे परदेश में। आपने कहा माल बेच्यौ कि कहा माल लाये।

"मैं पिता कछू माल नहीं लायौ। एक घोड़ा सवारी के लिये लायौ हूँ।" सो राजा बोल्यौ नोकर ते कि जायौ रनबास में खबर करौ कि कुमर आय गयौ। रसोई तईयार करौ। जब रसोई तैयार हुई : रानी बोली बांदी ते कि जा कचहरी में खबरि करिया कि काँसौ तैयार है।

---

१ कै

जब राजा कौ कुमर रनवास में आयौ तौ बाकी माता बोली कि बेटा हमारे काजें सोगात कहा लायौ ? 'मैं माता कुछ नाँय लायौ एक घोड़ा सवारी के काजें लायौ।' 'तौ बेटा तबेले में घोड़ा बहौत हैं, घोड़ा कूँ क्यों रकम डारी । जब कुमर रसोई जैंकें अपनी चित्रसारी में जाय लेटे। शाम के बकत लीलौ बछेरा चढ़िकें फिरायौ। सो शहरु के लोग देखु के बहौत खुश भये कि राजा कौ लरिका बहौत अच्छौ घोड़ा लायौ है।

रानी नें अपने मन में बिचार कियौ : या तरीखा ते यानें दो-चार जहाज लादीं तौ हमारे राज कूँ बरबाद कर देग्यौ । यातें तौ यह कुमर कोई बिधि मरनौ चहियें। सो रानी न अपने मन में बिचारु करिकें मोतीचूर के लड्डू बनाइकें जहर मिलाय दियौ। जब सबेरे के बखत बानें घोड़ा फिरायौ, घोड़ा बोल्यौ : हे राजा के कुमर तू अब मोइ दिल बोरि कैं फिराय लैं। कुमर बोल्यौ : यह क्या बात है ? ई तौ रोजु कौ फिराइबौ है। घोड़ा बोल्यौ : हे कुमर तेरें काजें बहुत बढ़िया मोतीचूर के लड्डून में जहर मिलाकैं धरे हैं। सो आपके लियें[1] काँसौ लड्डून कौ लगैगौ। आप लड्डून कूँ खाओगे तौ आप मर जाओगे । फिर कुमर घोड़ा ते बोल्यौ कि याकौ इन्तजाम तुमहीं बताओ । जब तुम घर कूँ जाओ जब अपनी माता ते यों कहियौ कुआ कौ जल न्हाय धोय कें लै आ। जब न्हाय-धोय कें काँसे पै बैठूंगो। जब बु जल लेने[2] कूँ गई सो थार सेल में टांग लियौ। उसमें से एक लड्डू कुत्ता कूँ डारौ सो कुत्ता मरि गयौ। वा थार कूँ लै कें घोड़ा के पास चल्यौ। घोड़ा नें टाप थार में मारी सो सवा हाथ जमीन में गढ़ि गयौ। रानी नें अपने मन में कही कि कुमर तौ नहीं मरौ !

फिर कैंई रोज पीछें विचार कियौ कि कुमर के काजें बौहौत बढ़िया पोशाक बनवामें । तौ काऊ स्याने पै किलवाइ दिग्गो। पहरत खेम भस्म है जाय । जब सबेरे के बखत ब्वानें घोड़ा फिरायौ तौ घोड़ा बोल्यौ : हे राजा के कुमर आज तू मोइ और फिराय लै। तेरे काजें बौहौत बढ़िया पोशाक बनी भई है। सो

---

१ लयें
२ लेबे

आप पहरौगे सोई भस्म है जाओगे फिर कुमर घोड़ा ते बोल्यौ कि याकौ उपाय तुमई बताओ। घोड़ा बोल्यौ कि जब तुम रसोई जेंने जाओ जब तुम अपनी माता ते यह कहीयौ कि बावरी कौ जल लै आ। न्हाय-धोय कैं, कौंसों जैंकैं, पोशाक पहर कैं जब कचहरी कूँ जाऊँगो। सो रानी मर्दानों भेष करके जल कूँ गई। पीछे ते राजा कौ कुमर बे पोशाक सेल में टांगि कैं घोड़ा के पास लायौ। घोड़ा नें टाप मारी। सवा हाथ नीचें गाढ़ दिये। सो ऊपर चित्रसारी में ते बाँदी देख रही कि पोशाकन्नें कुमर कहाँ कूँ लै जाय रह्यो है। बाँदी नें देखौ कि घोड़ा के पास लै गयौ सो घोड़ा नें जमीन में गाड़ दिये। जब रानी जल लैकें आई, बांदी ते बोली कि कुमर पोशाक कूँ कहां लै गयौ। बांदी बोली : हे रानी, राजा कौ कुमर अपने घोड़ा के पास लै गयौ* । सो घोड़ा नें टापते जमीन में गाढ़ि दिये। जब बांधी[1] बोली : हे रानी राजा के कुमर के मारने[2] में कोई देर न लगैगी हमारी समझ में ई आवे[3] इस घोड़ा कूँ मरवाओ। सो रानी नें आँख दुखानी शुरू करि दई। सो रानी नैं मुकते† स्याने-दिवाने पर ऐलाज कराओ परि आँखिन में फायदा वाइ न परौ। फिर रानी नें स्याने-दिवानेन ते कही कि मेरी आँख जब अच्छी हुंगी कि लीले बछेरा की आँख निकरि कैं मेरी आँखन ते बाँधैं। सो रानी स्यानेन ते कहै कै तुम राजा ते कहौ कि लीले बछेरा के नेत्र निकार कैं मेरी आँखिन ते बाँधैं।

सो राजा ते स्यानेन्नें कही कि जो लीले बछेरा की आँख निकरवाय कैं रानी के नेत्रों से बाँधे जाँय, तौ रानी कूँ फ़ायदा होय। सो शाम के बखत राजा के कुमर नैं घोड़ा फिरायौ। सो

---

१ बाँदी २ मारिबे

३ आवै+ऐ, यहां यह ऐ मूल क्रिया के ऐकारान्त में समा गया है।

* गयो और गयौ में अन्तर है। गयो पूर्ण भूत (Past Perfect) है। 'बु मेरे पास ही आयो,' 'गयौ' = (Past Indefinite) सामान्य भूत होता है।

† बहुत से।

घोड़ा बोल्यौ कि हे राजा के कुमर आज तू मोय खूब फिराय लै फिर मेरौ काल है। फिर राजा कौ कुमर बोल्यौ कै तेरौ काल कैसें ? 'पिता तोते यों कहैगौ कि लीले बछेरा की आँखि निकारि दै तौ तेरी माँ की आँखिन ते बाँधि दें सो अच्छी है जायेगी।' तो ते राजा कहैगौ सो तू हामि भर लेगौ। सोई मैं मर जाऊँगो। जब फिर राजा कौ कुमर घोड़ा ते बोल्यौ कै आपुई इसकौ उपाय बताओ। फेर घोड़ा कुमर ते बोल्यौ कै तुम अपने पिता ते यह कहना कै मैं घोड़ा के नेत्रों कूँ नाँई नाँथ करि सकूँ, मेरी माता बचनी चहियें। पर एक बात यै। जब नेत्र निकारन दुंगो[1]। शहर में डौंढ़ी[2] पीटी जाय कि लीले बछेरा कौ नाँच सब शहर के देखौ। सो हमारे घोड़ा के नेत्र रानी साब के लियें निकारे जायेंगे[3]। परभात होंत खैम‡ राजानें कुमर बुलायौ।

राजा बोल्यौ कै हे बेटा आपकी माता की आँखिन में बौहौत तकलीफ़ है। सो तुमारे* लीले बछेरा की आँख निकरवाइ देउ, तुमारी सवारी के लिये लीलौ बछेरा और ले लैंना। फिर कुमर बोल्यौ कि शहर के बार हू दरबज्जे बंद करकें शहर भर में मुरादी× कराइ देउ कि हमारे लीले बछेरा कौ नाँच देखि जाओ। सो राजा कौ हुकमु, उसी बखत सब दरबज्जे बंद कराय दीये। राजा के कुमर नें घोड़ा खोलिकें फिरानौं शुरू कियौ।

शहर के लोग भाई आने लगे। घंठा-दो घंटा घोड़ा खूब नाँच्यौ कूदौ। सो जब राजा कौ कुमर बौल्यौ कि हे राजा! तू अब कनास+ भेज। सो लीले बछेरा की आँखि निकारि लैं। जब

---

१ दऊँगौ=यहाँ दऊँ, स्वर-सम्पृक्ति से 'दौ' हो गया है। यहाँ इसका उच्चारण औरत (au) की भाँति होगा।

२ डौंढ़ी, ड्यौंढ़ी ३ जामिंगो।

‡ ही।

* 'तुम अपने' के लिए ब्रज के इस क्षेत्र में एक लाघव प्रयत्न का रूप।

× मुनादी का प्रमाद के कारण यह रूप होगया है, 'मुराद' के प्रचलित शब्द के साम्य ने सहायता दी है।

+ बधिक।

लोगन्नें सुनी कै राजा बौहौत अन्याव करवावै । यो घोड़ा मरने लाक× नहीं है। सो याते रानी बेसक मर जाऔ। जब कुमर कनासन ते बोल्यौ कै भाई आ जाऔ नेत्र निकार लेउ । जब कनास घोड़ा के पास आ गये जब घोड़ा में राजा के कुमर नैं एक चाबुक मार्यौ सो घोड़ा कुमर कूँ लैकैं उड़ गयौ । सो फिर लोग-बाग बोले : ठाकुरजी नें बहौत अच्छौ करौ सो घोड़ा के प्रान बच गये।

सो घोड़ा उड़ान भरते भरते आधी* के समैया पै दूसरे राजा की राजधानी मैं पौंहँचौ । सो घोड़ा के एक बाग नज़र आयौ। व्वा बगीचा में घोड़ा और कुमर उतर गये। घोड़ा चरने कूँ बगीचा में छोड़ दियौ। राजा के कुमर नें बिस्तर रौंस पै लगाइ लियौ । बहुत ठंडी ठंडी हवा चल रही और सब तरह की महक आय रही । सो राजा कौ लड़िका चादरि ओढ़ि कैं सोय गयौ।

रात्रि[1] कूँ बगीचा में रहबे वारी मालिन पेशाब करिबे उठी सो बगीचा में पेशाब करिबे लगी। सो देखै कि रौंस पै सुफेद कौन शो रह्यौ है। सो मालिन दहसत के मारैं उल्टी घुस गई। सो मालिन माली तें बोली : हे मेरे पति ! या बगीचा में कौन सोय रह्यौ है। सो हम तुम दोनौं चलैं। सो दौनौं आपस में हाथ पकरि कैं चले सो राजा के कुमर के पास पहुँचे सो कुमर ते बोले कै भाई तू भूतै कि जिन्दै। कौन सोय रह्यौ है ? सो राजा कौ कुमर जग्यौ तौ बोल्यौ कै भाई ! मैं न तौ कोई जिन्द हूँ और न कोई भूत हूँ। मैं मानुष हूँ। 'सो भाई कहाँ ते आयौ ?' 'मैं भगवान नें गेर्यौ और धरती नें झेल्यौ । सो वे माली मालिन कहाए वे निपुत्री ऐं†। सो वे अपने घर कूँ लै गये। सो उनके बाग में लीलौ बछेरा चरौ करै और बु उनके पास रह्यौ करै।

१ राति

× लायक।

* आधी राति ।

† थे।

सो एक दिना के समय मैं राजा कौ कुमर बोल्यौ कि हे माता ! तू मेरे काजें रोटी कर, मैं तेरे हारन कूँ गूँथूँ । सो मालिन नें रोटी करीं और वानें हार गूँथे। सो राजा के कुमर ने एक हार बौहौत अच्छौ बनायौ सो कुमर अपनी माता ते बोल्यौ कै इ सात्यौ[1] हार है का, वा राजा की क्वारी कन्या के डारियौ[2]। सो मालिन उन हारन कूँ लैके रनमास में पहुँची[3]। सो वानें हार पहरानौ शुरू कियौ। सो सातौं[4] हार काहो छोटी ई छोटी कन्या कूँ पहरायौ। सो छोरी और दिन एक टका सोने कौ देई‡। वा दिन दो टका दिये। सो मालिन बौत‡ खुशी भई।

सो राजा की लड़की नें पूछी : हे मालिन ई हार कौनें गूँथौ है। सो मालिन बोली मेरी बहनौत आई है। सो राजा की लड़की बोली तेरी बहनौत मेरे महलन में आवै। फिर मालिन बोली कि मेरी बहनौत राजा की मालिन है, ऐसे नायँ आवै। शबेरे जेबर, कपड़ा, डोला भेज दीजौ। सो मालिन अपने मकान कूँ आई। कुमर ते बोली—'सो कुमर तैनें पत्थर ते मार दई।' राजा कौ कुमर बोल्यौ : कहा बात है ? मालिन बोली तोइ सबेरें महलन में जानौं परैगो। माली कौ लड़का बोल्यौ चलौ जाउँगो। कोई चिन्ता मति करौ। सो वहाँ से कहार डोला कूँ लैकैं आइ गए।

सो माली के लड़का नें न्हाय धोय कैं, सिंगार करके जेबर पहर कें कर जनानौं भेष, बैठ डोला में रनवाश में पहुँची[3]। जब राजा को लड़की नें इन्तजाम कियौ कि अपने मकान के आगें

---

१ साँतयौ

२ विधि में 'डारियो' विशेष आदरार्थक रूप में आता है, 'डारियौ' घ निष्ठता द्योतक भी है और आदरार्थ से रहित है।

३ पौहौंची

४ सातओं

‡ देती थी।

‡ यह दृष्टक है। बहुत = बौहौत = बहौत = भौत = बौत—उच्चारण बल (Stress Accent) ने पहले 'ह' को औकार किया, फिर 'ब' को महाप्राण 'भ' किया, फिर लोप से महाप्राण लुप्त हुआ और 'ब' रह गया।

खाई खुदवाइ दई। जो आदमी भयौ तौ खाई कूँ कूद आवैगौ और औरत भई तौ न कूदौ जायगौ। सो इतने में ही डोला आइ गयौ। सो राजा की लड़की के महलन के आगें ठाड़ौ कर दीयौ। इतने ही में राजा की लड़की मकान से निकरी। राजा की लड़की बोली : हे माली की लड़की अब डोला में ते उतरि आ। अब महलन कूँ आजा। जब माली की लड़को बोली कै मैं यामें हैकैं कैसैं आऊँ। मेरे बाप की ऊ बसकी नहीं ये[1]। सो राजा की लड़की नें पटिया डरवाइ दई। माली की लड़की उतर गई। सो राजा की लड़की नें रसोई तैयार कीनीं। राजा की लड़की बोली : आ बहना जैं लैं।

जब रोटी खाने कूँ गई जब वाके काजें काँसौ तैयार कियौ जब राजा की बेटी बोली : आ बहन एक में ही जैं लें। जब माली के लड़का ने थार बीच में लकीर काढ़ दयी। एक बगला कूँ तू जैं लै, एक बगल कूँ मैं जैं लऊँ। सो राजा कौ लड़का पहलैं जैं लियौं। सो राजा की लड़की कूँ मालुम भई कि ई औरत नहीं है। बाते पीछें राजा की लड़की नें भोजन किये। जब शाम हुई राति कूँ राजा की लड़की नें सेज बिछाई। सो बोली : आ बहना एकई सेज पै सोमेंगे।

जब सोबे[2] कूँ गये सो राजा के कुमर ने दुधारौ खाँडौ पलंग के बीच में रख लियौ। जब राजा कौ कुमर बोल्यौ जो तू उरे कूँ आवैगी तौ तू कट जाइगी और मैं आऊँगो तो मैं कट जाउंगो। छत्रीन के ये धर्म नायँ। क्यारी कन्या ते शरीर न लगानौ चहिये। सो परभात हौंत खैंम राजा की लड़की कहारन्नें बुलाकैं बोली : डोला कूँ लाइकें या माली की लड़की कँ बगीचा में पहुँचा आऔ।

सो राजा की लड़की खटपाटी लेकें पर गई। जब बाँदी कचैहरी में गई सो राजा ते हाथ जोरिकें बोली कै आपकी लड़की खटपाटी लैकें परी है। इतनी सुनिकैं राजा नंगे पायन, मुँह में तिनका दैकैं, रूमाल ते हाथ बाँधि कें ओर अपनी लड़की के पास चल दियौ।

---

[1] नायँ [2] सोइबे

जब महल में आयौ, लड़की ते बोल्यौ : हे बेटी ! मैंने कहा कसूर करयौ सो खटपाटी लैकैं परि गई । जब राजा की लड़की बोली अपने पिता ते : जो मैं शादी पाऊँ तौ माली के लड़का की पाऊँ जो हमारे बगीचा में रहे । सो राजा बोल्यौ : कि बेटी ! वे माली-काछी, हम राजा । हमारौ उनकौ मेलु कहा । जब राजा की लड़की बोली : मेल होय तौ चोखौ नाँय होय तौ चोखौ । वर पाऊँ तौ माली के कौ पाऊँ । जब राजा बोल्यौ : बेटी ! तुम्हारी राजी । वहाँ ही सादी कर दैंगे । तू अन्न-पानी जें । सो राजा कहके अपनी कचैहरी कूँ चल्यौ गयौ ।

सो राजा नैं चार-छै महीना बाद आले तीते बांस कटवाइ कै लड़की की भाँवरि डार दईं । सो माली कौ लड़का और राजा की लड़की अपने महल में रह्यौ करैं । जो राजाकी छै बहन और ईं । वे यह कह्यौ करैंई कि हे बहन जानें तू भंगी, कै जानैं चमार, कै माली, कै जानें काछी के ऐ ब्याही है, हमारे पास मत आय करै । जब वु राजा कौ कुमर अपनी रानी ते बोल्यो : कि हे दिल की प्यारी ! तू अपनी वहनान ते सबेरें यों कहीजो कि जो तुम्हारे पतीन के डंडा लगाइ दे जो राजा समझौ कै नाँयें ।

सो एक दिना के समय में वे छैऊन के पती शिकार खेलने[1] गये । सो छोटी के पतिनें अपनौ लीलौ बछेरा सुमरौ । सो वानें खाने-पीने कूँ रखयौ और हुक्का तमाखू रखी । पेटी जल की अपनी बगल में दवाई, बाँध पाचौं हत्यार, लै ठाकुरजी कौ नाम घोड़ा पै सवार है गयौ । दर कूदत, दर म्यान मारें घोड़ा चले जाय । सो बीयाबान जंगल में शिकार खेलते-खेलते पहुँचे । जो शिकार मिली वाके नाक कान काटतौ भयौ चलौ गयौ ।

जब वे छैऊ कुमरन्नें प्यास भूंक लगी । जब सातयौ राजा कौ लड़िका बोल्यौ कै भाई चलौ आगे कूँ बढ़ौ । वे छैऊ जने बोले : हमारे बस की नहीं है, भूक-प्यास लग रही है । जब बू सातौं[2] लड़का बोल्यौ : तुम कुछ फिकर मत करौ, मो पै ते खाइबे कूँ

१ खेलिबे । खड़ी बोली का प्रभाव यहाँ लक्षित होता है ।
२ सातऔं

लेऔ, पीबे कूँ लेओ। तमाखू पीबे कूँ लेऔ। पर नेंक देर कौ कसालौ है। नेक पक्के पईसा कौ डट्टा चूतरन ते लगा लिदेउ। सब कछू मौज करौ। जो कोई भलौ आदमीओं बु बोल्यौ : मरनौ हक्क है पर डट्टा लगवानौं मंजूर नहीं है। उनते कोई कुमर बोल्यौ : मेरे तौ लगादैं। सो राजा के लड़का नें वाकें लगाइ दियौ। जब राजा के लड़का नें हुक्का पानी खाने-पीने कूँ सब दियौ। सो डट्टा की सबके मन में आइ गई। सो सबनें लगवाइ लियौ। सब दुपेरी बिरमाय कें अपने सहर कूँ आये।

अपनी चित्रसारी कू चले गये। जब रात्रि कूँ छोटी लड़की कौ पति बोल्यौ कै अब अपनी बहनन कूँ देखबे जा अब अपने-अपने पतीन ते कहा बतरावें। जब रात्रि कूँ सोता परि गयौ। जब रनमास रनमास में सुनती डोलैं। जो वे राजा यह बात कहें कि हमारे चूतर दूखैं अलग रह। जब वे रानी बोलीं : कहा बातै, क्यों अलग रहैं। वा माली के लड़का नें हमारे चूतरन ते डट्टा लगाइ दियौ। 'तौ माली कौ बु कैसें रह्यौ, माली के तौ तुम रहे जो चूतर ते डट्टा लगवाइ आये। जब बु छोटी लड़की छैऊन की बात सुनिकै अपने महल में आई।

जब वाके पती नें पूछी : तुम्हारी बहन कहा कह रहीं, तौ बु बोली कि हमते अलग सोओ। हमारे चूतर दूखैं। जब फिर राजा कौ कुमर बोल्यौ : सबेरें अपनी बहनन ते ई पूछीयो कि मैंने कोई राजा के साथ भाँवर पाई कै माली के के साथ। जब सबेरें गई तौ यी बात पूछी कै मैंने काऊ राजा के साथ भाँमर पाईं कै माली के साथ। जब बे बोलीं : राजा के साथ पाई, माली के साथ तौ हमनें पाईं। जब बहन को आनौं-जानौं भयौ।

एक दिना के समय मे व्वा छोटी के पती के पिता पै कोई राजा चढ़ि आयौ। सो कुमर नें सुनीं : मेरे पिता पै कोई राजा चढ़ि आयौ ? सो कुमर राजा कौ टूटी सी बन्दूक, थक्यौ सौ घोड़ा पै चढ़ि कैं गयौ। सो बजार के छोटे दुकानदार कूँ जड़ी, बु अपने चुप चलौ गयौ। जब रण में पहुँच्यौ तौ जब देखौ हमारे पिता की उँगरिया मारी गई। सो अपनौ चीरा फार कैं उँगरिया ते बाँधि दीयौ। जो व्वानें लीलौ बछेरा सुमरौ। चढ़ि घोड़ा पै। दोन कूँ त

घोड़ा टापते मारै तीसरे कूँ चबा जाय, चौथे कूँ राजा कौ कुमर मारै। या तरीखा ते सब पलटिन भगा दई।

जब फिर अपने घोड़ा कूँ लैकें चलौ जब शहर में हैकें नचातौ-कुदातौ आयौ। जब बजार में बनिया-कूजरी बोली कि किसी के घोड़ा कूँ ले आयौ है। जो कोई मर गयौ है। जब फिर अपने बगीचा कूँ आयौ। जब बु राजा होश में आयौ।

ब्वानें कही जानें हमारे प्रान बँचाये हैं। जाकौ हमारे चीरा बँध रहौ है।

सो हाली-हमाली इकट्ठे करके कि बोल्यौ भाई, चीरा कूँ मिलायौ जब एक नौकर बोल्यौ : या चीरा कौ मीजान वारौ एक बगीचा में रहै। सो राजा नें एक नौकर भेज्यौ। जब बोल्यौ वाते : तुम राजा साब ने याद किये हौ। चलौ। जब बु अपने रनबास कूँ गयौ, अपनी रानी ते बोल्यौ कि मेरे पिता के यहाँ से आदमी मोइ बुलाने के काजै आयौ है। सो मैं जाऊँ। म्वां राजा ने रानी ते पूछी कि जो अपने प्रान बचावै वाकूँ का चीज दें, लड़की की शादी कर दें। जब बे नौकर कुमर अपने शहर में आये।

जब अपने पिता कूँ हाथ जोरि कें राम राम करी, जब बु राजा रुपा नारियल लैकें ठाड़ौ भयौ। जब बु बोल्यौ : पिता पाप क्यों चढ़ाऔ मैं आपकौ लड़का हूँ। सो राजा ने पुचकार कैं गोदी में लै लियौ। जब फिर कुमर ते कही कि भाई आप यहीं आ जाऔ अब।

सो माली, मालिन, रानी, फौज, पलटिन लैकें आयौ। सो ब्वाके पिता ने हुक्म दियौ अपनी रानी कूँ कि इस पै कुत्ते छुड़वा दिये जाँय सो अपने पिता ते बोल्यौ मेरी माता कूँ माफी मिलनी चहिये।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल, बिलौठी; ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

५. यार की यारई



एक बादशा के लरिका और बजीर के लरिका ते दोस्ती ई। बे दोऊ हरि बखत संग रहेते और एकई सोइबौ, बैठिबौ, खाइबौ, खेलिबौ सबु संगई ओ।

एक दिना की बात, बादशा कौ लरिका अपने पिता ते बोल्यौ : पिताजी हमें द्वै घोड़ा दै देउ। हम शिकार खेलिबे जांगे। बादशा बोल्यौ : "देखौ सबु दिशान में शिकार खेलिबे जइयौं परि दछिन दिशा में पामु मति धरियौं।" बे दोऊ शिकार खेलिबौ जायो करें।

एक दिनाँ बादशा कौ बोल्यौ : यार आजु चलि व्वा दिशा कूँ चलिंगे ज्याकी पिताजी नाहीं करतें। बजीर कौ लरिका बोल्यौ : भाई व्वा दिशा कूँ मति चलै, न जानें कहा झगड़ौ लगि जाइ। बादशा कौ लरिका हट परि गयौ। बजीर कौ लड़िका बोल्यौ : भाई अब न निठैगी अब तौ चलनोंई परैगौ। झट्ट बे दोऊ चलि दये। बादशा के लरिका नें एक शिकार के पीछें घोड़ा डारि दयौ और ब्वाके पीछें पीछें चलि दयौ। बजीर कौ लरिका ब्वाते पीछें रहि गयौ। एक मूसे‡ के भिटे† में बजीर के घोड़ा कौ पाम परि गयौ सो लँगड़ौ है गयौ और बादशा कौ लरिका मारें घोड़ा यै चल्यौ गयौ। चलत चलत साँझ है गई। बादशा कौ लड़िका बोल्यौ : भाई यार कौ कोई पतौ न चल्यौ, ज्यानैं कहाँ रह गयौ। परि खैर। तुमतौ कहूँ ठिकाने ते लगौ।

बादशा कौ लड़िका आगें बढ्यौ तौ एक बौहौत बढ़िया बाग दिखाई पर्‌यौ। व्वाकी चारों ओर पक्की भींति खिंची भई। बादशा कौ लड़िका व्वा बाग के चार्‌यों ओर डोलिकें देखै परि व्वाइ कहूँ दरबज्जौ न मिलै। बड़ी एक देर में व्वाइ बाग कौ दरबज्जौ मिल्यौ। माली ते बोल्यौ : अरे माई माली तनक दरबज्जौ खोलि दै। माली कहन लग्यौ : भाई जि दरबज्जौ न खूटैगौ। जि तौ न्याँ के बादशा की लड़िकी कौ जनानौं बागु ऐ। या में

‡ चूहा, मूसा।

† बिल।

कोई नहीं ठहर सकै। और हम ठहराइ ऊ लेंय तौ बादशा की लड़िकी हमें मरवाइ देगी। सो भाई न्याँ ते कहूँ अन्त चल्यौ जा बादशा बोल्यौ : भाई आजु राति की राति ठहर जान दै सबेरें चले जांग्गे। बादशा के लरिका नें माली कूँ एक अशर्फी दै दई। माली बोल्यौ : साब एक काम करनौ परैगौ। जब बादशा की बेटी आवै तब तुमें दुबकनौं परैगौ। बादशा कौ लरिका बोल्यौ भाई जब दुबकि जांग्गे।

साँझ कूँ जब बादशाह की बेटी आई तौ माली बोल्यौ : भाई बादशाह के लरिका अब तू कहूँ दुबकि जा। अब बादशाह की लड़िकी आइ रही है। बादशाह कौ लरिका एक डाँग की ओटक में बैठि गयौ। बादशाह की बेटी अपनी सहेलीन के संग बाग में आई और सब बाग में घूमन लगी। इतेकई में एक सहेली की निघा ब्वा बादशाहजादे पै परी। सहेली बोली : बादशाह की बेटी ! या बाग में एक बड़ौ खूबसूरति राजान कौ सौ कुमार मेरी निघा परयौ यै। बादशाह की लड़िकी बोली : कहाँ ऐ ? सहेली बोली : देखि म्वाँ मेंड़ की ओट में दुबकि रह्यौ है। बादशाह कौ लरिका अपने मन में बोल्यौ : कै अब मेरी खबरि तौ इनें परि ई गई यै। अब दुककेंते कहा होइगौ। बादशाह कौ लरिका टाड़ौ हैगौ।‡

जब बादशाह की लड़िकी की निघा परयौ तौ ब्वाइ देखिकें बेहोश है कैं गिरि परी। बु अपनी सहेलीन ते बोली कै लाऔ एकु फूल तोरिकैं मोइ देउ। जो जि हुस्यार होगौ‡ तौ समझि ई जाइगौ। ब्वानें एक फूल लैकैं पहलैं तौ दाँतन ते लगायौ फिरि छाती ते लगायौ फिरि पाम ते लगाय कैं, ऊपर हैकैं पीछे कूँ फैंकि दीयौ। बादशाह कौ लरिका लैकें फूलै सोच विचार में परि गयौ। अब बु अपने यार की यादि में उदास हैकें बाग के दरबज्जे की ओर आयौ। वितमें बु बजीर कौ लरिका हौलैं हौलें ढूँढ़त ढूँढ़त ब्वाई बाग के दरबज्जे पै आइ गयौ। बादशाह कौ लरिका ब्वाकूँ देखिकें बड़ौ खुशी भयौ और माली कूँ एक असर्फी और दैकें बजीर कौ लरिका ऊ भीतर घुसाइ लयौ।

‡ 'हैगौ' में 'गंऔ' की सन्धि हो गयी है, अतः उच्चारण 'औरत' के 'औ' जैसा होगा, 'होगौ' में 'गौ' का उच्चारण 'और' के 'औ' का होगा।

जब बु तसल्ली में आयौ तौ बादशाह जादौ बोल्यौ कै यार या बाग में एक बादशा की लड़िकी आई और व्वानें एक फूल लैकें पहिलें तौ दांतन ते लगायौ फिर छाती ते लगायौ फिर पामन ते लगाय कें अपने ऊपर ह्वैकें पीछे कूँ फैंकि दीयौ। सो भाई यार मोइ याकौ अरथु बताइदै । बजीर कौ लड़िका बोल्यौ : भाई मैं बताइ दुंग्गो परि तू मेरौ भेदु मति दीजो। और तोइ मेरे संग गाम कूँ चलनौ परेगौ।

बादशाह जादौ बोल्यौ : भाई तेरे संग चल्यौ चलुंग्गो। परि मोइ बताइ दै। बजीर जादौ बोल्यौ : देखि दांतुन ते लगाइबे कौ अर्थु जिहै कै बु दंतवक्र राजा की बेटी यै। और छाती ते जौ लगायौ तौ बु तोइ खूब चाहै और पाँय ते जो लगायौ यै सो वाकौ नाम पद्मावती है और अपने ऊपर ह्वैकें जो फेंक्यौ है, सो तुमें पिछवारें ह्वैकें बुलाइ गई है।

बादशाह कौ लरिका बोल्यौ : तौ यार अब तौ व्वाके जौरें जांग्गोई। जब राति भई तौ बु गयौ और पिछवारें कमंद फँसि रही सो व्वापै ह्वैक चढ़ि गयौ। समेरे भये बाग कूँ आयौ तौ यार ते बोल्यौ कै यार! आजु व्वानें भोजन की कहि दई है। बजीर जादौ बोल्यौ : भाई मेरौ भेदु मति दीजौ। राति कूँ फिरि बादशाह जादौ गयौ। बादशाह जादी नें भोजन बनायौ और व्वाकूँ परोसि दीयौ। बादशाह जादे नें कही कै मेरौ यार तौ भूकौ मरै और मैं भोजन करूँ! बादशाह जादी नें सुनि लई। व्वानें कही कै महाराज आप भोजन करौ। बिनकूँ लै जइयौ। बादशाह जादे नें भोजन कियौ। जब तक बादशाह जादी नें बजीर जादे के भोजन में जहर मिलाइ कें बाँधि कें दै दीयौ।

बादशाह जादौ लै भोजन बाग कूँ आयौ। और यार ते बोल्यौ लै यार तू भोजन करि लै। बजीर कौ लरिका बोल्यौ : यार, तैनें बौहौत बुरौ कीयौ। तैनें मेरौ भेदु दै दीयौ। वजीर जादे नें भोजन लैकें कुत्ता कूँ डारि दीयौ। थोरी देरमें कुत्ता मरि गयौ। यारु बोल्यौ : तैनें भोजन नाँइ कीयौ, कुत्ता कूँ डारि दीयौ। वजीरजादौ बोल्यौ : भाई देखि, मैंने या मारें भोजन नांइ कीयौ कै कुत्ता खांत खैम मरि गयौ यै। बादशाह कौ लरिका बोल्यौ :

अब मैं ऐसी लुच्ची कौ मौंह न देखुंगो। बजीर जादौ बोल्यौ : भाई, अब तौ तोय मेरें कहें ते और जानों परैगौ। बु बोल्यौ : मैं अब न जांगो। बजीर जादौ बोल्यौ : भाई एक पोत मेरे कहेते जानों परैगौ और लै जि पुरिया लै जा सो पहलें तौ व्वाइ ज्या पुरिया कूँ सुँघाइ दीजौ। फिरि व्वाकी खैरी जाँघ में तिरशूल ते नेंक खून निकारिकें व्वा के म्हौं हातन ते खून लगाइ अइयो।

बादशाह जादौ महलन में गयौ और यार कौ बतायौ भयौ सबु काम ज्यौं कौ त्यौं कीयौ और करि कैं यार कैं ढिंग आयौ। समेरें बाँदी बादशाह जादी कूँ जगाइबे गई तौ व्वाके गैरि हाल कूँ देखि कें घबराइ गई और आइ कैं हल्ला मचायौ कै आपु की बेटा डाँहिन है गई। व्वानें तौ न जानें कितने आदमी मारे यें। जि व्वात जब बादशाह नें सुनी तौ बड़ौ सोच में छायौ और ज्या काऊ ते देखिबे की कहै बुई नाहीं कर जाय। इतमें बजीर जादे और बादशाह जादे नें कहा काम करगौ कै बाबाजी कौ भेषु बनाइ कें बादशाह के न्यां आये। बादशाह बिनते बोल्यो : महाराज ! हमारी तौ लड़की बावरी पागल है गई यै। औरु ऐसौ ऊ लखिन दीखै कै बु आदमी न पैऊ हल्ला कर दैत्यै। बाबा जी बोले : कै कहूँ बुही तौ नाँयें जो राति मरहटान में एक मुर्दे कूँ खाइ रही। हमने व्वाकैं तरशूल ऊ मार्यौ सो व्वा के खैरे पाम में लग्यौ। देखौ तौ सही महाराज बु भई तौ व्वा कौ वश में करन्यैं जानि कौं गमाइबौ यै।

बादशाह नें कछू आदिमी संग लै जाइ कें देखी तौ बुई निशान मिल्यौ। बादशाह बोल्यौ : महाराज ! ज्या कौ कोई इन्तिजाम करौ और ज्याइ न्यां ते लै जाऔ। बजीर जादौ बोल्यौ : एकु घोड़ा देउ हमें और साँझ कूँ याकी खाट सुन्ना परद् बाग के पीछे भेजि देउ।

राजा नें साँझ होंतई व्वाकी खाट बाग के पीछें भेजि दई और आदमी म्वां ते भागि आये। दिन मुँदे बजीर जादे ते बोल्यौ : कै लै बैठारि घोड़ा पै और चलि।

बादशाह जादे नें बु अपने घोड़ा पै बैठारि लई और बजीर-जादौ दूसरे घोड़ा पै बैठि कैं चलि दीयौ और अपने शहर में आयें।

[सं० क० कन्हैयालाल, अकबरपुर; ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

६. देवर–भाबी (यार का घोड़ा)



एक साहूकार के दो बेटा ए । एक कौ ब्याहु है गयौ ओ और एकु ल्हौरौ सौ ओ । भगमान की करनी ऐसी भई कै साहूकार बच्चा कौ सुरगवास है गयो । वे दोऊ भइया रह गये । बड़ौ बोल्यौ अपने ल्हौरे भइया ते कै भइया काऊ बात की फिकरि मति करै । खूब खा और पहरि, मस्त रह ।

एक दिनाँ बड़ौ भइया जिमीदारे* में गयौ । एक ठौर दस–पाँच आदमी बैठे मिलि गये । बिन ते बोल्यौ : कै चौं जी मैं एक बात पूछूँ† । जो बताइ देउ तौ । बे बोले : पूछि भइया । बतामंगे चौंना‡ । बताइबे लाख× होगी तो बतांगे । बु बोल्यौ : जी, मैं ज्या बातै पूछतू कै तिहारे लरिका बारे रूखी सूखी तौ रोटी खाँय और दिन भरि ढोरन पै टँगे रहैं फिरिऊ खूबु मोटे-ताजे, ना कछु दिनन के, बलाय बड़े हाल है जातें । सो ज्या बातै बताओ जि कहा बातै । हम अपने ऐ खूबु घ्यौ दूध मीठौ खबामतै और रात दिन दुकान पैई बैठार राखतें तौऊ सूखत ई जातै । बे बोले : कै भाई ! हमारे बालक एक तौ निघा ते दूर रहनै दूसरे बरहे में मस्त रहतें और जो कछू खातें बु पचि जांतुऐ डोलिबे फिरिबे ई में, सो ऐसौ ई तू करि । पान+ चार ढोर लैकें ग्वारिया करि दै । बु घर कूँ आयौ और अपनी औरत ते बोल्यौ कै देखि जब मेरे भइया कूँ प्यास लगै तौ दूध दीजौ और भूक लगै तौ घ्यौ दीजौ । कोई खवाइबे में घाटौ मति करियौ । ब्वा नें कहा काम करयौ कै डोलि फिरि कैं चार–पाँच पौहे लै लिये और अपनौ ल्हौरौ भइया पौहेन पै करि दीयौ ।

---

* जिमीदारों के मुहल्ले को जिमीदारा कहते हैं, इसमें एकार विकारी रूप के लिये है ।

† पूछूँ ऊँ (हूँ) का लघु ।

‡ क्यों न ।

× लायक का ग्राम रूप ।

+ पाँच ।

बु जिमीदारन के ग्वारियान के सँग में ढोर चरावै और खूब घ्यौ-दूध खावै। थोरे ई दिनान मैं बु कहूँ ते कहूँ दीखन लग्यौ। एक दिनाँ सब ग्वारियान्नें मिलि कैं एक शशे कौ पीछौ कीयौ परि शशौ काऊ के हात न आयौ। ब्वा नें आँट चढ़ाइ कें ब्वा कौ पीछौ कीयो। और दस-बीस खेत दूरि पै शशौ पकरि लीयौ। ब्वाइ पकरि कैं घर कूँ लायौ आइकें अपनी भाबी ते बोल्यौ : कै भाबी देखि, हम कैसौ जानबर लाये यें। यापै कैसौ रूम है। भाबी सैमाऊ बोली : हम्बै लाला ऐसी लाये हैं तुम रूमझूम बादशाह की बेटी। बस वाकौ जि कहिबौ भयौ कै ब्वाकूँ तोख लगि गयौ। अब भाबी ते बोल्यौ : कै अब हम तेरी जबई रोटी खांगे जब हम रूमझूम बादशाह की बेटी लै आमिंगे।

(२)

साहूकार बच्चा म्वाँ[1] ते चलि दीयौ : ब्वाकौ बालातन कौ मदरसे में संग कौ पढ़्यौ खाती कौ लड़िका दोस्तो, ब्वाके न्याँ पहुँच्यौ और ब्वाते सब किस्सा कह्यो। खाती के नैं बु डार्यौ। ब्वाकी खूबु खातरि करी, रोटी जिमाई। रोटी जैंकैं बु तौ सोइ गयौ और खाती नैं एक काठ कौ घोड़ा बनायौ, ब्वामें मशीन लगाई और ब्वाकी छह महीना की मियाद धरी। जब पार जार्यो तौ वाकूँ पुरजा मशीन के समझाये। ब्वाकौ बनानौं सबु बतायौ। घोड़ा पै बैठारि कैं ब्वाते कही कै यातें कहि देउ करियौ कै लै यार के घोड़ा मोइ फलानी ठौर पहुँचाइ दै। म्वांई तोइ पहुँचाइ देगौ।

बु घोड़ा पै बैठि कें बोल्यौ : कै लै यार के घोड़ा मोइ रूमझूम बादशाह के शहर में पहुँचाय दै। घोड़ा नें उड़ान भरी और ब्वाई सहर में जाइ उतार्यौ।

(यही कहानी चन्द्रभान ने संकलित करके लिख दी है। आरम्भ में थोड़ा सा अन्तर था सो वह भाग लिख दिया है। वह कहानी इससे भी अच्छी तरह जोड़ी गई है। पार्ट्स दोनों के प्रायः एक से हैं।)

[सं० क० ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

---

१ 'मुँआ'

७. सपने कौ देसु



(१)

गाम ते बाहिर एक बहेलिया की झौंपड़ी ई। बहेलिया कैं एकु बेटा ओ। बहेलिया रोजु सिकार खेलिबे कूँ जायौ करै। जब व्वाकौ बेटा कछू समरथ भयौ, व्वानैं वुही एक दिना सिकार कूँ भेज्यौ। बु छोरा लै तीर कमान बनखड़ में चल्यौ जाइ रह्यौ। एक पेड़ की डार पै व्वाइ एकु हंस-हंसिनी कौ जोड़ा दीस्यौ। बा छोरा नें हंसु तौ पकरि लीयौ, हंसिनी उड़ि गई।

हंस ए लैकें बहेलिया कौ छोरा अपने घर कूँ आयौ। व्वाकी मा औरु व्वाकौ बापु बड़े खुस भए। बहेलिया नें कही अपनी बहू ते: देखि आजु ई तौ हमारौ लाला सिकार खेलिबे गयौ औरु आजुई ऐसौ सुन्दर पंछी पकरि लायौ। आजु तौ अपने बेटा की सिकार ऐ घर ही राँधियो, बेचिबे नाएँ जात। बहू नें कही: बड़ी अच्छी बात ऐ। पींजरा में बन्द करिकैं हंसु छप्पर ते टाँगि दीयौ। पींजरा में टँगेई टँगे व्वा हंस नें बहेलिया की भौटिया* ते कही: अरी तू जौ मेरे प्रान बचाइदे तौ मैं तोइ सौ रुप्या दिवाइ दऊँ।

बहेलिया ते जाइकें व्वाकी बहू नें सबरी बात कही। बहेलिया नें ज्वाबु दीयौ: 'हमारी कहा अटकी ऐ सो जाइ मारें। हमें तौ सौ रुप्या मिलि जांगे तौ औरु कामु चलैगौ।'

हंस नें कही: 'अब मोइ तू बजार कूँ लै चलि। म्याँई कोई न कोई सौ रुप्या में मौल लै जायगौ।'

बहेलिया व्वाके पींजरा ऐ लैकें सवरे बजार में डोल्यौ। सबु लोग ज्यों तौ कहें कि भाई जि तौ कोई बड़ौ सुन्दर पंछीऐ।

---

* स्त्री, बहू। बधू = बहू = (घनिष्ठता द्योतक) = बहूटिया = बहुटिया = ब+ह+अ+ऊ = भौटिया। इसी—'टिया' प्रत्यय का और भी ऐसा ही उदाहरण है छौट्टिया।

परि सौ रुप्या काऊ नें न लगाए। ब्वाई सहर कौ राजा ब्वाई बखत की हौनि पै आइ निकरयौ। राजा नें सोची : 'ला लै चलूँ। सुन्दर पंछी ऐ। महलन में टँग्यौ रहैगौ।' ब्वानें झट्ट ब्वाइ सौ रुप्या दै दीये औरु बु हंस मोल लै लीयौ।

(२)

राजा के याँ हंस ऐ रहँत-रहायत बहुत दिना है गए।

एक दिना राजा नें राति कूँ सपनों देख्यौ : "सात समंदर पार एक बहुत कछू सुन्दर एकु परीन कौ देसु ऐ। म्वां के राजा की लड़िकी ऐसी सुन्दर जैसी चंदा की सी किरनि। रोजु सबेरें ई कमलन के फूलन ते बु तौली जायौ करै। गोरौ गोरौ ब्वाकौ बदनु औरु आँखि ऐसी जैसें आम की सी फाँक। बु फूलन की सेज पै सोयौ करै।"

राजा जब दूसरे दिना जग्यौ। कचहरी झझझड़ाई। सबु सूर, सामंत, बजीरजादे इकिट्ठे भये। भरी सभा में पान कौ बीड़ा डारि दयौ। औरु राजा नें हुकमु चढ़ायौ : 'जा बीड़ा ऐ बुही चबावै, जो जा परीजादी ऐ दिखावै।' छै दिना बीड़ा ऐ परें परे है गए। परि कोई ऐसौ माई कौ लालु न निकस्यौ जो ब्वा बीड़ा ऐ चाबै। इतमें तौ बीड़ा कुम्हिलायौ और उतमें राजा के प्रान सूखिबे लगे। राजा नें कही : "अब मैं द्वै एक दिना में अपने प्रान छोड़ि दुंगो।"

हंसु टँग्यौ टँग्यौ जि सबरी बात देखि रह्यौ ओ। ब्वानें अपने मन में सोची : भाई हमनें राजा के काजें कछू न करयौ। ब्वानें राजा अपने पास बुलायौ और ब्वाते कही : 'राजा ऐसें प्रान छोड़िबौ ठीक नाएं। तू मेरी पींठि पै असबार हैजा औरु मैं औरु तू दोऊ ज्यांते उड़ि चलें। देखें बु सहरु कहाँ ऐ और कहाँ बु परीजादी ऐ।' राजा नें हंस कौ मतौ मानि लीयौ और चलिबे की तैयारी करि दई। एक दिना सुभ घड़ीन में हंसु राजा ऐ लैकें उड़ि दीयौ।

(३)

कूँच दर कूँच, मंजिल दर मंजिल, हंसु उड्यौई चल्यौ जाय। सातौ समुंदर चलत-चलामत पार है गए। सात समुंदर पार

जाइकें राजा नें एकु सहरु दीख्यौ । कंगूरनदार, छज्जेनदार व्वा सहर के घर बनि रहे । चारयौ ओर सरोवरि बनि रहीं । मोर कोहकि रहे । चिरैयां किलोल करि रहीं । राजा नें हंस ते कही : 'भाई होइ न होइ मेरे सपने कौ देसु तौ जिही मालिम परतु ऐ । ज्यांई उतरि परि ।' हंसु उतरयौ । राजा औरु हंस दोऊ एक भटिआरिन की सराय में ठैरि गए ।

हंस नें राजा ते कही : 'राजा तुमतौ यांई रहौ और मैं जांतूँ औरु व्वा परीजादी कौ पतौ लगांगो ।' जि बात सुनिकें हंसु तौ उड़ि गयौ औरु राजा म्वांई रहि गयौ ।

हंस नें जाइकें कहा देखें कि चित्तरसारी पै वुही परीजादी अपने केस सुखाय रही । जैसें कारी नागिन लहराइ रही होंय । हंस व्वाइ देखिकें झट्ट लौटि आयौ औरु राजा ते आइकें सबु बात कहि सुनाईं ।

राति के बारह बजे हंस पै चढ़िकें राजा परीजादी की चित्तरसारी पै पहुँच्यौ । म्वां जाइकें देखें तो परीजादी फूलन की सेज पै अचेत सोइ रही । राजा नें व्वाकी तौ अँगूठी उतारि लई और अपनी अँगूठी पहिराय दई । झट्ट म्वांते दोऊ लौटि आए ।

सबेरें परीजादी फूलन पै तौली गई । परि काऊ तरह वु पूरी ई न बैठी । सबु लोग बड़े ससपंज में कि भाई आजु कहा बात भई जो जु रानी नाऐं तुलति । परीजादी की नजरि व्वा अँगूठी पै परी । सोई सबनें समझि लई कि भाई कोई तौगा लगि गयौ । परीन के राजानें हुकमु चढ़ायौ : 'आजु ते महल के चारयौ ओर संगीनन कौ पहरौ लगै ।' पहरौ लगाइ दियौ ।

दूसरे दिना राति कूँ हंस पै चढ़ि कें राजा फिरि परीजादी की चित्तरसारी पै पहुँच्यौ । ईस्वर की करनी, हौनी बलवान: पहरेदार सोइ गए । राजा नें अपनी जूती व्वा के पाँइन में पहराइ दई और व्वाकी जूती ऐ उतारि कें लै आयौ । दूसरे दिना सबु जगे औरु जि बखुआ देख्यौ । अब सबु लोग बड़े ससपंज में । कछू समझि में ई न आवै ।

(४)

कछू सोचि समझि कें राजा नें अपनी बेटी की सेज के जौरें लीले रंग कौ एकु हौजु भरवायौ । कमजोर लकड़ियन ते बु हौजु पटवायौ। पहरौऊ औरु कड़ौ करवाइ दीयौ।

दूसरे दिना राजा हंस की पीठि पै असवार है कें फिरि व्वाई चित्तरसारी पै पहुँचौ । कै तौ व्वा हौज पै पांउ परयौ, सोई व्वाकी लकड़ियां गई टूटि और गम्म राजा व्वा हौद में। सबरे कपड़ा व्वाके लीले रंग में तरबतर है गए। जैसें-तैसें करिकें बु व्वा हौद के ऊपर आयौ और व्वा हंस पै चढ़िकें फिरि सराय में लौटि आए।

लौटि कें सबरे लत्ता धोबी कें डारि दए।

राजा के रेसिमी लत्ता, लपट छूटि रही । धोबी के मन में आई कि ला एक दिना इन लत्तान नें पहरि कें सबरे सहर में डोलि लऊँ। धोबी नें न्हाय-धोइ कें बु लत्ता पहरे औरु सहर में घूमिबे निकर्‌यौ। राजा नें अपने सिपाईन ते कह ई राखी कि जो लीले लत्ता पहरें दीखै व्वाई ए पकरि लाऔ। राजा के सिपाईन नें गम्म धोबी कौ पकरि लीयौ। धोबी के ऐ राजा के जौरें बांधि कें लै आए। धोबी नें सबरौ कच्चौ हालु बताइ दीऔ।

राजा नें सराय में अपने हरकारे भेजे औरु बु राजा पकरवाइ मँगायौ। और व्वा देस के राजा नें हुकमु दीयौ : जाइ बिना कछू पूछें-गछें आजुई फाँसी पै चढ़ाइ देउ।

(५)

फांसी दैबे की तैयारी भई। हंसु म्वां जौरें ई एक पेड़ पै बैठ्यौ दिरगन ते आँसू ढारि रह्यौ।

फांसी ते पहलें राजा ते कही गई : 'तोइ एक घंटा भरि में जो कछू करनो होय सो करि लै। एक घंटा की तोइ मौलति ऐ।' राजा नें ज्वाबु दीयौ कि भाइयौ बचपन ते मोइ पेड़ पै चढ़िबो कौ चाबु रह्यौ ऐ। मोइ इजाजति देउ तौ मैं जा पेड़ पै चढ़ि लूँ। राजानें पेड़ पै चढ़िबे कौ हुकमु दै दीयौ।

राजा पेड़ पै चढ़यौ। म्वां हंसु बैठ्यौ ई ओ। झट्ट ब्वाकी पीठि पै राजा बैठि गयौ और हंसु ब्वापे बैठारि के उड़ि चल्यौ। राजा के सिपाई देखत के देखत ई रहि गए।

हंसु राजा ऐ लैकें सहरपना ते बाहिर लायौ औरु राजा ते बचन उचारे: 'राजा अब अपने नगर कूँ लौटि चलौ।' राजा नें कही: 'भाई ऐसौ नांएं है सकतु। नेहार कूँ तौ जा रानी ऐ लैकें ई चलिंगे। चलि जाई सहर कूँ फिरि लौटि चलि।'

हंस औरु राजा दोऊ ब्वा सहर में लौटि आए और एक दूसरी सराय में ठैरि गए। हंस नें ब्वाते कही: 'राजा मेरी हंसिनी मोते बलाइ दिना की बिछुड़ी ऐ। हमारी मानसरोवरि ऊ ज्यां जौरें ई ऐ। कहै तौ ब्वाऊ ऐ लै आऊँ।'' राजानें कही लै आ भैया।

उतमें ब्वा परीजादी नें सोची: 'जि कोई मेरौ बड़ौ सच्चौ प्रेमी ऐ। मेरे पीछें अपनी जानि की ऊ संका नाँइ करी। ब्याहु करुंगी तौ मैं जाई ते करुंगी।

इतमें हंस ऐ अपनी हंसिनी मिलि गई। बु ब्वाइ लैकें राजा के जौरें लौटि आयौ। अब बु राजा ते पूछि कें अकेलौई परीजादी के जौरें गयौ। औरु ब्वाते बातचीत करीं। परीजादी ऊ जुदाई की आगि में जरि रही, ब्वानें कही: 'जैसें बनें जैसें तुम मोइ ज्यांते लै चलौ।' हंसु ब्वाते राति के बारह बजे कौ नाम लै आयौ। औरु फिरि राजा के जौरें वापिस चल्यौ आयौ।

राति के बारह बजे पै हंसु, हंसिनी औरु राजा ब्वाकी चित्तरसारी पै आए। हंसिनी नें परीजादी बैठारी, हंस नें राजा बैठारयौ औरु तीनों प्रानी चलि दीए। चलत चलत एकु पीपर कौ पेड़ु पायौ। हंस-हंसिनी नें कही कि ला थोरी देर जा पेड़ के नीचें बिसराम करि लें। राजा-रानी उतारि दए। राजा-रानी ने कही कि हंस-हंसिनीऔ, तुम तौ जाऔ सोइ, हम पहरौ लगाइ रहे ऐं। हंस-हंसिनी नें कही: 'राजा तुमई सोइ जाऔ। चौंकि ज्यां जंगली मूँसे रहँत ऐं। जौ नैंक ऊ तुम्हारी झपकी लगि गई तौ वे हमारे पंखन नें काटि जांगे। जाते तुमई सोइ जाऔ। हम जागि रहे ऐं।' राजा-रानी नें न मानी और हंस-हंसिनी स्वाइ दीए।

दोऊ थोरी देर तो जगेऊ, फिर बेऊ सोइ गए। मूँसे निकरे औरु हंस-हंसिनी के पंखनु काटि गए। सबेरें जब जगे तौ हंसनें कही : 'देखिलै राजा, हमनें कही सोई भई। अब हमारे पंख तौ छै महीना तक जमिंगे न। अब तुम दोऊ काऊ तरह ते चले जाऔ। लिखी-बदी होगी तौ फिरि कबऊ मति भेटौ है जाय।' राजा-रानी नें कही : "अच्छा!"

राजा नें द्वै काठ की किस्ती बनाईं और दोऊ जोरि दईं। एक में राजा बैठ्यौ और दूसरी में रानी बैठारी। दोऊ किस्ती समुद्र के दरम्यान छोड़ि दईं।

(६)

आगें चलि कें कहा भयौ कि एक मच्छी कौ चपेटा लग्यौ औरु दोऊ किस्ती अलग अलग है गईं।

रानी तौ एक मछुआ नें पकरी। बहुत सुन्दर जानि कें व्वानें सोची : भाई जितौ राजा के लायक ऐ। सोई व्वाइ बु राजा ऐ दै आयौ।

राजा एक भरभूजा नें पकरि लीयौ और भार भुँजवाइबे कूँ व्वापै कूरौ-कजारौ मगायौ करै। राजा भार झौंक्यौ करै।

व्वा राजा नें रानी ते व्याहु करिबे की कही। रानी नें ज्वाबु दीयौ : 'राजा छै महीना तक मैं चिरैयन कूँ चुगौ डारूंगी और बाद छै महीना के मैं तोते व्याहु करि लुंगी।' राजा नें जि बात मानि लई। अब रानी रोजु छत्ति पै चुगौ डार्यौ करै।

इतमें हंस-हंसिनी के पंख जमि गए। बे एक पेड़ पै बैठे। म्वां पंछी आए। उननें हंस-हंसिनी ते कही : 'रे म्वां फलानी रानी चुगौ डारि रही ऐ और तुम ज्यांई बैठे ओ।' जि बात सुनिकें हंस-हंसिनी म्वां पहुँचे। बु ही रानी म्वां पाई। रानी नें सबु हाल उनें बताइ दियौ। उननें रानी ते कही कि री तू धीरज मारि। हम राजा ऊ ऐ ढूंढ़ि कें लामंत ऐं।

(७)

हंस-हंसिनी बिचारे मारे-मारे फिरैं। एक दिना व्वाई सहर में जाइ निकरे जामें बु राजा भारु झोंकतु काओ। हंस-हंसिनी तौ

एक पेड़ पै बैठे ए औरु बु राजा ब्वाई बखत कूरौ बटोरिबे आयौ। हंस नें राजा पहिचान लीयौ औरु ब्वाइ रानी कौ पतौ बतायौ। राजा नें भरभूजा ते कही कि भाई अब हम जांत एं गे । भरभूजा नें जाइबे की कह दई। हंसु राजा ऐ बैठारि कें फिरि उड़ि गयौ। रानी के जौरें तीन्यौ प्रानी चलि दीए।

राजा ऐ तौ सहर के बाहिर छोड़ि गयौ औरु हंसु रानी ऐ म्वांई लै आयौ । राजा-रानी दोऊ मिलि गए। राजा-रानी नें हंस-हंसिनी ते कही : भाई तुम्हारे जा अहसान ऐ हम जीवन भरि नाएँ भूलि सकत।

राजा हंस पै असवार भयौ, रानी हंसिनी पीठि पै बैठी औरु अपने नगर कूँ आए । नगर में आइ कें खूब धूम धाम भई। राजा-रानी अपने महलन कूँ चले गए।

अब हंस नें राजा ते कही : "राजा तोइ तौ परीजादी मिलि गई। मोइ मेरी हंसिनी मिलि गई । अब तू अब अपने महलन में सुख ते रह । हम दोऊ अपनी सरोवरि कूँ उड़े जाँत ऐं।"

राजा नें हंस की जि बानी सुनीं । ब्वाकी आँखिन में ते नीर चुचाइबे लग्यौ। हिलकी भरि भरि कें रोइबे लग्यौ।

हंस नें राजा ते रामु रामु करी।

हंस हंसिनी दोऊ अपनी सरोवरि कूँ उड़ि गए और राजा रानी अपने महलन में रहिबे लगे।

[सं० कं० चन्द्रभान : लोहबन।

—पाँच—

व्रत की कहानियाँ

[यहाँ वे कहानियाँ दी गयी हैं जो व्रतों से संबंधित हैं, और व्रतों के अनुष्ठान का अंग हैं]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं:—

१. नग-पंचमी की कहानी।
२. भैया पाँचें की कहानी।
३. दूबरी सातें की कहानी।
४. ओघ द्वादशी की कहानी।
५. अहोई आठें की कहानी।
६. करवाचौथ की कहानी।
७. शिव चौदस की कथा।
८. सोमवार-रविवार की कथा।



१. नाग-पंचमी की कहानी



(१)

एक गाम में एक लुगाई ई। व्वाके पीहर में कोई हतु नाओ। एक दिनाँ की बात : एकु कारियल स्यांपु एक घर में ते भाजि कें आइ रह्यौ व्वा स्यांपु के पीछें-ई-पीछें एक आदिमी डंडा हात में लऐं व्वाइ मारिबे कूँ आइ रह्यौ। करनी कौ खेल बु लुगाई व्वाई बखत घूरे पै कतना भरि कें कूरौ डारिबे आई : स्याँप पै व्वाइ तर्सु आइगौ। व्वानें व्वाके ऊपर अपनौ कतना दाबि दीयौ। सबु आदिमी तौ हटि गए। बु म्वांई ठाड़ी रही। स्यांप नें कही : 'आजु ते तू मेरी धरम की बैहन और मैं तेरौ भैया।' लुगाई नें कही कि भैया मेरे पीहर में कोई हतु नाएँ। आजु ते तेरौ ही घरु मेरौ पीहरु। सामन में मोइ लैबे कूँ अइयो।

(२)

सामनु आयौ। सबु भैया अपनी अपनी बहनिन्नें लैबे कूँ आए। स्यांपु ऊ अपनी धरम की भैनि ऐ लैबे कूँ आयौ। बहिन नें खूबु आदरु-भावु कर्यौ। डलिया-कोथरी करी। स्यांप नें डलिया-कोथरी तौ अपनी पीठि पै बांधी औरु अपनी धरम-बैहनि ऐ लैकें चलि दीयौ। एक करील के नीचें व्वाकी बांबी ई। बांबी के ऊपर व्वानें अपनी बहिन उतारी। राति भई और बु सोइ गई। स्यांपु अपनी सोमती बहिन ऐ भीतर लै गौ। म्वाँ बड़े बड़े महल बनि रहे। मनिन के दीए जरि रहे। बु स्यांपु सबु स्यांपन को सरप चु ओ। कुनबा व्वाकौ बड़ौ ओ। एक बूढ़ी मा, एकु बाप और भौतु से भैया ए। जब सबु स्यांपु बाहिर चले जांइ तब बु बूढ़ी मा कहै : 'बेटी, अपने भैया भतीजन कूँ दूधु सिराइ दै।' बु रोजु कटोरन में दूधु सिराइ दौ करै। नेंक खटका कर दे। व्वाइ सुनिकें सबु स्यांप आइ जाँइ।

एक दिनाँ की बात। हौंनी बलमान। दूध तातौ रहि गौ औरु व्वानें खटका करि दीयौ। कैतौ बिननें दूधु पीयौ सोई सबके

मौंह पजरि गए। छोटे छोटे स्यांप तौ रिस्याए । परि वा पंच-स्याँप और व्वाकी मा नें सबु चुप्पु करि दीए।

सामनु बीति गयौ। सनूनों ऊ हैगौ। व्वानें अपने सबु भैयान कें राखी बाँधी। लुगाई नें कही कि भैया अब मोइ जान दै। स्यांपु नें कही कि मैं महमान पै खबरि करिबे जांतू। उनई के संग तोइ बिदा करुंगो। स्यांपु महमानें संगई लिवाइ लायौ। बड़ी खातिर-दारी करी। बिदा कौ समैया आयौ। बिदा में स्यांप ने अपनी बहिन ऐ एकु मनिन कौ हारु दीयौ और बु दोऊ बिदा है गए। स्यांप नें कही कै भैना अब मैं तोइ लैबे कूँ आऊँ तबई आइ जैयौ। भैनिनें कही कि अच्छा।

(३)

महमानु बिदा होंती पोत अपनों एकु दुपट्टा भूलि आयौ। बु रस्ताई में ते दुपट्टा ऐ लैबे कूँ गयौ। म्वाँ व्वाइ करील के पेड़ के सिवाइ कछू न पायौ। परि व्वा करील पै दुपट्टा टँगि रह्यो। व्वाइ घर कूँ लै आयौ।

एक दिनाँ कहा भयो कि बु लुगाई अपनी छत्ति ऐ लीपि-ल्हेसि रही और व्वा मनिन के हार ऐ पहरि रही ई। व्वा सहर-पना की जो रानी हतिकाई व्वाकी नजरि व्वा हार पै परि गई। रानी घर आइकें खटपाटी लैकें परि रही। राजा नें कारनु बूझ्यौ। व्वानें हार लैबे की राजी परगट करी। राजा नें व्वा लुगाई कौ मालिकु बुलायौ। और हार की बात पूछी। व्वानें कही कि मेरी भौटिया (बहू) ऐ बु व्वाके पीहर ते मिल्यौ ऐ। राजा नें कही कै द्वै दिना कूँ हमें व्वा हार ऐ दै जा। व्वाई नमूना कौ एकु हारु बनमामनौ है। व्वानें हारु लाइकें दै दीयौ।

(४)

क तौ रानी नें बु हारु पहर्यौ सोई व्वामें स्यांपई स्यांप। फिर राजा नें बुही बुलायौ। परि व्वाकी हिम्मिति व्वा हार ऐ उतारिबे की न परी। फिर व्वानें अपनी लुगाई भेजी। व्वानें बु हारु रानी के गरे में ते उतारि लीयौ। बु फिरि मनिन कौ हारु हैगौ।

राजा नें भेदु पूछ्यौ। व्वानें सब बात बताइ दई।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहवन।

२. भैया पांचैं की कहानी

(सामन वदी ५)



[यह कहानी आरम्भ में वही है जो सामन में नाग पंचमी पर कही जाती है। भैया-पांचैं पर कही जाने वाली कहानी उससे कुछ और आगे भी कही जाती है। यहाँ उसका आगे का भाग ही लिखा जाता है]

फिरि दूसरे सनूने पै बु स्यांपु अपनी व्वाई धरम की भैनि रे लैबे कूँ आयौ। और व्वाइ लिवाइ गौ। अबकी बेर व्वा बहिन नें फिरि खता खाई और जब तक दूधु गरमुई ओ तब तक ई बटका करि दीयौ। स्यांपु जब दूध पीबे कूँ आयौ तब व्वाकी पूँछ व्वा दूध के बासन में जाइ परी। सोई व्वाकी पूँछ जरि गई। अबतौ बु स्यांपु 'लड़ूरा' है गयौ। व्वाइ बड़ी रिस आई और भैनिऐ खाइबे कूँ तैयार भयौ। स्यांप की मा नैं कही कि बेटा जाइ चौं खांतुऐ। जि अब आजु ते इतमें अपने लड़ूरा भैया की सौगंदै खाऔ करैगी। व्वानें कही कि मेरी झूंठी सौगंद खाई तौ। माने कही बेटा बहिन अपने भैया की कबऊ झूंठौ सौगंद नाएँ खाऔ करति। स्यांपु जा बातै मानि गौ।

एक दिनाँ बहन के हात में ते पंखा नीचैं जाइ परयौ। व्वाके खसम ने कही कि पंखाऐ उठाइ दीजो। व्वानें कही: 'मैं नाऊँ उठामति।' मालिक नें फिरि कही कि अरी उठाइ दै। व्वानं ज्वाबु दीयौ: 'लड़ूरा भैया की सौगंद, मैं न उठाउँगी।' स्यांपु जो रोजु व्वाकी जाँच करिबे जाओ करतु औ, इन सब बातन नें देखि रह्यौ। अब व्वाइ सांचु आइ गौ कि मेरी भैनि अपने लड़ूरा भैया की सौगंद झूंठी नांइ खांति।

एक दिनाँ व्वाकी सासु व्वाके छोई-छोरन नें खिलाइ रही। एक छोरा नें कहा कामु करयौ कि बुहारी की सींक इत्तर-बित्तर कर दई। सासु ने कही: 'बँजमारे, तैनें सींक चौं फैलाइ दई। कहूँ तेरौ मामा सौने की सींक न दैं जाइगौ।' स्यांपु तो अपनी

सौनि के घर गुप्पु-चुप्पु रोजु आयौ ई करतु औ । व्याने जि बात सुनि लई । दूसरे दिना झट्ट बु सौने की सींकई बखेरि गौ ।

एक दिनाँ छोरा ने नाजु फैलाइ दीयौ । सासु ने कही कि कहूँ तेरौ मामा सौने के जौ न बखेरि जाइगौ । ए बु स्याधु तौ दूसरे दिना सौने के जौ ई बखेरि गौ ।

ऐसी वु भैनि ई और ऐसौ व्याकौ भैया औ । ऐसी बहिन और ऐसौ भैया सबु काऊ कौ होइ ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन ।

———

३. दूबरी सातैं की कहानी

(सामन सुदी ७)



(१)

दूबरी सातें के दिनाँ सबु बैयरबानी जुरि मिलिकें दूब लैबे जाओ करतीं। माँ जाइकें सबु 'घरुआपाती' बनामतीं। औरु तौ सबु आमती पोत ब्वाइ बिगारि आमतीं परि एक गरीब की छोरी अपने घरुआ पाती ऐ बन्यौ कौ बन्यौ ई छोड़ि आमती।

एक दिनाँ बु तौ अपनी घरुआपाती ऐ छोड़ि कें गई। इतने में एक राजा कौ कुमर म्वां सिकार खेल्तु-खेल्तु आइ निकर्यौ। बु पहले जनम कौ स्यांपु ओ। ब्वानें कही कि मैं जा घरुआ बनामन हारी ते ई ब्याहु करुंगो।

घर जाइकें राजा कौ कुमरु खटपाटी लैकें परि रह्यौ। राजा नें पूछी: 'कहा बात ऐ बेटा!' ब्वानें सबरी बात बताइ दई। औरु कही कि ब्याहु करुंगो तौ करुंगो ब्वा घरुआवारी ते ई, नईं तौ अन्नु-जलु ही ग्रहन न करुंगो। राजा नें नाहीं-नूँकर करी परि बु कहूँ मान्तु ऐ!

राजा नें बु छोरी बुलवाई और ब्वाके माई-बापै बहुत धनु दैकें ब्वाको ब्याहु अपने छोरा के संग करि दीयौ। जि छोरी पहले जनम की स्यांपिन ई।

(२)

एक दिनाँ एक दूती आई। बु काजरु औरु बैंदी बेच्यौ करति ई। दूती नें कही: 'तेरौ खसमु तो पै प्यारु नाऐं करतु।' ब्वानें कही: मेरौ खसमु तौ मोपै सबते जादा प्यारु करतु ऐ।' दूती नें कही कि जब तौ हम जानें जब आजु तुम दोऊ मर्द-बय्यर एक थारी में भोजन करि लेउ। रानी नें कही कि अच्छी बात ऐ।

दूसरे दिनाँ रानी खटपाटी लैकें परि रही। राजकुमर नें आइकें पूछी कि कहा बात ऐ। ब्वानें कही कि आजु तुमें मेरी थारी में बैठिकें भोजन करने परिंगे। ब्वानें कही जामें कहा बातै, ला थारी परोसि कें ले आ। यह ब्वानें एक थारी में खीरि

परोसि लई। बे दोऊ खाइबे कूँ बैठे। रानी बूरौ लैबे गई। राजकुमर नें थारी में एक लकीर खेंचि लई, न्यारी-न्यारी खीरि दोऊन नें खाइ लई।

दूती फिरि आई और व्वानें रानी ते कही कि तोहे धोकौ हैगौ। अबकें तू उनके मुँह में रुप्यौ भौ पानु माँगियो।

(३)

जब व्वानें दूसरे दिनाँ अपने खसम ते कही कि मोइ अपने मुँह कौ रुप्यौ पानु देउ। राजा नें कही कि ला मोइ पानु दै मैं रौंथि कैं तोइ दै दुंगो। जबु इलयाइची लैबे गई, सोई राजा नें अपनी हतेरी ते पानु रोंदि कें दै दियौ। दूती नें फिर आइकें कही कि तोते छलु हैगौ।

अबकें दूती आई और व्वानें कही कि तू व्वाते व्वाकी जाति पूछियो। सोई व्वानें दूसरे दिना जाति पूछी। राजा नें कही कि तोइ ज्यां परतीति न आवैगी। चलि गंगाजी में ठाड़ौ हैकें बतांगो।

गंगाजी में जाइकें बु नारि-नारि पानी में घुसि गौ। व्वानें म्वाई ते अपनौ फनु दिखाइ दीयौ। और डूबि गौ। अब तौ बु रोइबे लगी। म्वाँ एक डोकरी आई। व्वानें कही: 'दूध की नाँद भरवैयो। आजुई के दिनाँ बूढ़ौ स्यांपु आवैगौ। म्वाँई तू घरुआपाती बनाइ राखियो। व्वापै ते सुहागु मांगियो। बुही तोइ देगौ।

(४)

'घरुआपाती' बनायौ। दूध की नाँद भरी। बूढ़ौ स्यांपु आयौ। व्वानें व्वाइ सुहागु दियौ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन।

———

४. ओघ द्वादशी की कहानी
(भादों सुदी १२)



सबु लुगाई गाम ते बाहिर ओघ लैबे जाओ करतीं। रानीऊ जाओ करती। और लुगाईन नें रानी ते कही कि तू ज्याँ ओघ लैबे चों आमति ऐ, अपने घरई राजा ते कैह कें एकु तालु खुदवाइ लै।

रानी नें अपने घर जाइकें राजा ते तालु खुदवाइबे की कही। राजा नें कही कि जि कोई बड़ी बात नाएँ। खुदवाइ दिग्गे।

राजा नें मजूर लगाइ दए। थोरे ई दिना में व्वानें तालु खुदवाइ दीयौ। परि व्वा ताल में पानी ई न निकरै। राजा बड़े ससपंज में परयौ।

म्याँ एकु साधू आयौ। व्वानें राजा ते कही कि काऊ कौ पहलौ ही बेटा होइ और व्वाकी बहू होइ। उन दोऊन की बलि जि तालु चाहतु ऐ। जब ई जामें पानी निकरैगौ। रानी नें कही कि मैं अपने ई बहू बेटाऐ दैंति ऊँ। बहू और बेटा ताल में ठाड़े करि दीए। ताल में पानी निकरयौ और बे दोऊ व्वा में डूबि गए।

ओघ गैया और बछरा ऐ जौरें ठाड़े करि कें लई जांति ऐ।

म्याँई परौस में एक सासु और एक बहू रहँति ईं। सासु नें अपनी बहूते कही कि तू धानूरा-पानूरा रांधि राखियो, मैं रानी के ताल ऐ देखि आऊँ।

धानूरा-पानूरा व्वाके गैया और बछरा कौ नामुओ। व्वानें वुही गैया बछरा काटि कें रांधि लीए। सासु जब लौटी का तौ व्वाइ गैया बछरा न दीखे। बहू नें सबरी बात कहि दई। सासु ने कही कि तैनें जुलम पाड़ारयौ।

सासु नें गैया और बछरा तौ घूरे पै गड़वाइ दीए। और व्वानें कही : "आजु तीकुर को नाजु न खाओ करिंगे, बासौ खाओ करिंगे, दूध-दही न खांगे। गैया-बछरा की पूजा करयौ करिंगे। हे परमात्मा जे दोऊ जीयते है जाँय।"

कैतौ जि बात सासु नें कही सोई कहा देखै कि गैया रभाँति आई। बछरा ऊ व्वाके संग निकरि आयौ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहवन ।

५. अहोई-आठैं की कहानी

(कार्तिक में इस व्रत को केवल बेटा की माँ ही रखती है)



सात दौरानी-जिठानी ई । छैन के तो बेटा जीमत ऐ। सातई के बेटा सालभरि के हैं कें ई छीजि जांतए । जाकौ कारनु जि हो क बु एक दिना मट्टी लैबे कूँ गई । व्याके पाँवरे ते स्यांपिन के बच्ची-बच्चा कटि गए। बुही स्यांपिन व्याके बेटान नें काठि जाँतीं । अहोई आठें कूँ छैन के घर राग रंग होत ए । व्या बिचारी के घर रोहा-राड़ु मचतो ।

एक पोत अहोई आठें कौ दिनाओ । एक व्हौतु कछू फूँस डोकरी व्याके जौरें आई । व्यानें कही कि आजु तू वर्तु रहि जा । द्वै नांदन में दूध भरवाइ कें अपने कोठे में धरवाइ दै। एक में मीठौ और एक में नोंन कौ । फिरि स्याहो माता (स्यांपिन) दूधु पीवे आवैगी । फिरि तू अपने जा छोराऐ लैकें वाहिर निक-रिओ । फिरि स्याहो माता ऐ पकरि कें बैठि जैयौ और व्याके मूँड़ के लीक-जूँआ बीनिओ । छोराऐ बेरि बेरि नोंचि खायौ करियो । बु जब रोवैगौ तौ स्यांपिन कहैगी क री तू जाइ राखि लै। फिर बु तो पै परसंद है जाइगी औरु तोते कहैगी कि तोइ मागनों होइ सो मांगि लै । जा पै तू अपने सातौ बेटन नें मांगि लीजो ।

व्यानें ऐसौई करयौ । जब स्यांपिन नें कही कि तोइ माँगनों होइ सो मांगि लै तौ व्यानें अपने सातौ बेटा मांगि लए । बु अपने बेटन की ल्हासन में धर्ति गई । स्यांपिन नें कही कि तू मेरे बच्ची-बच्चन नें छोड़ि । व्यानें कही कि मैं तेरेन नें कहाँ ते लाऊँ । बे तौ कटि गए । मेरे बेटन की ल्हास तौ धरी ऐं ।

स्यांपिन नें कही कि खैरि, जो कछू भई सो तो भई । अब आजु ते इतमें मेरे मरे भए बच्चन नें तू पुज्जिमान मानियो । कच्चे दूध में कौला घिसिकें उनें काढ़ौ करियो । फिरि उनकौ पूजन करयौ करियो । मैं तेरे बेटन नें सरजीवन करें देतिऊँ ।

स्यांपिन नें बेटन कौ जहरु सूँति लीयौ । बे जीमते है गए ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन ।

६. करवा चौथ की कहानी

(कार्तिक में गणेशजी के इस व्रत को 'सुहागिन' स्त्री ही रखती हैं)



(१)

एक गाम में सात भैया रहत ए। उनकी एक बौहतु कछू प्यारी बहिन ई। सातौ भैया अपनी भैनि पै इतनों प्यारु करत ए कि बे बैहन ते पहलें रोटी नाए खांत। कातिक लगत करवा-चौथि आई। सातौ भौजाई औरु आठई भैनि नें वर्तु कर्‌यौ। जि भैनि के व्याह की पहली वर्ष ई।

जब भैया बाहिर तें आए तो उन्नें अपनी अम्मा तेकही कि अम्मा ला रोटी दै दै। अम्मा नें रोटी परोसी। फिरि जब रोटी पर्सि गईं तौ उन्नें पूछी क हमारी भैनि कहाँ ऐ। अम्मा नें कही : 'बेटाऔ आजु तुमई रोटी खाइ लेउ। बु तौ बर्ती रही है। चंदा ऐ देखिके रोटी खाइगी। उन्ने कही कि तौरी हमऊ जबई रोटी खांगे।

(२)

सातौ भैया अखैबरि* के पेड़ पै चढ़ि गए उनमें ते एकु तौ दीऔ लै गयौ और एकु चलनीं लै गयौ। एक नें चलनीं रोपी और एक नें दीऔ दिखायौ। एकु भाजि कें अपनी भैनि के पास आयौ औरु ब्वाते कहा : 'देखि बु चंदा निकरि आयौ। मा नें सातौ भौजाई औरु आठई नन्द अरघु दैबे कूँ पठै दईं। भौजाई जब छत्ति पै चढ़ि कें गईं तौ उन्नें कही : 'जेई अपने भैयान की प्यारी भैनिऐं। जिनई कौ चंदा निकरि आयौ होइगौ। हमारौ तौ निकर्‌यौ नाएँ।' जि कैह कें बे उल्टा बाहुई लौटि आईं।

परि भैनि नें तौ अपने भैया कौ साँचु मानिकें अरघु दै ई दीयौ।

---

*गाँवों में यह मान्यता है कि शिवरात्रि को इसी पेड़ को पाला नष्ट करता है और फिरि जाड़ा चला जाता है। उसी समय महादेवजी पाताल से आते हैं।

(३)

लौटि कें ब्वानें अपनी भौजाईन ते करुए बदले । करुए बदल्त में जों कहँत ऐं : 'सदा सुहागिल करुए लै । सात सपूती करुए लै ।' परि बिन्नें करुए बदल्त में अपनी नन्द ते कही : बतु खंडिनी करुए लै । अधवर खानी करुए लै ।' भैनि बिचारी भोरी ई। ब्वाकी समझि में कछू न आई । फिरि आठौ भैनि-भैया खाइबे कूँ बैठे। बहिन नें पहिलौ गसा तोरयौ सो तो ब्वा में बारु निकरयौ। दूसरे में मक्खी निकरी। तीसरे गसा ऐ मुँह तक लै जान न पाई सोई सासुरे ते नौआ आयौ। ब्वानें महमान के मरिबे को सँदेसौ सुनायौ। रोहा-राटु मच्यौ। नाऊ ते ब्वा भैनि नें कही कि ल्हासै विकरन न करैं। मैं अब्हाल आई।

भैया अपनी प्यारी भैनि ऐं लैकें ब्वाके सासुरे कूँ चले। भैनि नें ल्हास न उठन दई। ल्हास के आस-पास पीरी मांटी बखेर दई और ब्वामें जौ बोइ दए। साल भरि तक न ब्वानें अन्नु खायौ, न पानी पीयौ। ब्वा ल्हास के जोरें बु बैठी रही । फिरि साल भरि पीछें वुही करवा चौथि आई।

(४)

करवा चौथि कौ दिना ओ। सब वय्यरबानी वर्त की तैयारी करि रही ई। ब्वाई बखत एक डोकरी आई। ब्वानें ब्वा दुखियारी ते कही कि तू अपने पीहर कूँ चली जा । अपने भैयान ते कहिकें जा ल्हासै म्वाई मँगवाइ लीजो । तेरी छोटी भाभी की कन्नी उँगरिया में इमितु ऐ। वु ही तोइ सुहागु देगी । अब छोटी भाभी करुए पलहिबे आई तो ब्वानें बु पकरि लई । भाभी नें 'सदा सुहागिल करुए लै' कहके, अपनी उँगरिया चीरि कें ब्वाके मोंह में निचोरि दई।

वु हरे हरे कहिकें ठाड़ौ हैगौ।

[सं० कं० चन्द्रभान : लोहबन।

---

७. शिव चौदश के व्रत की कथा



एक दिनाँ महादेव पारवती जी आपस में बात कर रहे। सो महादेव बोले हे पारवती जी कल तौ तेरे गाँव चलेंगे[1]। दूसरे दिनाँ महादेव पारवती ससुराल गये। इनके सासु सुसर गरीब ए। शिवजी के लैं पारवती जी की माता कऊँ ते चावल शक्कर लै आई। महादेवजी जिमाइ दए। पारवती जी नें वु ही साग रोटी खाई। जबका दूसरे दिनाँ लौटे, रास्ता में महादेव जी नैं पूछी 'पारवती जी' आपनें का खायो? पारवती नें कही जो आपने खायो सो हमनें खायो। चलाचल दुपहर है गयी। ये छाँय के नीचें रुकि गये। पारवती जी सोइ गईं। महादेवजी सोचें देखूँ तो सही जि झूँठ बोल्ति ऐ कै सच्च। पहले सतजुगों में जनावर बोल्ते थे, आदमी मूँड़ ऐ उतारि कैं नीचें राखि लेत्ये। पेट की पारी टूँड़ी ते उतरि आमती। सो महादेवजी नें पेट की पारी‡ उतारि कैं देखी तौ पारवती जी के पेट में रोटी और साग के दो पिंडे रक्खे। जब पारवती जी जगीं तौ शिवजी नें कही, तू बड़ी झूँठ बोल्ति ऐ। पारवती जी बोलीं: कैसें महाराज! महादेवजी ने कही कि तू तो कैहती कि सो आपनें खायौ सो मैंनें खायौ। मैंने तेरे पेट में देखौ तो रोटी साग के दुए पिंडे रखे ए। तब तौ पारवती जी नें भगवान ते डोर लगाई कि हे महाराज जैसी आज मोते कीनी है ऐसी कोई ते मति करियौं। वाही दिन ते वु पेट की पारी उघरनी बन्द है गई है।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन।

---

१ चलिंगे

‡ पारी = परिया ढकना।

८. सोमवार-रविवार की कथा

सोमवार व रविवार को सावन में व्रत रहने की कथा, तथा लक्ष्मी के विषय में।



एक बावन बामनी गरीब ऐ। इनकें एक छोरा और एक छोरी। दोनों कौ बिहा[1] कर दियो। छोरी थोरे दिनांन पीछें राँड है गई। सो अपने भइया के ढौरे रहिबे लगी। जि छोरी नित्य पीपर नहावै जाय करैई। लच्छिमी वा पीपर पर रहैई। वु जा छोरी के घर पीछें ते चौका बासन करि आये करैई। एक दिन झट्ट वु लच्छिमी वा छोरी ऐ पाइ गई। तौ लच्छिमी बोली ये बीबी तू मोते भायेलौ कर लै। छोरी बोली बीबी मैं तो गरीबनी ऊँ और तू भागवान की है। लच्छिमी बोली ए बीबी ऐसी बात मति करै। मैं तौ तोते भायलौ करूँगी और तेरे घर चलूँगी। पर तोय एक दिन अपने घर जिमाऊँगी तौ वानें वाइ जिमायौ। बड़ी बड़ी अच्छी चीज़ें खवाईं। छोरी नें वाके घर ते आइकें कही बाबा मैंने तो एक भगवान की छोरी ते भायेलौ कर लियौ है और मैं वाके घर आज जैं आई हूँ। मैं ऊँ व्वाइ जिमाऊँगी। बाबा नें कही बेटी तेरी राजी। तू ऊ न्यौंत आ। जैसी रूखी सूखी होंग्गी जिमाइ दीजौ। झट्ट छोरी न्योंताई और दूसरे दिन वु छोरी जैंन आई और जैंय कर बाते कही बीबी मैं तोते व्हौत राजी हूँ[2]। मैं तौ जहीं रहूँगी। छोरी ने कही अच्छा बीबी रहियों। वु लच्छिमी महीं रहिबे लगी। कछू दिनाँ बाद वा छोरी के माँ बाप और वु छोरी गंगाजी नहाइवे जाइवे लगे और भइया की बहू और भइया ऐ घर छोड़ि कैं जाइवे लगे। तो लच्छिमी ते कही बीबी तू मेरी धर्म की व्हैन है तू अपनी भावी भइया के पास रह जे अकेले ऐं। हम गंगाजी नहाइवे जाइ रहे ऐं और थोरे दिनांन में आइ जांइगे। सो

---

१ बिआह   २ ऊँ

यानें हामी भर लई और रहिबे लगी। जाकौ पतौ इन सब घरकेन कूँ नाओ कि जि लच्छिमी ए। जि स्त्री रूप धरिकें उनके घर आई है। बो गंगाजी गये कछू दिनां रहे और महीं मरि गये। तीनों की लच्छिमी जी बाट देखती रहि गई और व्वाई घर में रहिबे लगी। अबतो जे बहू और छोरा भागवान है गए।

[सं० क० डालचन्द, गिडोह, डा० कोसी. (मथुरा)

———



पशु-पक्षियों की कहानियाँ

[यहाँ वे कहानियाँ दी गयी हैं जिनमें पशु-पक्षी पात्र की भाँति आए हैं। ये पंच-तंत्र की कहानियों के समान हैं।]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं:—

१. मगर कौ ब्याहु।
२. गीदड़ की चालाकी।
३. हमेन्देउ।
४. मोरनी बेटी।
५. न्यौरा भइया।
६. बिल्ली कौ बौहरौ।
७. घेन्नी।



१५ मगर कौ ब्याहु



(१)

एक गौहदरी–गौहदरा ए। बे जमुना जी की उल्ली पारि एक भाटि में रह्यौ करत ए। एक पोत कहा बात भई कि जमुनाजी की पल्ली पारि तौ बरखा है गई। म्वां बड़ी-बड़ी फूँट, कचरियाँ, बेंगन है गए। औरु उल्ली पारि परि गई सूखा। गौहदरी-गौहदरान कूँ कछू खाइबे कूँ न भयौ। उनने सोची : भाई कैसें ऊ पल्ली पारि पहुँचनौ चहिएँ। परि पहुँचें[1] कैसें। जौ पुल पै हैकें जांत ऐं तौ आदिमी पकरि लिंग्गे। औरु जौ जमुना जी में हैकें जांत ऐं तौ ब्वाई में डूबि जांग्गे। गौहदरी ने कही जमुना जी के करारे पै तौ चलौ मैं उपाउ बताऊँगी।

अब गौहदरी–गौहदरा जमुना जी के किनारे पै पहुँचे[1]। ब्वाई बखत जमुना जी में एकु मगरु पैरि रह्यौ। मगर ऐ देखिकें गौहदरी बोली : जेठ जू हत ऐं का, जेठ जू! मगर नें सुनी अन-सुनी करि दई। गौहदरी नें फिरि दुबारा कही : जेठ जू हतऐं का, जेठ जू। अबकें मगरु चौंक्यौ औरु कही : अरी का हमते कहति ऐ का? गौहदरी नें कही : हाँ तुम ई ते तौ कहि रही ऊँ। मगरनें कही : कहा कहँति ऐ? कह'! गौहदरी नें कही : जेठ जी हमारे माँऊ तौ अकालु परि गयौ ऐ औरु पल्ली पारि सुकालु ऐ। जाते हम पल्ली पारि पहुँचिबो चाहँत ऐं। हमें कैसें ऊ पार न उतारि देउ। मगर ने कही : तौ हमारे काजें कहा लावैगी? गौहदरी नें कही : तुमारे काजें एक अच्छी सी बहू लांग्गे। मगर नें कही : सांची बताइ। गौहदरी।नें कही : सांची मानौं। सोई मगर नें दोऊ अपनी पीठि पै बैठारे औरु झट्ट जमुना जी की पल्ली पारि उतारि दीने[2]।

(२)

गौहदरी-गौहदरा म्वाँ जाइकें खूबु चरे पीए औरु सुख-चैन ते भौतु दिना म्वांई रहे। अब जमुना जी की उल्ली पारि ऊ मेंहु परि गयौ। उनने सोची। ला अब तौ अपनी जनम-भुम्मि कूँ

---

१ प्हौंचें। २ दीए।

चलनौ चहिऐं। गौहदरी नें कही : चलनौं तौ चहिऐं परि कछू व्वा 'जेठ जू' की ऊ यादि हतये[1]। व्वाके काजें बहू कहाँ ते लाओगे। गौहदरा नें कही जाकौ मीजानु तौ मैं लगाइ दुंग्गा।

गौहदरा एक खेत पै गयौ। म्वां एक बच्यरबानी सिलौ बीनि रही। व्वानें अपनौ छोरा अपनी फरिया में लपेटि कें म्वाँई एक मेंड़ पै स्वाइ[*] दीयौ। गौहदरा गयौ सो व्वा छोरा ऐ तौ म्वांई परयौ छाड़ि आयौ औरु फरिया ऐ लैकें भाजि आयौ।

गौहदरी-गौहदरा लै व्वा फरिया ऐ जमुना जी के किनारे पै आए। म्वाँ आयकें एक छोटे से करील के पेड़ ऐ बु फरिया उढ़ाइ दीनी। फिरि जमुना जी के किनारे जाइकें गौहदरी नें अवाज लगाई : 'जेठ जू हतऐं का, जेठजू !' मगरु म्वाँ बहुतु दिनाँ ते पैंड़े में बैठ्यो। व्वानें कही : हाँ हाँ हतऐं। गौहदरी नें कही : लाओ हमें फिरि पार उतारि देउ। व्वानें पूछी : मेरी बहू कहाँ ऐ। गौहदरी नें झट्ट व्वा करील मांऊँ इसारौ करि दीयौ और कही : बु बैठी ऐ। मगर नें कही : तुमें पीछें पार उतारुंगो, ला पहलें व्वाइ लै आऊँ। गौहदरी नें कही : ऐसौ मति करौ। बु हमारी भैनि-बेटी तौ बैसें लगति ऐ। हमारे सामुइँ आमत मैं सरम करैगी। व्वाइ तौ तुम पीछें लामत रहियों। पहलें हमें पार उतारि देउ। मगर नें खुसी के मारें दोऊ जने एक लहमा में पार उतारि दीये।

उनें पार करिकें बु लौट्यौ और अपनी बहू के जौंरे गयौ औरु कही : बहू ! ओरी बहू ! म्वाँ बहू होइ तौ बोलै। जबु बु न बोली तौ व्वानें रिसके मारें फरिया खैंचि चलाई। देखें तौ म्वां एकु छोटौ सौ करील कौ पेडु। औरु कछू ई न। अब मगर नें सोची : भाई मोते तौ दगा है गई। अब दोऊन पै ते जौ बदल्यौ न लै लूँ तौ मेरौ नामु मगरु नाएँ।

(३)

अब मगर नें कहा कामु कर्यौ कि जहाँ बे दोऊ पानी पीवे आयौ करत काए म्वां एकु पीपर कौ पेडु ठाड़ौ ओ। सो बु व्वा पीपर के नीचें आइकें दुबकि गयौ।

---

१ हति+ऐ
* सुला दिया।

संजा की छाप[1] बे दोऊ पानी पीबे आए। गौहदरा नें कै तौ अपनौं अगिलौ पांउ बढ़ाइ कें पानी में धरयौ, सोई मगर नें गम्म व्याकौ पाँउ पकरि लीयौ। गौहदरा नें मन में सोची : भाई अब कहा करयौ जाय। कछू सोचि-समझि कें व्यानें कही : अरे मगर तू पागल भयौ ऐ। मेरौ पांउ तौ जि रह्यौ। तैनें तौ पीपर की जर पकरि राखी ऐ। सोई मगर नें व्याकौ पाँउ तौ दीयौ छोड़ि औरु पीपर की जर पकरि लीनी। सोई गौहदुआ कूदि कें बाहिर। औरु व्यानें मगर ते कही : अरे गौंहजे हम तेरे हाथ के नाएँ। पाँउ तौ मेरौ पहलें ई ओ। अब तैनें पीपर की जर पकरि लई ऐ। जाई ऐ पकरें बैठ्यौ रहियौ जौ भलौ आदिमी होय तौ। मगरु खून कौ सौ घूँटु पीकें रहि गयौ। अब गौहदरी गौहदरान नें व्या जगै ऐ छोड़िकें दूसरी जगै पानी पीवौ सुरू करि दीयौ।

× × ×

एक दिना मगर नें कहा कामु करयौ कि खिचिरि खिचिरि कें उनकी भाटि में पहुँचि गयौ।

गोहदरी-गौहदरा जब चरि के लौटे तौ उननें लखीचनि देखी। गौहदरी नें कही : अरे आजु कहूँ भाटि में ई आइ मरयौ का ? गौहदरा नें कही : अब्हाल पतौ चलतु ऐ। व्यानें सोई अवाज मारी : 'ओरे हमारे माटी के घर ! ओरे हमारे माटी के घर !!' परि कोई ज्वाबु न आयौ। अब गौहदरा नें कही : भाई आजु तौ दारि में कारौ मालिम परतु ऐ। और नईं रोजु हमारौ मांटी कौ घर बोल्यौ करतो, आजु चौं नांइ बोलतु। जि बात मगर नें सुनि लई। व्यानें अपने मन में सोची : रोजु जाकौ माटी कौ घरु जरूर बोल्यौ करतु होइगौ। आजु मेरे मारें नाँय बोलतु। सोई व्यानें अवाज मारी : 'हो हो हो'। गौहदरा नें कही : हमें तौ पहलें ई खबर ई कि आजु जा भाटि में सुसर जी आइ बैठे ऐं। तू जामें परयौ रह। हम तौ अलग भाटि खोदि लिंगे। कहूँ माँटी के घर बोल्यौ नाँय करत।

---

१ छाक = समय

मगरु घोड़ा सौ नवाएँ रहि गयौ। बु निकरि कें फिरि जमुना जी में ई पहुँचि गयौ।

× × ×

अब इक दिना मर्यौ सौ बनिकें रेतिया में आइ पर्यौ।

गौहदरी-गौहदरा चरि पी कें आए। उननें बु पर्यौ देख्यौ। गौहदरा नें कही : अरे जि तौ मर्यौ नाँए दीसतु। गौहदरी नें पूछी। 'चौं'। ब्वान कही : मरे मरे आदिमी तौ पादौ करत ऐं। जितौ पादतुई नाँए।

मगर नें सोची : जौ मैं न पादुंगो तौ जे मेरे जौरें ऊ न आंगे। सोई ब्वानें एकु भर्का मार्यौ। सोई गौहदरा कूदि कें अलग। और गौहदरा नें कही : अरे गमार हमें तौ पहलें ई खबरि ई कि तू बनक बनाइ कें पर्यौ ऐ। और नई कहूँ मरे मरे आदिमी पादौ नाँएँ करत।

हारि कें झख मारि कें मगरु अपनी जमुना में जाइ पर्यौ। औरु ब्वापै गौहदरा-गौहदरीन पै ते बल्दौ न लीयौ गयौ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन।

२. गीदड़ की चालाकी



एक ऊंट और गीदड़ की यारई। सो एक दिन[1] ऊंट एक बारी में जाय लग्यौ। सो दूसरे दिन वाके यार गीदड़ कूँ खबरि परी। सो गीदरा बोल्यौ : यार यार! तू कहाँ कूँ जाय[2] करै? सो ऊँट बोल्यौ : कै हमतौ चरिबे जाय करैं। बु बोल्यौ : कहाँ चरौ करै? ऊँट बोल्यौ : जमुना पार। सो बु बोल्यौ : हमहूँ चलेंगे[3]। सो वे दोऊ चरिबे चले।

जब बीच में जमुना परी का सो गीदरा बोल्यौ : भाई मोइ पीठ पै बैठा[4] लै चल। सो ऊंट बैठा[4] लै गयौ। जब बारी आई का जब उतार दियौ। सो गीदड़ एक फूँट में झिकि गयौ, ऊँट नाँय झिकौ। सो गीदरा बोलौ : भाई मेरी हुक हुकी कौ बखत आइ गयौ। सो मैं तौ हुक हुकी लगाऊँ। सो ऊँट बोल्यौ : भाई मोइ एक फूँट और खा[5] लिंदै[6]। सो वानें एक फूँट खाइ लियौ। फिर गीदरा बोल्यौ : अब मेरी बोली कौ बखतु आइ गयौ। तौ ऊँट बोलौ : भाई एक फूँट और खा[5] लिंदै[6]। तौ गीदरा न मान्यौ। सो बारी बारे की खाट के नीचें जाय कैं हुकहुकी लगाई सो बारी बारौ जाग परौ सो बारी माऊँ भग्यौ। माँ ऊँट चरि रह्यौ। सो ऊँट मारत मारत अधमरौ कर दीयौ। ऊँट भग्यौ चल्यौ गयौ। और परेते गीदरा भग्यौ चलौ आइ रह्यौ। सो वाकौ यार नदी पै ठाड़ौ मिलि गयौ। सो गीदरा बोल्यौ कै चल यार घर कूँ चलैं। सो गीदरा बोल्यौ कै यार मोइ लै पीठ पै बैठा[7] लै। सो बैठाइ लीयौ। बीच धार में जाइकैं ऊँट बोल्यौ कि मेरी लुटलुटी कौ बखत आय रह्यौ है। सो गीदड़ बोल्यौ कै भाई मर जाऊँगो। ऊँट न मान्यौ। लुटलुटी लेंत खँम गीदर बह्यौ चलौ गयौ।

फिर वाये एक गहा मिलौ। सो बु गीदर बोल्यौ कै भाई मोइ निकार लै। सो वानें निकार लीयौ। वाकी और वाकी यारई

---

१ दिनां
२ जायौ
३ चलिंगे
४ बैठाइ
५ खाइ
६ लिनदै, लिंदै
७ बैठाइ

जुर गई। सो एक दिना गद्दा नें गीदर ते कही कै भाई आज तोइ हमारी मा बोल रही है । सो गीदर खूब पके पके तीन चार बेर लै गयौ।

सो गीदरा नें जाकें[1] वाकी मां ते राम-राम करी। सो वानें राम-राम लै लई। सो गीदरा नें वाकूँ बेर दिये । सो बाकी मा खाकें[2] खुश है गई। सो बु गदा ते बोली कै बेटा ! याके बेर इतेक मीठे हैं सो याकौ करेजा कितेक मीठौ होगौ[3] !

सो ब्वानें अपने यार ते कही कि चौं यार तेरे बेर इतेक मीठे हैं सो तेरौ करेजा कितनौ मीठौ होगौ। सो गीदरा बोल्यौ कै भाई यानें मारे ।

सो वानें कहा काम करौ कि यों कह दई कि ई जबते चौं नाँय कही। अब तौ मैं अपने करेजा कूँ झार पै सुखाइ आयौ ऊँ। ई जब ते कह दें तौ तौ नाँय सुकातौ। सो फिर गीदरा बोल्यौ कै मैं लै आऊँ । सो घर में ते निकरिकें कहे कि कहूँ करेजा झारन पै नाँय सूखें। तौ गद्दा बोल्यौ कै देखौ जाइगौ।

सो फिर दूसरे दिनाँ आयौ का पानी पीबे सो गद्दा नें वाकी टांग पकर लई सो गीदरा बोल्यौ कै वर की जर पकर राखी है। सो टाँग तौ छोड़ि दयी और वर की जर पकर लई । सो कहे कि सुसर टाँग पकर लै। तौ फिर गद्दा बोल्यौ कै देखौ जाइगौ।

सो फिर एक दिना वाके घर में गद्दा जाइ घुसौ। सो गीदरा चरिकें आयौ। वायै वाकी घिसरामन दीख गई। सो कहे कि घर राम राम ! सो बोल्यौ कै और दिनाँ तौ हमारौ घर बोलैओ आज क्यों ना बोलै। सो गद्दा बोल्यौ : राम राम ! तौ फिर गीदर बोल्यौ कै कहूँ घर बोलै नाइ करें।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल, बिलौठी : ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

— —

१ जाइकें
२ खाइकें
३ होइगौ

३. हूमेन्देउ



काऊ गाम में एक वामन रैश्रो। बु बड़ौ गरीब श्रो। वाकौ एक दस-बारह बरस कौ छोरा श्रो श्रौर वाकी बहू ई। जब बु बामन कछू कमावै नाँश्रौ तौ बाकी बहू वाते बड़ी लड़ौ करैई श्रौर यों कहौ करैई कै "क्योंजी तुम मधेसिया से घर में परे रहौ कछू कमाश्रौ-धमाश्रौ नाँश्रौ, या घर कौ काम कैसें चलैगौ? परि वा वामन के एकउ नाँ लगैइ। एक दिना बहू की बहुत कहा सुनी यै बु एक गडुश्रा हाथ में लै घर ते चल दियौ श्रौर चल्तई चल्तई एक बनी में जाइ पहुँच्यौ[१]। माँ बाइ बड़ी भूक लगी श्रौर बु अपने मन में सोचन लगौ कै 'सारे बहू नें लड़िकैं निकारई दियौ पर श्रब खायगौ कहा।' पर तौऊ बिचारौ हिम्मत करिकें श्रागें बनी में चल्त गयौ तौ माँ कहा देखै कि एक नाहर की मढ़ी ऐ श्रौर व्वा मढ़ी में एक बड़ी सी थारी खीर की सिरिबे* कूँ धरिऐ। नाहर बजार बूरौ लैबे चलौ गयौ श्रो। जाय देखिकें बु बाम्हन बड़ौ मगन भयौ श्रौर जैसें बाम्हन खीरै झट्टई झट्ट खाइ बैसैंई व्वानें बेगई बेग खूब झिककें खीर खाई श्रौर बची कुची ए लोटा में भरि लायौ। घर श्रायकें अपनी बहू तें बोल्यौ कि लै मैं तेरे काजें खीर लै श्रायौ ऊँ ग्याये तू खाले[२] श्रौर छोरायें खबादै[३]। श्रब तौ बु वइयर बानीनु बड़ी खुसी भई श्रौर अपने मालिक ते कहन लगी देखौ जी कल्लि ते या छोरायै संग लै जायौ करौ श्रौर मेरे काजें खीर लोटा में भर लाश्रौ करौ।

श्रब ऐसैंई जब दूसरौ दिनां भयौ तौ व्वा वामनी नें वु वामन फिर गडुश्रा लेकें भेजि दियौ। वामन फिर मढ़ी में जाइकें पहुँच्यौ तौ माँ थारी में खीर सिरी देखी श्रौर अपने छोरा ते बोल्यौ: 'लगिजा भइया' श्रब तौ बु बामन श्रौर छोरा दोऊ खीरै खाइबे में लग गये, पर मौकौ ऐसौ श्राइकें पर्‌यौ कि नाहर बूरौ लैकें लौटि

१ पहौंच्यौं   २ खाइलें
३ खबाइदें
* ठंडी होने के लिये।

कें आइ रह्यौ। जैसेई वा बामन की निगाह[1] परी का कै नाहर आय रह्यौ यै तौ बु अपने बेटा ते बोल्यौ कै 'कुठीला में घुस चलौ' पास में ई बु कुठीला धरौ सो डर के मारें वे दोऊ वा में घुसि गये। इतने में ई बु नाहर वाँ[2] आन[3] पहुँच्यौ और अपनी थारी में बूरौ डार डार कें खामन लग्यौ। जैसैंई बु नाहर खामन लगौ का सो बे दोई बाप बेटा वा कुठीला में बंद हतेइये,तौ बेटा वाके मोघरे में है कें उझकन लग्यौ और नाहरै खीर खामत देखिकें बोल्यौ 'हमें न देउगे का ?' नाहर ने जब सुनी कै 'हमें न देउगे का' सो वानें जानी कै सारे घर में 'हमेंन्देउ' आय गयौ ऐ और बु घरते धर भज्यौ और भाजतौ गयौ। वाके या कौतुक ऐ एक पेड़ पै बैठ्यौ बंदर देखि रह्यौ ओ। ब्वानें पूछी : 'कहाँ जाइ रह्यौ ऐ'। नाहर नें कही भइया घर में 'हमन्देउ' आय गयौ ऐ और मैं खीर खामत में भाज कें आयौऊँ। बानें कही सुसर, तू बड़ौ पोच ऐ, चल हम चलें तेरे संग। हमन्देउ के मंतुर तौ हम्पै हतें। तू खीर खइयौ और मैं मंतुर पढुंग्गो। अब बु बंदर और नाहर दोउ चल दये और मढ़ी में आइ कें पहुँचे[4]। बन्दर तौ मंतर पढ़िबे कूँ तैयार भयौ और नाहर खीर खाइबे कूँ। पर नाहर जैसें बैठौ काऔ बाकी पूँछ वा कुठीला के मौघरे में चली गई जामें बामन और बाकौ छोरा दुबकि रहे ? वा छोरा नें जैसेंई फेर बु नाहर खीर खामत देख्यौ तौ भीतर तें वा नाहर की पूँछ कसि कें पकरि लई और अपने बाप ते बोल्यौ : 'काका खेंच' अब कहाओ बन्दर तौ डरके मारें भाजि गयौ और नाहर ऊ जैसें तैसें अपनी पूँछ छुड़ाय कैं भाज्यौ और भाजतई भाजत दम सड़ाके में वा पेड़ के नीचें आय पहुँच्यौ[5] जामें पहलें[6] बंदर बैठ्यौ कहाओ। अब ब्वा नाहर नें व्वा बन्दर ते कही कि 'तू तौ भातई बड़ी सेखी मारि रह्यौ ओ कै मैं मंतुर पढ़ि दुंग्गो अब च्यों ना पढ़ै' बंदर बोल्यौ : 'भइया मो पै तौ हमन्देउ के मंतुर ए महाँ तौ 'काका खेंचि' निकरि आई।

[सं० क० सत्यवती जैतली बरसाना, (मथुरा)

१ निघा   २ म्वाँ
३ आइ   ४ प्हौंचे
५ प्हौंच्यौ   ६ पैहले

४. मोरनी बेटी



सात राजा ऐ। सातौन के ब्याह है गए। छैन के ते औलादि हतीं। सातए कें कोई औलादि नाँई। छै रानीन के तौ बड़े आदर। सातई बिचारी काग-बिड़ारनी करि दई। काग-बिड़ारिबे के बदले में ब्वाइ सेर भर जौ मिल्यौ करें। सातौ राजा बजार कूँ निकरे। अपनी अपनी रानीन ते पूछ्यौ तुम्हारे काजें कहा लामें। एक दिनाँ सातए राजा नें अपनी रानी ते पूछी : कछू तुहू मगावैगी। ब्वानें कही राजा मोइ कहा बूझत औ ! परि जौ तुम्हारे मन में ई लाइबे की ऐ तौ एकु मोर कौ बच्चा लै अइयों। राजा नें मोर कौ बच्चा लाइ दीयौ। बे छैऔ तौ अपने बच्चन नें खिलाऔ करें और बु सातईं ब्वा मोर के बच्चा तेई अपनौ मनु बहलाइबौ करै। छैऔ द्यौरानी-जिठानी ब्वाइ चैंकाऔ‡ करें। बच्चा मोर कौ बड़ौ हैगौ[1]। ब्वानें एक दिनाँ अपने राजा ते कही : देखौ जितौ मोरनी निकरी। अब मेरी जा बेटी की सगाई करि आऔ। राजा जाइकें एक राजा के ञ्याँ जाइकें सगाई करि आयौ। एक सर्ति ठहरी[2] कि राजकुमारु बारौठी ते पहिलें हमारी रानी ते मिलैगौ।

बड़ी जोर-सोर ते बरात आई औरु छोरा महलन में आयौ। रानी नें ब्वा लड़का ते कही कि मेरी छोरी मोरनी ऐ। बु तुमैं ग्रहन करनी परैगी। ब्याह बरात हैकें बरात बिदा भई। मोरनी ऐ डोला में बैठारि कें लिवाइ गए। राजा नें चुप्पु चापु जाइ कें सात तारेन भीतर बैठारि दई। न काऊ ऐ देखन दे औरु न भारन दे। राति कूँ दोऊ भऊ‡ दुल्हा बतराऔ करें। सबु जा बात कौ बुरौ मानें।

राजा के छोटे भैया कौ ब्याहु आयौ।

---

१ गऔ २ ठैरी

‡ जलाना, चिढ़ाना।

‡ बहू।

(२)

रानीन नें कही कि हम सबु तौ अपने अपने बट कौ कामु करि चुकीं। अब तू अपने बट की लीपा-पोती अपनी भऊ पै करवाय। व्वानें कही : मैं सबु कामु करि दुंगी। गोबरु-माटी सबु तैयार है जाँय। राति कूँ बु उठी औरु अपनी पंखन ते व्वानें महलु खूबु झूकेदार लीपि दीयौ। फिरि व्वा राजा नें कही : मैं तौ बरात कूँ जांगो तू ज्याँ कैसें रहेगी : व्वानें कही : मेरे काजें दाख-चिरौंजी धरि जाऔ औरु एक कसिंया पानी धरि जाऔ। राजा नें ऐसौई कर्यौ और सात तारेन में व्वाइ बंद करि गयौ।

रोजु बु दाख-चिरौंजी खाइ ले औरु पानी पीले। एक दिनाँ व्वाकी पंखन ते कसिंया लुढ़कि गई और पानी फैलि गौ। कहूँ कोई रस्ता न। एक धमारौ दीस्यौ। व्वाई में हैकें, लै कसिंया ऐ बु समद्र किनारे उड़ि गई। पीऔ पानी। कसिंया भरी। परि जब व्वाइ उठावै सोई व्वाकौ पानी औंधि जाय।

एक पेड़ के नीचें गौरा-पारबती और महादेव जी बैठे ए। पारबती जी नें कही कि जि कैसी चिरैया ऐ। जापै पानी नाँय उठायौ जांतु। महादेवजी नें कही : रहन देउ। तुमैं ऐसी ई बात सूझ्यौ करति ऐं। जि तौ संसारु ऐ। पारबती नें जब भौतु कही सोई सिवजी नें अपनी बीच की उँगरिया काटि कें व्वाके मुँह में निचोरि दई। बु झट्ट फूलनदे रानी बनि गई। सातौ तारे अपने आपु खुलि गये। बु जातए महल में जाइकें बैठि गई।

बरात लौटि कें आई। राजा नें सोची : तारे कौनें खोलि दीए। फिरि बु महलन में गयौ। मोरनी के ई प्रभाउ ते म्वां बाके पीहर में व्वाकी माँ के ऊँ गरभु रहि गयौ। राजा देखैं तौ पलंग पै रानी पौढ़ि रही। राजा नें जगाई। व्वानें सबु बात कहि दई। पीहर में खबरि परि गई। राजा बहौत खुस भयौ। मोरनी की मा कैं ऊँ बेटा है गयौ।

[सं० क० चंद्रभान राघे, राघे, खोहबन : संपादक के संग्रह से]

५. न्यौरा भइया



एक राजा के सात लड़का[1] ये[2]। सो सातौंन कौ व्याहु है गयौ। सो छैन के तौ छोरा भये और एक कें न्यौरा भयौ।

तौ छैऊ कुमर घोड़ा पै चढ़िकें शिकार खेलिबे गये। तौ न्यौरा बोल्यौ : अम्मा ! अम्मा !! में ऊँ शिकार खेलिबे जाऊँगो[3]। तौ बाकी माता बोली : कै तोय को लै जायगौ। न्यौरा बोल्यौ : मैं इनके पीछें पीछें चल्यौ जाऊँगो[3]। वाकी अम्मा बोली कि बेटा ! जा।

तौ चलत चलत आम कौ पेड़ मिलौ। तौ बे छैऊ कुमर बोले कि हमारौ न्यौरा भईया हों तौ आम तोरतौ। न्यौरा बोल्यौ : भईया ! ठाड़े रहियौ। मैं आय रह्यौ ऊँ। तौ न्यौरा आम के पेड़ पै चढ़िकें आम तोरिबे लग्यौ तौ पके पके आम खावै और कच्चे-कच्चे बिनकूँ तोरै। सो कुमर बोले कै सुसर नीचें उतर। याई माटी में मारि कें गाढ़ि दिंगे। सो बु नीचें उतरि आयौ। तौ फिर चलिबे लगे।

सो चलत चलत जामुन कौ पेड़ मिल्यौ। तौ छैऔ कुमर बोले कै न्यौरा भइया हौंतौ तौ जामुन तोरतौ। न्यौरा बोल्यौ : ठाड़े रहियौ मैं आय रह्यौ ऊँ। तौ न्यौरा जामुन के पेड़ पै चढि गयौ। सो पकी पकी जामुन आप खावै और कच्ची-कच्ची बिनकूँ डारै। बे छैऊ कुमर बोले कि आ सुसर नीचें उतर तोय यहीं[4] मार चलें। तौ मारत मारत अधमरौ करि दियौ। सो परे तै एक कुम्हार आय रह्यो। सो वायै अपने घरकूँ लैगौ[5]। सो बायै खूब खबायौ करै। सो कुम्हार के नें कही कि न्यौरा, न्यौरा ! या छोरा यै निबटाला[6]। सो बु गयौ। तौ छोरा ते बोल्यो : पेसाब करै तौ निभटै मत। निबटै तौ पेसाब मति करै। सो छोरा उल्टौ अपने घर कूँ बगदि

---

१ लरिका २ ए

३ जांग्गो ४ जहीं

५ गग्रौ ६ निभटाइ

गयौ। सो फिर अपने बाप ते बोल्यौ कि काका ई तौ कहै कि पेशाब मति करै। बानें कही : चल तौ। फिर बोल्यौ कि छोरा पेशाब करै तौ निबटै मत और निबटै तौ पेशाब मत करै। सो बा छोरा की आफत आइ गई। सो न्यौरा बोल्यौ : अच्छौ या बात कूँ बता कि तेरी माँ के रुपय्या कहाँ गढ़ रहे हैं और तेरे बाप के रुपय्या कहाँ गढ़ रहे हैं। सो बु छोरा बोल्यो कि माँ के रुपय्या तौ चाखी के कौनें में गढ़ रहे हैं और काका के रुपय्या चूले की बगल में गढ़ रहे हैं। सो वा छोरा यै निबटाय लायौ।

फिर व्वा न्यौरा नें अपने पंजेन ते सब रुपैया खोदि लिये और वे रुपय्या वानें कानी गधइया ऐ खबाइ दिये। सो परे ते वे छैऊ कुमर आय रहे। सो वे बोले : न्यौरा भईया घर कूँ चलै? सो बानें कही कै चलैं भइया। तौ कुम्हार बोल्यो : न्यौरा, कछू ले सो लै ले। बानें कही मैं तौ कानी गधैया यै लुंगो। सो कुम्हार बोल्यौ कि अच्छी सी लै जा। बु बोल्यौ : मैं तौ कानी गधैयाई यै लुँग्गो। सो दै दई।

सो वे तौ घोड़ान पै बैठे जाँय और बु गधैया पै बैठौ जाय। सो बैठौ बैठौ यों कहै कि :—

अगन लिपैयौ अम्मा, चगन लिपैयौ अम्मा !
कुम्हार के ते मौंगरी मँगैयौ अम्मा !

सो वाकी मा ने आँगन लीप राखौ और कुम्हार कौ एक डंडा धर राखौ। सो अपने घर जाके[1] वा गधैया में खूब सोटा लगाये। सो दायरी[2] खूब लीद करै। सो रुपय्यान ते आँगन भरि गयौ। सो फिर वे छैऊ कुमर बोले कि या गधैया कूँ बेचैगो। न्यौरा बोल्यौ कै बेचौंगो। सो बिन कुमरन नें बु गधैया लै लई।

सो वे वा गधैया में सोटा दैबे लगे। सो कछू न डारै। बु जानते मार दई परि कछू न निकरौ। वे बाके मांस ए बेचिबे गये, सो यों कहैं कि लेउ गधैया कौ मांसु। सो काऊ नें न लीयौ। बिनते बु न्यौरा बोल्यो कि लाओ मैं बेचिकें आऊँ। सो ये कहतौ डोलै कै लेउ कोई बकरा कौ मांसु। सो लै लियौ। बेचकें अपने घर कूँ आइ गयौ। सो रुपैया बिनकूँ दै दिये।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल : बिलौठी, ब्र० सा० मं० के संग्रह से]

---

१ जाइकें २ दारी

६. बिल्ली कौ बौहरौ



चारों यार सौखीन ए । एक यार नें पारौ मुर्गा। एक नें पारौ कुत्ता । एक यार नें पारी बिल्ली, एक यार डंड-कुश्ती करै।

एक दिनाँ के समय में मुर्गा कुत्ता ते बोल्यौ : कै हे यार कै मोकूँ बिल्ली मारने कूँ डोलै । जौ मोपै परवस्ती राखौ तौ मेरे दिन गुजरान है जाँय ।

एक दिना के समय में सबेरे की बखत मुर्गा चुगतौ डोलै यौ। सो बिल्ली नें बापै झपट करी सो मुर्गा किल्लायौ सो यार आइयो । सो कुत्ता कूँ मालिम परी सो कुत्ता नें बिल्ली घेरी । घिरतें-घिरतें कुत्ता नें सो बिल्ली जंगल कूँ चल दई। भाजते भाजते एक गैदुआ की भाटि में घुसि गई । जो बिल्लो भीतर देखै तौ गैदुआ सोइ रह्यौ है। सो गैदुआ जाग्यौ का सो बिल्ली देखी । सो गैदुआ बोल्यौ कै तू कैसें आई। जब बिल्ली बोली : मैं जेठजी ! आपके पास एक काम आई। गैदुआ बिल्ली ते बोल्यौ कि तेरौ कहा काम परौ है। सो बिल्ली बोली गैदुआ ते : तिहारौ भैया तौ घर है नां। बरात कूँ गये हैं । सो मेरे पास बहौरौ[1] आयौ। मैं उनते बोलूँ नाऊँ और तिहारे भैया बरात कूँ गए हैं। सो बहौरे यै तुम समझाइ देउ।

सो गैदुआ बाहर कूँ निकरौ। सो कुत्ता दरवज्जे पै ठाड़ौ। सो गीदरा नें बाहर कूँ मुँह कियौ। सो कुत्ता नें मोहड़ौ भर लियौ। कुत्ता बाहर कूँ ऐंचै और गीदड़ भीतर कूँ ऐंचै । ऐचतें-ऐचतें घंटा-दो घंटा है गये। एक बखत कुत्ता कौ मुँह ढीलौ परि गयौ। सो गैदुआ भीतर कूँ भागौ। सो गैदुआ बिल्ली ते बोल्यौ कि गुरू की लौंड़ी ऐसे ते लेन-देन कियौ। बोलै न बोलन दे और चुप्प-चाप ले।

सो बिल्ली की गांड़ै दो लात दई । निकर गुरू की लौंड़ी। सो बिल्ली वहाँ ते भाग्याई।

[सं० क० झम्मनलाल अग्रवाल, बिलौठी : ब्र० सा० मं० के संग्रह से]

---

१ बौहरौ

७. घेन्नी



एक घेन्नी, वो खाइवे कमाइवे चली । आगें-आगें वर पायौ । वर नें कही : घेन्नी घेन्नी ! कहाँ चली ? घेन्नी ने कही : पेट भरन खसम करन । वर नें कही तौ मोईये करलै । घेन्नी ने कह्यौ, कहा उढ़ावै, कहा बिछावै, कहा खवावै ? पत्ता उढ़ाऊँ, पत्ता बिछाऊ, गूलर खवाऊँ । हैः निपूते, तेरैं नाँय रहूँ, घेन्नी ने कही । फिर आगें चली आगें पीपर पायौ । घेन्नी घेन्नी ! कहाँ चली ? पेट भरन, खसम करन । फिर पीपर ने कही तौ मोईये करलै । कहा उढ़ावै, कहा बिछावै, कहा खवावै ? पत्ता उढ़ाऊँ, पत्ता बिछाऊँ, गूलर खवाऊँ । घेन्नी नें कही : हैः निपूते, तेरैं नाँय रहूँ । आगें आगें मोरा पायौ । वानें पूछी, घेन्नी घेन्नी ! कहाँ चली ? घेन्नी बोली : पेट भरन, खसम करन । मोर नें कही, मोईये करलै । घेन्नी नें पूछी : कहा उढ़ावै, कहा बिछावै, कहा खवावै । पँच उढ़ाऊँ, पँच बिछाऊँ, घौल चुगाऊँ । हैः निपूते, तेरैं नाँय रहूँ । आगें-आगें मूसौ पायौ । वानें पूछी : घेन्नी घेन्नी कहाँ चली ? पेट भरन, खसम करन । मोइयें करलै । घेन्नी नें पूछी : कहा उढ़ावै, कहा बिछावै, कहा खवावै ? मूसे नें कही : सौर उढ़ाऊँ, गद्दा बिछाऊँ लड्डू-पेड़ा खवाऊँ । तब घेन्नी मूसे कैं रह गई ।

मूसौ नित्य बनियाँ की दुकान मैं तें लड्डू पेड़ा लामन लग्यौ । बनियाँ नें कही--मिठाई ऐ कौन लै जाऐ । वा दिन वानें लड्डू के चपटा की ठौर पै लपटी कौ चपटा धर दियौ । मूँसौ आयौ झट्ट लपटी में गिर परयौ और मरि गयौ । दूसरे दिनाँ बनियाँ नें पूँछ पकरि के गढ़लीक में फेंकि दियौ ।

जब ग्वारियाँन नें खबर परी तौ घेन्नी ते जायकें कहन लगे : "घेन्नी घेन्नी ! तेरौ मूँसौ मरि गयौ ।" घेन्नी

बोली: है: निपूते, औ लडडू पेड़ा लैवे गयौ ऐ। ग्वारिया बोले: चल तोए दिखामैं। घेन्नी नें देखी तौ साँच माँच मूसौ मरयौ परयौ ऐ। फिर वो रोमन लगी और कहन लगी कि--

वर छोड़यौ, पीपर छोड़यौ।
हरी पंख कौ मोरा छोड़यौ॥

हाय मेरे मूसे, हाय मेरे मूसे--और,
और चाकी कौ कौर, पीसन हारी रामकौर॥

—सात—

बुझौअल की कहानियाँ



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं :—

१. बीरबल की हुस्यारी ।
२. कंजूस साहूकार ।



१. बीरबल की हुस्यारी



काऊ सहर में एकु राजा राजु करत्वो, व्याकौ एकु सलाही ओ। व्याने कहा काम कर्यौ कि एक बादशाह पै खबरि भेजी कै हमारी चारि बातन कौ म्यानौं दै दै। हम जब तोइ अकलिवर जानिंगे। एक तौ जि है कै असल ते कम असल, दूसरी कम असल ते असल, तीसरे सराइ कौ कुत्ता बे मुरव्वत, चौथे समाज कौ बंदर बे सोचे समझे काम करै।

बादशाह नें अपने बजीर तें कही। बजीर बोल्यौ : महाराज तुम कोई चिन्ता मति करौ मैं इन चारौं बातन कौ उत्तर दै दुंगो। परि जि बात बताऔ कैं जि उत्तरु तुमैं दऊँ कै व्वा राजा कूं दऊँ। बादशाह बोल्यौ कै भाई व्वाई राजायै उत्तर दैनों चहिये। बजीर बोल्यौ तौ साब तोकूँ जितने चहियें उतने रुपैया दैने परिंगे। बादशाह बोल्यौ जितने रुपइया चहियें बितने रुपइया लै जाऔ। बजीर कछू रुपइया लैकें चल्यौ और ज्या शहर कौ बु राजा ओ व्वाई शहर कूँ गयौ।

म्याँ जाइकें व्वानें एक दुकान खोली और सब ते सस्ती चीज दैन लगे। नफा-नुकसान की तौ व्वाइ कोई परवा हती नाईं। खूब सस्तो माल बेचै और गाहक दौरि दौरि कैं व्वाकी दुकान पै आमें। बात जि है कै थोरे ई दिनान में बु व्वा शहर में नामी साहूकाल है गयौ। एक व्वा शहर के साहूकाल नें अपनी लड़िकी कौ व्याहु व्वाके संग में करयो।

व्वा शहर कौ कोतवाल रोजु व्वा की दुकान पै आयौ करै। औरु बु व्वा कोतवाल कूँ रोज दस-पंद्रह रुपइया भेट पान-फूल कूँ दीयौ करै। एक तरह ते बु कोतवालु व्वाकौ घर कौ सो आदमी बनि गयौ। एक दिना बजीर अपने मन में बोल्य कै भाई हम ज्या काम काजें म्या आये हते बु तौ करौ क [illegible] ना। व्वानें कहा कामु कर्यौ कै एक दिना एक कलींदो तनक चीरि कें और एक लत्ता में बांधि कै घर धर दीयौ और सुनार कैं ते कछू जेवरु द्वै

दिना कूँ भारे पै लै आयो । आइकें अपनी सेठानी ते बोल्यौ : देखि तोते एक बात कहूँ तू काऊ ते कहियौ मती । बु बोल्यी : मैं न कहूँगी । बु बोल्यौ : देखि मैं ज्या राजा की बेटी कौ मूँड़ काटि कें लै आयौ ऊँ और व्वाई के जि जेबर यै । व्वानें बु जेवर सब दै दीयौ । और आपु दुकान पै आइ गयौ । व्वाई बखत म्वां कोतवाल आइ गयौ । व्वानें कहा कामु करयौ कै कोतवाल कूँ दुकान पै बैठारि कें आपु लै लोटा निभटिवे चल्यौ गयौ । सेठानी नें देखिकें कै बु तौ निभटिवें चल्यौ गयौ अब मैं कोतवाल ते कह दऊँ । सेठानी नें कोतवाल कूँ भीतर बुलाइकें कही : आजु बड़ौ जौंहरु भयौ यै । ज्या सेठ नें राजा की बेटी की नारि काटि कें घर में धरि लई यै और व्वाके सब जेवर कूँ लै आयौ यै । कोतवाल कूँ सब जेवर दिखायौ और लत्ता में बँध्यौ राजा की बेटी कौ सिर दिखायौ ।

राजा की एक रंडी ई । व्वाकौ जि नैमो कै जो लाख टका सौने कौ देत्वो बु नगारे में चोब लगाइ कें व्वाके जौरें जात्वो । व्वानें कहा कामु करयौ कै निभटिबे के मूंड़े नगाड़े में बिना चोब मारे रंडी के मकान में चल्यौ गयौ । रंडी सिंगार कर रही । व्वाकौ पलंग बिछि रह्यो ओ बु व्वापै जाइ सोयौ । व्वाकूँ नींद आइ गई । सोइ गयौ । रंडी न्हाइ-धोइ कें व्वाके ढिंग आई तौ बु सोइ गयौ । रंडी नें व्वाके पाम कौ अँगूठा पकरि कें खेंच्यौ और बु जग्यौ । जग कें रंडी में पान-लात कुर्रा मारे और कुर्रा मारि कें अपनी सवा लाख रुपइया की सौने की छाप पलंग पै डारि कैं चल्यौ गयौ । रंडी बोली : देखौ जि मोते बोल्यौ ना चाल्यौ ना सेंति मेंति मोइ इतनौ माल दै गयौ । इतमें जब बु अपने घर पहुंच्यौ तौ कोतवाल नें जाँत ई हतकड़ी डार दई और पकरि कें राजा के पास लै गयौ । कोतवाल नें राजा कूँ सबु हाल सुनायौ । राजा नें हुकमु दीयौ कै याकूँ फाँसी दै देउ ।

व्वाकूँ फाँसी दैवे जब चले तौ रंडी की बु निगाह परयौ । रंडी बोली : याकूँ फाँसी न होगी, छोड़ि देउ । रंडी राजा के जौरें गई और बोली : राजा साब ज्या आदिमी कूँ फाँसी मति देउ । याइ तौ छुड़वाइ देउ । राजा नें बु छुड़वाइ दीयौ ।

अब वु बजीर राजा ते बोल्यो : राजा साब मैं फलाँ शहर के बादशाह कौ बजीर ऊँ । आपुकी चारयौ बातों कौ म्यान्यौ दैबे आयौ सो तुमें दै चुक्यौ। राजा बोल्यौ : मेरी समझ में अबई म्यानों नांइ आयौ मोकूँ समझाइ। बजीर बोल्यौ : देखौ राजा साब कै जि सेठानी मेरी स्त्री है और याते मैंने झूँठी बात सांची करिकें बताई तौ यानें पुलिस ते कहिकें पकरवायौ। सो जितौ असल ते कम असल भई। और आपकी रंडी नें मैं फांसी पै ते बचायौ जि कम असल ते असल भई और देखौ जि कोतवाल रोजु मेरी दुकान पै जात्वो। याकूँ दस पंद्रह रुपा रोजु देत्वो। यानें मेरी हतकड़ी डारी, ज्याइ शर्म न लगी सो जि सराइ कौ कुत्ता पे और आपनें बिना बूँझै फांसी कौ हुकम दयौ आप समाज के बंदर हैं। अब मैं जातूँ।

[सं० क० कन्हैयालाल, अकबरपुर, ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

२. कंजूस-साहूकार



एक सहर में एक गरीब बामन रहतु ओ। बु खूबु पढ़यौ-लिख्यौ ओ। परि ब्वाकी अच्छी तरह गुजर नाँइ हौंती। एक दिना ब्वानें एक पुरजा लिख्यौ। ब्वामें कहा लिख्यौ कै :

पिता लोभी, माँ ममता की।
हौंते की बहिन, अनहौंते कौ भइया।
पइसा पास की जोरू साथ की।
झुन-झुनी सहरु।
सोवै सो खोवै, जागै सो पावै।

ब्वा पुरजा ऐ लैकें बु बजार कूँ गयौ। और सबरे बजार में फिर्यौ परि पुरजा काऊ नें न लीयौ। बु बामन अपने मन में भारी हिरास भयौ।

एक साहूकार कौ लरिका अपने मन में सोच्यौ कै देखैं तौ सही या परचा में कहा लिखि रह्यौ है। सो ज्या के पच्चीस रुपइया माँगि रह्यौ है। ब्वानें बु बामनु बुलायौ। और पच्चीस रुपइया देकें बु पुरजा लै लियौ। या तमाशे कूँ सामीं की दुकान बारौ देखि रह्यौ ओ। और जब ब्वाकौ बापु साहूकार बच्चा आयौ तौ ब्वानें साहूकार बच्चा ते ब्वा पुरजा की बात कह दई कै तेरे छोरा नें एक नेंकसे टूंक कागज के पच्चीस रुपइया दिये हैं। साहूकार कंजूस हत्वी ओ। ब्वानें ज्याई बात पै एक कागज पै लिखि कें दरवज्जे पै टाँगि दीयौ कै आजु ते हमारे घर ते तुम्हारौ देश-निकारौ है। तुम घर कूँ छोड़ि कें कहीं जाओ। छोरा नें बु पढ़यौ और पढ़तई खैम म्वांते चलिवे लग्यौ। ब्वाकी मा देखि रही। बु बोली : बेटा कैसें द्वार पै ई ते बगदि गयौ। लरिका बोल्यौ कै मां पिता नें मेरौ देश निकारौ दै दियौ ऐ अब मैं घर में नाँइ घुस् सकतु। बु बोली कै बेटा नेंक ठहरि जा मैं घर है आऊँ। बु घर में गई और चार लड्डू लाई और चारौंन में चार लाल भीतर उसिं दिये। लाइकें ब्वाकू दै दिये।

लरिका नें पुरजा खोल्यौ और पढ्यौ । बोल्यौ : कै दो बात तो साँची भईं : पिता लोभी और मा ममता की । अब आगें चल्यौ ।

(२)

चलत चलत अपनी बहन के न्यां पहुँच्यौ और ज्या बाग में बु पहलें डटतो वाही में पहुँच्यौ । और मालिन ते बोल्यौ कै मेरी बहन चम्पा पै खबरि करि दै कै तेरौ भैया आयौ है । मालिनि बोली कै मैं तौ नाहिं जाऊँ ब्वाकौ भैया तौ बड़े ठाट-बाट ते आयौ करत्वो । बाके संग में फौज पलटन घोड़ा, पालकी बड़ी चीज आमतीं । बु बोल्यौ कै तू जा तौ सही । मेरौ नाम लै दीजो । बु मालिनि गई और ब्वा चंपा ते बोली के तेरा भइया आयौ ऐ । और तू बुलाई ऐ और भूकौ है । ब्वाकूँ रोटी लै चलि । इतनी सुनिकें चम्पा बोली कै मालिन आजु मोते हटोरियाई करिबे आई है । बु ऐसे भेष ते विपत्ति परे पै ऊ न आवैगौ । कोई और होगौ । भूखौ है तौ लै रोटी लै जा । ब्वानें रोटीन कूँई तू भेजी है ।

मालिनी ब्वाकी रोटी लैकें गई और बोली कि लै रोटी दै घाली हैं । बु नांइ आई । ब्वानें तौ न्यौं कही कि मेरौ भइया विपति परे पैऊ ऐसे भेष न आवैगौ । ब्वानें वे रोटी लै लईं । और एक पेड़ के नीचें गड्ढौ खोदि कें गाढ़ि दईं और म्वांते चलि दीयौ । गैल में पुरजा निकार्यो और पढ्यौ तौ बोल्यौ कै तीन बात तौ बामन की सांची भईं । पिता लोभी, मा ममता की, होंते की बहन, अनहोंते कौ भइया जौ आजु मेरे पास धन-दौलत और फौज-पलटन होंती तौ बहन मिलिबे कूँ आमतीं ।

(३)

आगें चल्यौ तो अपनी सुसरारि में पहुँच्यौ । दिन मुँदि गयौ । भूकौ-प्यासौ बड़े सोच विचार में परयौ । जब कहूँ ठिकानौ न मिल्यौ तौ एक भरभूजा की दुकान पै सोइ गयौ । भूक में आँख फौनें लगै । इतने में शहर-कोतवाल पहरौ देतु आयौ । ब्वापै एक छोटी सी गठरिया ई । कोतवाल नें साहूकार बच्चे से कही कै : कौन सोता है ? साहूकार कौ लरिका बोल्यौ कै : साव मैं एक

मुसाफिर रस्तागीर हूँ। मोकूँ राति है गई सो न्याँ सोइ गयौ। कोतवाल बोल्यौ कै : काऊ की दुकान पै सोइबौ कौनें बतायौ है। जौ दुकान में चोरी है गई तौ तुम पुकारे जाग्रौगे। परि खैर! अब तुम हमारे साथ चलौ। हमारी गठरिया ले चलौ तुमें मजूरी दिंगे। और मजूरी एक धेला दिंगे। जौ हम भूलि जाँय तो दिन दूनी रात चौगुनी करिके लै लेना। झट्ट बुह चलि दीयौ। और जि बात एक कागद पै लिखवाइ लई।

लैकें एक अट्टा पै चढ्यौ। पीछें पीछें बु नौकरु चढ्यौ। नौंकर नें पहिचानि लियौ कै भाई जि अट्टा तौ खास मेरी सुसरारि कौ है। ब्वानें कहा काम कर्यौ कै लत्ता ते मुँह ढकि लयौ—कै कहूँ मेरी औरत मोय पहिचानि न लेय। नहीं मेरी बड़ी बुरी गति करवावैगी।

कोयवाल नें झीना में ते पोटरी लैकें व्वाते कही कै अब तुम जाग्रौ। बु साहूकार कौ लरिका झीना में ही सिढ़ीन पै सोइ गयौ। बु कोतवाल ऊपर पहुँच्यौ तौ साहूकार बच्ची व्वा पै बड़ी नाराज भई। बोली कै तुम इतने अबेरे च्यों आये। कहाँ देर करी। हम पैंड़ौ देखत देखत भारी हैरान है गईं। फिर दोनों में मुहब्बत की बात हौंन लगीं। साहूकार जादी बोली कै पान क्यों नहीं लाये। कोतवाल साहब बोले कहा बताऊँ उलाइत में भूलि आयौ। परि मैं एक नौंकर संग लायौ ऊँ। बु न गयौ होइ तौ मँगाऊँ।

कोतवाल उलाइतौ सौ झीना में आयौ और बोल्यौ कै ओ नौंकर के गयौ कै है। नौंकर बोल्यौ : सरकार मोय ओंग आइ गई सो न्याँ सिढ़ीन पै ई सोइ गयौ। अब ज्याइ रह्यौ ऊँ। कोतवाल बोल्यौ जइयौ मति अभी ठहरियो हमें कामु ऐ। साहूकार बच्चा बोल्यौ कै कहूँ खबरि तौ नाँइ परि गई। आजु जानि बचैना। कोत-वाल बोल्यौ कै नौंकर लै पइसा लै और बजार ते दुए पान लगवाइ ला। बु बिचारौ गयौ और पान लायौ और पान दैकें ग्वांते चलि दियौ। दिन निकरतई झुनझुनी शहर में आयौ। पुरजा निकारि कें पढ़न लग्यौ। बोल्यौ कै चारि बात तौ साँची भईं। पिता लोभी, मा ममता की, हौंते की बहन, अनौंहते कौ भैया, पइसा पास कौ.

जोड़ू साथ की : अब झुनझुनी सहर में सोवै सो खोवै और जागै सो पावै।

सराय में जाइकें भटियारी के आ रह्यौ। झुनझुनी सहर कौ जि हालु ओ कि म्वांकी राजा की बेटी के पेट में ते सरपु निकरतो और रोज नयौ मुसाफिर वाके पास भेजौ जातौ। व्वा कूँ बु सरपु खाइ जांतो। एक दिनाँ व्वाकूँ पकरि कें लै गये और राजा की लड़की के पास में राखौ। व्वानें बु पुरजा देख्यौ और पढ़्यौ। तौ पढ़िकें नाईं राति भर जगिबे कौ इरादौ करि लीयौ। तलवार हात में लै लई और पलंग पै बैठि गयौ। जब आधी राति के समहे पै रानी के पेट में ते सरपु निकर्यौ। साहूकार कूँ खबरि परी जब बु साहूकार की तरफ़ बढ़िकें आयौ तो तलवार ते वाके तीन टूक करि दिये और ढाल तर दाबि कें पलंग पै लोटि गयौ परि भूक में औंघ कौन ऐ आवै। थोरी देर पीछें राजा की लड़की जगी और व्वाकूँ जगाइबे लगी। जगि तौ रह्यौ ई ओ। बैठ्यौ भयौ और बोल्यौ कै भागुमान मैं तौ भूकौ मर्यौ। बु बोली : महाराज ! मैं आजु ते तिहारी दासी भई। आपु फिकिरि मति करौ। मैं अबई जो कछु भी सामान मिलि जाइगौ सोई लाऊँगी। व्वानें ढूंढ़िबे कौ लग्गा लगायौ और तो कछू न पायौ खाली थोरे से चामर पाये। व्वानें वे चामर एक मलरिया में लत्तान की आँच ते राँधे और साहूकार ऐ खवाये। वाकूँ कछू तसल्ली भई। समेरे राजा नें वा मुसाफिर ऐ देखिबे सिपाही भेजे। सिपाही नें बु जीमतौ पायौ। आइकें राजा ते कही : महाराज बु जीमतौ है। राजा नें वाकूँ बुलवायौ और अच्छी तरह न्हवाइ धुवाइ कपड़े पहराय कें आधे राज कौ राजतिलक कर दियौ। और बेटी कौ व्याहु वाके संग में करि दयौ।

वे दोनों खुबु आराम ते रहिबे लगे। एक दिना साहूकार कौ लरिका राजा की बेटी ते बोल्यौ कै अपने पिता ते आज्ञा मांगि लेउ। अब हम अपने शहर कूँ चलिंगे। राजा की बेटी ने अपने मा ते सब हाल सुनायौ व्वानें राजा ते कही। राजा ने खूब धन-दौलत और फौज पलटन देकें बिदा कीयौ। साहूकार कौ लरिका अपनी सुसरारि में आयौ।

सुसरारि बारे नें खूबु खातिर करी । बु बोल्यौ कै साब हमकूँ एक आदिमी की बड़ी भारी ज़रूरत है । जो आप दै दें तौ बड़ी महरबानी होगी । सुसरारि वारे बोले कै ऐसी कहा बातै। तुम जो कछु मांगो बुही तैय्यार है । साहूकार कौ लरिका बोल्यौ कै हमें एक कोतवाल की बड़ी भारी ज़रूरति है । सो तुम या कोतवाल कूँ दै देउ । बिन्नैं कही कै भले हीं लै जाउ । कोतवाल बड़ौ खुसी भयौ कै मेरी न्याऊँ खूब निभी और म्यांऊँ खूब पटैगी । अब साहूकार कौ लरिका बोल्यौ कै तुम्हें हमारे संग अपनी लड़िकी भेजनी होय तौ भेजि देउ । फिरि तौ जानें हमारौ आमनु होय न होय । वे सोचे कै स्यानी बहनि-बेटी कौ भेजिबौ ई बहतर है । राखनों अच्छौ नाहिं । याते तुम भेजिई देउ । कैऊ बरस में तौ अब लैबे आए ऐं फिरि ज नै कब के मारे कब आमें । बिन्नें खूब ठाट-बाट ते दान-दहेज दै कें लड़िकी बिदा करि दीनी । संगई कोतवाल लीयौ और चलि दीयौ ।

अब साहूकार जादौ अपनी बहन के न्यां आयौ और ब्वाई बाग में डेरा दै दियौ । मालिन ते वोल्यौ कै मालिन तू बेगि जा और हमारी बहन चंपा ते कह आ कै तेरौ भइया आयौ है ।

मालिन दौरी दौरी गई और चंपा के महलन में पहुँची और बोली कै तेरौ भइया आयौ है । ब्वाके संग में बड़ी सी भारी फौज पलटन है । चंपा सुनि कें बड़ी मगन भई और अपने भइया ते मिलिबे कूँ तैय्यार भई । अपनी द्यौरानी जिठानी सबन्नें बोलि कें भइया ते मिलिबे गई । और बाग में पहुँची । पहुँचि कें भइया ते खूबु मिली और चंपा के नाते ते द्यौरानी-जिठानी सबु मिलीं ।

जब मिलि भेटि लईं तब चंपा राजी खुसी पूछन लगी । तब साहूकार के लरिका नें ब्वा पेड़ के नीचें जाइकें वे रोटी उखारी और उखारि कें चंपा कूँ दिखाई कै देखि बहन जब मोपै बड़ी सी मुसीबति परि रही, वा समै तैनें मेरी बात न बूझी और जे रोटी मालिन के हातन भेजीं । जब मेरे पास एक पाई नांई, वा समै तैनें बड़ौ निरादर कीयौ, आजु काए कूँ आई ऐ । तेरी बात

देखि लई। तू तौ होंते की। मेरे पास कछू होंतौ तौ तू आमती। बहन बड़ी शरमिन्दा भई और लौटि कें अपने घर कूँ गई। बु फिरि अपने शहर कूँ चल्यौ।

जब शहर के नजीक पहुँच्यौ तौ फौज पै धौंसा बजवायौ। धौंसा कूँ सुनिकें वा शहर कौ मालिक बु साहूकार घबरायौ और सोचन लग्यौ कै कहा करनौ चहिये। जि तौ धींगरा राजा ऐ। सब सहर कूँ लूटि लै जाइगौ।

साहूकार बच्चा भेट पूजा लैकें बाते मिलिबे कूँ गयौ। जब साहूकार नज़ीक आयौ तौ व्वानें पहँचान्यौ कै जि तौ मेरौ पिता ऐ लेह–देह राम राम करी और पामन में गिर परयौ। वे दोऊ आपुस में मिले फिरि अपने घर कूँ आये। घर आइकें अपनी –बहन, कुटुम–परिवार ते मिला–भेटी करी।

साँझ कूँ व्वानें अपनी पहली औरत और बु कोतवाल बुलायौ और बुलाइकें पान–बीड़ी दई। फिर बिनते बोल्यौ कै कोतवाल साब अब तुम मेरी नौकरी दै देउ। आधी रात पै तुम्हारौ बोझा लै गयौ और स्वाँ जाइकें तुम दोऊन कूँ पान लायौ। और तुमनें मोय लिखिकें दई कै एक धेला दिंगे और हम भूलि जाँय तौ दिन दूनौ रात चौगुनौ करिकें लै लेना। देखो जि आपकौई लिख्यौ है ? इतनी सुनिकें दोऊन के होश उड़ि गये और शरीर में काटें खून न रह्यौ। मकान के ऊपर ते धड़म धड़म गिरिकें पिरान छोड़ि दिये। सो हे बुलाखी वे दोनों आदमी नई उमरि के मख में पान चबाते चबाते मर गये। कहूँ तू बिनें देखि कें आयौ होगो।

[ब्र० सा० मं० के संग्रह से।

—आठ—

जीवट की कहानियाँ

[यहाँ वे कहानियाँ दी गई हैं जिनमें कहानी के नायक को
किसी जीवट के कार्य में प्रवृत्त हो जाना पड़ा है।
उसे कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं]



ये कहानियाँ इस प्रकार हैं —

१. यारु होइ तौ ऐसौ होइ।
२. दुऐ भाई और दाँनौं।
३. खाती कौ बेटा।
४. बिल्ली, मूंसौ, स्याँपु।
५. तमोली की छोरी, घसखुदा राजा।
६. तीन चोर और एकु राजा।
७. बेदान सहर।



१. यारु होइ तौ ऐसौ होइ



(१)

एकु राजा के लरिका और बढ़ई के बेटा में यारई ई। एक दिनाँ दौनौं सिकार खेलिबे गए। जाँत जाँत व्हौत दूरि निकरि गए। गरमी कौ बख़तु और रस्ता की थकानि, राजा के बेटा पे प्यास लगी। थोरी सी दूरि पै कहा देखै कै चील और कउआ मड़राइ रहे ऐं। बढ़ई के बेटा नैं कही, 'यार! होइ न होइ म्वाँ पानी जरूर मालिम परतु ऐ।' राजा के बेटा नें कही, 'तौ तौ यार! तु जा और मेरे काजें* पानी ला। नँई तो मैं याँई[1] अपने प्रान छोड़ि दुंग्गो।'

बढ़ई कौ बेटा नें राजा के बेटा की जि बात सुनिकें, चल दयौ। चलत चलत म्वाँ† म्वाँ प्हौंच्यौ जहाँ चील-कउआ मड़राइ रहे। म्वाँ जाइकें कहा देख्यौ कै एक व्हौतु बड़ौ पानी कौ सरोवर ऐ। व्हौतु कछु स्वाफु पानी व्वामें लहराइ रह्यौ ऐ। व्वा सरोवरि के बीच में एक पत्थर कौ खम्मु ऐ और व्वाके ऊपर एक व्हौतुई कबूलसूरति‡ इस्तिरी कौ चित्तरू टँगि रह्यौ ऐ। अब बढ़ई के बेटा नें अपने मन में बिचारु करयौ जो मैं स्वाफु पानी लै चलूंग्गो तौ राजा कौ बेटा जरूरई याँ[2] देखिबे कूँ आवैगौ। जाते पानी मैलौ करिकैं लै चलूँ। और तबऊ आइ जाइ तौ ऐसौ करूँ कै जा चित्तर पै कीच मारि कैं दाबि चलूँ, नँई तौ बु जापै मोहित

---

१ आँई २ आँ

* लिए

† वहाँ

‡ यह शब्द 'कबूलसूरति' ग्रामीण बोलियों की शब्द-निर्माण और ग्राहक-शक्ति का उदाहरण है। प्रभावोत्पादक सौन्दर्य के लिए ग्रामीण लोक-साहित्यकार ने यह शब्द गढ़ लिया है। उसकी दृष्टि में शब्द का महत्व है, शब्द की जाति का नहीं।

है जाइगौ और ऐसीई गाँनी माँगैगौ । बढ़ई के बेटा न ऐसौई करयौ ।

राजा के बेटा ते आइकें व्वानें‡ कही कै लै राजा के बेटा पानी पी लै । राजा के बेटा नें मैलौ पानी देखि कैं कही कै अरे ऐसौ पानी कहाँ ते भरि लायौ ऐ । चलि मैंऊँ म्वाँई चलुंगो और जा पानी एँ छानि कैं पिउँग्गो । बढ़ई के बेटा ने कही कै यार जाई ऐ पीलै। म्वाँ सबरौ पानी ऐसौ ई ऐ । परि राजा के बेटा नें न माँनी और म्वाँई कूँ चलि दीयौ ।

बड़ौ स्वाफु पानी राजा के बेटा नें म्वाँ देख्यौ । और कही यार । तू पानी कहाँ ते लै गयौ ओ । याँ[1] तौ ऐसौ पानी ऐ। व्वानें खूब पानी पीयौ और फिरि बु चित्तरु ऊन देख्यौ। बढ़ई के बेटा ते कही कै यार जि कौन कौ चित्तरु ऐ? व्वानें ज्वाबु दीयौ कै 'होइगौ काऊ कौ, तोई कहा मतलबु परयौ ऐ। परि राजा के बेटानें न मानी औरु पानी के छपका मारि मारि कें बु चित्तरु धोइ दीयौ और व्वाकी मलूकाई पै मोहिगौ। व्वानें कही 'यार ! लुंग्गो तौ ऐसीई रानी लुंग्गो नहीं तौ मरि जाँग्गो ।'

अब बढ़ई के बेटानें कही कै यार तैनें तौ बड़ी करी† अटकाई। परि खैरि अब मैं तौ मनिहारिन बन्तूँ और सब जगहै फेरौ करुँग्गो। तू जाई जग्है, सरोवरि पै बैंठ्यौ रहियो। मैं जाई रानी की तलास में जाँतूँ। जौ मोइ पतौ लगिगौ तौ मैं आइ जांग्गो। और जौ तोइ कोई पतौ लगै तौ याँई[2] बैठ्यो रहियो। इतनी[3] बात कही कै बढ़ई कौ बेटा मनिहारिन बनकें चलि दओ और सबु जग्है चुरि पहिरामतु डौलै । राजा कौ बेटा म्वाँई बैठिगौ ।

---

१ ह्याँ

२ ह्याँई

३ इत्ती

‡ उसने ।

† कठिन ।

(२)

राजा के बेटा ऐ बैठें बैठें कैऊ दिना बीति गए । एक दिना कहा बात भई कै व्वा सरोवरि में ते एक स्याँपु निकरयौ। मनि व्वा स्याँपु के माँथे पै धरौई। व्वा मनि ऐं धरि कें स्याँपु ओस चाटिबे कूँ चल्यौ गयौ। व्हौत देर पीछें स्याँपु लौट्यौ और मनि ऐं लैकें व्वाई सरोवरि में घुसि गयौ।

राजा के बेटा नें सोची 'जौ जि मनि मोइ मिलि जाइ तौ मैं जा सरोवरि में घुसि जाउँ और देखूँ जामें वु रानी हतिऐ कै नाँइ। व्वानें सहर में जाइकें बीस हात लंबी एक साँकर मोल लई और एक ढाल मोल लई । व्वा ढाल में उस्तरा, चक्कू, कैंवी जड़वाई। जौ व्वा ढाल पै माँखीऊ बैठि जाइ तौ सौ टूँक है जाँइ। रातिकूँ व्वा साँकर में ढाल बाँधी और पेड़ पै चढ़ि गयौ। राति कूँ जब स्याँपु निकरयौ का और मनि ऐं पेड़ के नीचें धरि कें ओस चाटिबे गयौ का, राजा के बेटा नें ढाल पेड़ पै ते फाँसि दई और मनि के ऊपर औंधी मारि दई । स्याँपं जव अँधेरौ दीख्यौ का, सोई वु म्वाँते भाज्यौ। आमत खैम* व्वानें ढाल पै फनु मारयौ सोई व्वाके टूँक टूँक है गए।

अब राजा कौ बेटा पेड़ पै ते उतरयौ और मनि लै लई। व्वा मनि ऐं लैकें सरोवरि में कूदि परयौ। पानी नें रस्ता दै दियौ[1]। व्वा सरोवरि में जाइ कें व्वानें कहा देख्यौ कै एक पलिका सोने के पाएन कौ और चाँदी की पाटीन कौ म्वाँ बिछि रह्यौ ऐ। रेसम की जेवरीन ते चौपर की बुनवाई है रई, व्वापै वुही रानी, जाकौ चित्तरु व्वानें देख्यो, सोइ रही । राजा के बेटा ऐ देखत खैंमई, रानी नें पूछी, 'तू कोऐ और कहाँ ते आयौ ऐ । तोइ स्यापु खाइ जाइगौ, राजा के बेटा नें कही कै स्याँपै तौ मैं मारि आयौ। अब तू निरभै है जा। रानी नें कही 'मैं व्वा स्याँप केई बन्धन में परीई। अब तू मेरौ पति और मैं तेरी इस्तरी'।

१ दयौ

* ही

राजा के बेटा नें अपने यार बढ़ई के बेटा की सारी बात रानी ते कहीं। अब रोजु व्वा सरोवरि में ते दोऊ, दोऊ बख़त निकरें और बढ़ई के बेटाए देखि जाँइ। परि बु काई दिना न मिल्यौ।

(३)

एक दिनाँ की बात, राजा को बेटा और रानी निकरे। व्वाई बखत उन्हें घोड़ा के टापन की आवाज सुनाई परी। रानी नें कही कै जि कोई राजा मालिम परतु ऐ। जाते चलौ, सरोवरि में घुसि चलें। इतनी कहिकैं दोनों व्वा सरोवरि में भहराइ कैं परे और अपनी जगहै पै चले गए।

भीतर तौ वे दोऊ चले गए परि जल्दी में रानी के पाँइ की जड़ाऊ जूती ऊपर ही रहि गई। राजा नें बु जूती देखी। व्वानें कही कै जौ मैं व्याहु करुँग्गो तौ तौ करुँग्गो जाई जूती की पहननहारी ते नई तो मरि जांग्गो।

जा तरह सोचि विचारि कें राजा अपने महलन में आयौ। म्वाँ व्वानें अपनी एक दूती ते कही कि ऐ, तू कहा करि सकति ऐ। व्वानें कही कै जो तुम कहौ सोई करि सकति ऊँ।

राजा नें कही कै जा जूती की पहननहारी ते मैं व्याहु करुँग्गो। दूती ने पूछी कै बु कहाँ रहतिऐ। राजा नें कही कै व्वा सरोवरि के भीतर बु रहँतिऐ। तब दूती नें कही कै अच्छा मेरे संग्ग चारि तौ हथियार वारे सिपाही करो और मैं जाउँगी। व्वाइ लै कैंई तुम्हें म्हौं दिखाऊँगी।

(४)

चार सवारन नें लैकें दूती व्वाई सरोवरि पै आई। चारयौ सवार व्वानें छिपाइ कें बैठारि दए। और बु डकराइ-डकराइ कें रोइबे लगी। जब रानी और राजा के बेटा नें व्वाकौ रोइबौ सुनौं तौ बाहिर निकसे। बाहिर निकसि कें दूती ते पूछी कै री तू चौं रोइ रही ऐ। दूती नें कही कै मैं मँजूरी चाहतिऊँ और रोटी की भूँकी ऊँ। रानी नें व्वाते कही कि तू मेरे संग्ग रहि, मैं अपने घर अकेली ऊँ। दूती व्वाके संग भीतर घुसि गई।

म्वाँ भीतर रहँत-रहँत दूती ऐ भौतु दिना है गए परि कोई सरसंद[1] न पर्यौ। राजा कौ बेटा जहाँ जाइ, मनि ऐं अपने संग्गई लै जाइ। दूती नें एक दिनाँ रानी ते कही कै तो पै तेरे पति की इतनीऊँ परतीति नाँएं कि बु मनि एँ छोड़ि जाइ। जहाँ जांतुऐ अपने संग्गई लै जाँतुऐ।

रानी नें दूसरे दिनां मनि अपने ई पास राखि लई।

दूती और बु रानी व्वा मनि ऐं लैकें बाहिर निकरीं। बाहिर निकरत[2] खैम दूती नें इसारौ करयौ और सिपाही आइ गए। सिपाहीन नें रानी पकरि लई[3] और दूती नें मनि छीनि लई। व्वाइ बाँधि कें सिपाही राजा के पास लाए। राजा नें व्वाते कही कै मोते ब्याहु करि लै[3]। रानी नें कही कै, राजा छै महीना तक तौ मैं तेरी व्हैन। और तू मेरौ भइया। छै महीनां पीछे मैं तेरी इस्तिरी बनि जाऊँगी। राजा ने जि बात मानि लई। फिरि रानी नें कही कै एक और बात ऐ। छै महीनां तक मैं रोजु चूरी पहिरूँग्गी और रोजु मौरूँगी*। राजा नें जिहू बात मानि लई।

---

१ सरसंद = सल-संधि = यह शब्द ठीक जोड़-तोड़ का पर्याय है। सल = दरार को कहते हैं, यानी तोड़। संधि मिलने को, यानी जोड़।

२ निकत्त-इस ग्राम-बोली में 'त' के पूर्व का 'र' और पश्चात् का 'न' प्रायः लुप्त हो जाते हैं और 'त' द्वित्त हो जाता है।

३ साधारण ग्राम-उच्चारण में 'पकरि लई' में संधि हो जाती है, जिसमें 'रि' का रुपान्तर अर्द्ध 'ल' में हो जाता है और मात्रा 'ई' के स्थान पर एक उचारण-विराम या उचारण-रिक्तता का हलका स्पर्श हो उठता है। = पक-'ल्लई। और = क'ल्लै।

* मौरूंगी = फोडूंगी (ब्रज में चूड़ियों के सम्बन्ध में फोड़ना क्रिया का उपयोग तभी होता है, जब पति की मृत्यु होजाय। उसी समय चूड़ियाँ फोड़ी जाती हैं। साधारण अवस्था में चूड़ी टूट जाने के लिए 'मौरना' क्रिया काम में आती है, जैसे यहाँ आई है।)

(५)

अब रानी ने सबरे राज में ढिंढोरा पिटवाइ दीयौ कै नए-नए मनिहार नई नई चूरी प्हैराइबे आमें, ऐसें ई पाँच महिनाँ बीति गए परि बु बढ़ई कौ बेटा न आयौ । छटे महिनाँ में घूमतु घूमतु बु बढ़ई कौ बेटा व्वा सहर में आयौ । व्वानें रानी कौ ढिंढोरा सुन्यौ । बु रानी के जौरें† प्हौंच्यौ । रानी की सूरत व्वाइ कछु चित्तर की सी मालिम परी । व्वानें व्वाते पूछी कै तू कोऐ । रानी नें पूछी कि तू कोऐ । बढ़ई के बेटा नें कही कै मैं बड़ौ दुखिया ऊँ और अपनी सबरी कहानी कहि सुनाई । रानी ने कही कै तू अपनौ चित्तर निकारि । व्वानें चित्तर निकारि कैं देख्यौ तौ बिरकुल्लि वुई रानी । रानी ने ऊँ अपनी सबरी कहानी सुनाइ दई । अब बढ़ई के बेटा ने कही कै देखि मैं द्वै दिना में उड़न खटोला लाँग्गो और तोइ लिवाइ लै चलुंग्गो ।

प्हैलें बढ़ई के बेटा नें सोची कै मनि लैनीं चहिए । व्वानें व्वा दूती कौ पतौ चलायौ । व्वाइ खबर लगी कै जा दूती कौ एकु बेटा बारह बर्स ते नाँइ आयौ । बढ़ई के बेटा नें दूती के दरवज्जे पै जाइ के अवाज लगाई, 'अम्मा ! जल्दी किवार खोलि मैं आइ गऔ' । दूती नें लेह-देह‡ किवार खोलीं । बढ़ई कौ बेटा भीतर गयौ । द्वै तीन घंटा पीछें बु डकराइबे लग्यौ । दूती नें पूछी, 'बेटा ! अब्हाल तौ आयौ ऐ और अबई यौं रोइबे लग्यौ । बढ़ई के बेटा नें कही 'अम्मा ! मेरी आँखिन में दर्द है रह्यौ ऐ । म्वाँ तौ मो पै एक स्याँप की मनि ई । व्वाइ घिसि कें लगाइ लें तो सोई ठीक है जाँतो । परि याँ¹ बु हति नाँऐं, अब कहा करूँ ?' दूती नें झट्टपट्ट मनि लाइ कैं व्वाइ दै दई । अब झट्ट, जब दूती सोइ गई सोई बढ़ई कौ बेटा मनि ऐ लैकें चल दऔ ।

अब बढ़ई के बेटा नें उड़न खटोला बनवायौ ।

---

१ आँ ।

† पास ।

‡ बड़ी शीघ्रता में ।

मनि और उड़नखटोला पे लैकें बु रानी के जौरें प्हौंच्यौ। राति कौ समैया। सब सोइ रहे। बढ़ई कौ बेटा उड़न खटोला में रानी एँ बैठारि कैं भागि निकरयौ।

(६)

बढ़ई कौ बेटा कछू तौ थकि गयौओ और कछू नींद लगि आई। झट्ट उड़न खटोला एक पीपर के पेड़ के नीचें उतारि दियौ। और दोऊ म्वाँ सोइ गये।

ब्वा पेड़ पै एक तोता और तोती रहँतए। तोती नें तोता ते कही कै तोता कछू ऐसी बात कहौ जाते रैनि कटै। तोता नें कहीः—

देखि तोती! जि जो नीचें रानी सोइ रही ऐ, जाको ब्याहु जा राजा ते होइगौ, ब्वाको काल तीन जग्है ऐ। पहलें तो जब दोऊ उड़न खटोला में बैठिकें अपने सहर कूँ जाँग्गे तो जाई पेड़ के ऊपर इनकौ उड़न खटोला टकरावैगौ और गिरि परैगौ। जौ याँऊते[1] बचि जाइगौ तौ जब घर में घुसैगौ तौ दरवज्जौ जाके ऊपर गिरैगौ अगर म्वाँऊ ते बचि जाइगौ तौ चित्तरसारी में स्याँप काठि खाइगौ। और तोइ एक और बात बताऊँ कै जौ इन दोनोंन में ते कोई सुनि रह्यौ होइगौ और ब्वा राजा के बेटा ते जाइकें कहि देगौ तौ बुही पथ्थर कौ ह्वै जाइगौ।

तोती नें पूछी कै तोता ब्वाके अच्छे ह्वैबे कौ कहा उपाइ ऐ?

तोता नें कही कै राजा कौ बेटा अपने छः महीना के बेटा कौ खून छिरकि देगौ तौ बु जिन्दौ ह्वै जाइगौ।

जि सबरी बात बढ़ई कौ बेटा सुनि रह्यौ ओ। सवेरे की हौंनि* पै रानी और बढ़ई कौ बेटा उड़न खटोला पै बैठे और सरोवरि पै पहुँचे। सरोवरि में भीतर घुसे तो राजा कौ बेटा म्वां मिल्यौ। सब आपुस में मिले-भेंटे। बढ़ई के बेटा नें रानी के पाइबे और लाइबे की सबरी कहानी सुनाइ दई।

---

१ याँऊ

* प्रातःकाल होते

(७)

दूसरे ई दिनाँ, सबेरे, तीनों उड़न खटोला पै बैठे और उड़ि चले। बढ़ई कौ बेटा उड़न खटोला ऐ उड़ाइबे लग्यो। जब वुही पीपर कौ पेड़ आयौ, ब्वानें झट्ट उड़न खटोला मोरि कें व्वा पेड़ ते बचाइ दियौ। पेड़ गिरि पर्यौ। राजा के बेटा नें पूँछी कै यार तोइ कैसे मालिम परी कि जि पेडु गिरैगौ ? बढ़ई के बेटा नें कही कि यार तोइ जाते कछू मतबलु नाएँ, तू चल्यौ चलि।

उड़त-उड़त वे अपने सहर में पहुँचे। महल के ऊपर उड़न-खटोला उतारि लियौ। बढ़ई के बेटा नें कही कि यार जा दरबज्जे में हैकें मति घुसै। दूसरे दरबज्जे में हैकें घुसि। राजा के बेटा नें कही च्यौं ? बढ़ई के बेटा ने कही कै तुम्हें जाते कहाए। मैं जो कहूँ वुही करौ। सगुन ऐसौई बोलि रह्यौ ऐ। राजा के बेटा ने यार की बात मानि लई और दूसरे दरबज्जे में है कें घुसे। ऊपर चित्तरसारी में तीनों पहुँचे। राजा के बेटा और रानी एैं स्वाइ‡ कें बढ़ई कौ बेटा अपने घर कूँ चल्यौ गयौ।

बढ़ई कौ बेटा जब जाइ कें खाट पै सोइ गयौ तब व्वाइ यादि आई कै अबई तौ एक और कालु कौ बखत रह्यौ ऐ। अबई स्याँपु काटैगौ। इतनी सोचि कें ढाल-तरवारि लैकें, बु चल्यौ। चित्तरसारी में पहुँचि कै देखै तौ कारौ स्याँपु खाट के नीचें लहराय रह्यौ ऐ। झट्ट ब्वानें तरवारि निकारि के स्याँप के तीनि पेंड़ा* करि दीए। और ढाल ते दाबि दीये। थक्यौ माँदौ तौ हतुइयो झट्ट सोइ गौ। सबेरे रानी उठी और तरवारि लऐं बढ़ई कौ बेटा सोमतु देख्यौ तौ झट्ट राजा के बेटा ते सिकाइत करि दई। राजा के बेटा नें जब जगाइकें यार ते पूछी कि यार कहा बात ऐ। तौ ब्वानें ढाल की तरफ इसारौ करि दयौ। राजा के बेटा नें उघारि कें देख्यौ तौ स्याँप के तीनि पेंड़ा देखे।

---

‡ सुलाके

* टुकड़े

अब राजा के बेटा ने पूछी कै यार अब मैं पूछे बिनाँ नाऊं मान सकतु। तैनें तीन जग्है मैं काल पै ते बचायौ ऊं। अब मोइ बताइ तैनें कैसे जानी कै तीन जग्है मेरौ कालु ऐ। बढ़ई के बेटा नें कही कै यार मैं बात बतामत खैम, पथ्थर कौ है जाँगौ। और मोइ ठीक करिबे के काँजें तोइ अपनों पहलौ छै महीना कौ बेटा मारि कें खून मोपै छिरकनौं परैगौ। जाते बातऐ छुम्मा† रहन दै।

परि राजा के बेटा नें न मानी।

बढ़ई के बेटा नें इतमें तौ कहानी सुरु करी और उतमें पांइन गाऊँते बु पथ्थर को हैबौ सुरु भयौ। कहानी के अखीर पै बु एक पथ्थर की मूर्ति बनि गई। राजा के बेटा ने बु एक कवरा* में धरवाइ दई और तारौ लगवाइ दऔ।

(८)

राजा के बेटा कें बेटा भयौ। धूम-धाम भई। खुसी मनाई।

बेटा छै महीना कौ है गयौ। एक दिना राजा कौ बेटा व्वाइ गोद में खिलाइ रह्यौ औ रानी नें कही 'तुम तौ अपने बच्चा ऐ खिलाइ रहे औ, परि तुमें व्वा बढ़ई के बेटा की ऊ यादि ऐ जानें तुम्हारे ही पीछें अपने बाल-बच्चे छोड़ि दए और पथ्थर कौ है गयौ औ'।

झट्ट राजा के बेटा नें तरवारि निकारी और अपने बेटा के तीनि पेंड़ा करि दए। खून अपने यार पै छिरक्यौ। बु पथ्थर की मूर्ति बोलि उठी। दोऊ यार प्यार ते मिले।

यारु होइ तौ ऐसौ होइ।

[सं० क० चन्द्रभान, 'राधे राधे', लोहबन।

---

† जहाँ की तहाँ

* कमरा

२. दुऐ भाई और दाँनौं



एकु राजा ओ[1]। बाकें एक-ऊ[2] छोरा नाँओ[1]। बु राति दिनाँ याई फिकर में लग्यौ रहैओ कि मेरें कोई छोरा होयगौ कि जन नाँय। एक दिनाँ एक दानौ आयौ। बानें आइकें बा राजा के दरवज्जे पै धूनी रमाय दई। जब राजा घर ते निकर्‌यौ वाकी निगाह बु बाबाजी, बुई दानों हतु काओ, परि गई। बानें जानी कि जि कोई अच्छौ बाबाजी ऐ। मैं याइ जाइकें पूजूँ तौ न जानें स्यातें मेरें कोई छोरा है जाय। झट्ट बानें वाकूँ डंडौत करी। बा दाने नें पूछी कि बता बच्चा तू कैसें आयौ ऐ। राजा नें कही कि मेरैं कोई छोरा नाँयें। दानौं बोल्यौ कि जौ कहूँ तेरैं छोरा है जाय तौ तू हमें एकु छोरा दै देगौ। राजा बोल्यौ कि महाराजजी दै दुंगो। झट्ट वानें कही कि जा बच्चा तेरें छोरा है जागौ।

इतेक कहिकै बु बाबाजी वहाँ ते चल्यौ गयौ। झट्ट दस महीना पीछें राजा कें द्वै छोरा है गए। बे दौनौं जब घनेऊ बड़े है गए राजा बहुत[3] प्यार करन लग्यौ। उन दौनूँ छोरान् में छोटौ छोरा हुशियारु ओ। सो झट राजा छोटे छोराई पै ज्यादा प्यारु राखै ओ।

बारह बर्स पीछें बु दाँनौं आयौ। वानें आइकें छोरा माँग्यौ। छोरा के नाम राजा हिचकिचायौ। परि ब्वानें सोसी[4] कि अब तौ

---

१ ओ। जहाँ से यह कहानी ली गयी है, वहाँ यहाँ यह 'ओ' भी लघु 'ओ' है, जिसका उच्चारण 'ओं' के लघु उच्चारण के निकट पहुँचता है पर स्पष्ट 'ओ' नहीं हो पाता।

२ एक-ऊ के भी दो उच्चारण हो जाते हैं। जब बोलने वाला विशिश्लिष्ट हो जाता है, और प्रत्येक वर्ण को सँभाल कर बोलना चाहता है तब तो 'क' पूर्ण उच्चारित होता है, और 'ऊ' से भिन्न हो जाता है। पर साधारण बोलचाल में 'क' स्वर-रहित होकर (क्) ऊ से संयुक्त हो जाता है। उस दशा में 'क' 'कु' बन जाता है और 'एकुऊ' यह संश्लिष्ट उच्चारण मिलता है।

३ ब्हौत

४ सोची

देनौंई परैगौ। सो झट बु महलन में गयौ। जायकैं बानैं बड़े छोरा ऐ तौ अच्छे अच्छे कपरा पहनाय दीये। दौनूँ छोरा लैकें बाबाजी के आगें ठाढ़े करि दीये। बाबाजी नें सोची कि जन[1] इनमें कौनसौ होशियार ऐ। सो झट्ट बानें दो बकरा मँगाए और एकु एकु दौनूँ छोरान कूँ दै दीये औरु कही इन्नें ऐसी ठौर काटि लाऔ कि जहाँ कोई नाँयें होइ। तौ झट्ट वे दौनौं छोरा बकरान्नैं लैकें गये तौ बड़े छोरानें एक झेरे में जायकें जहाँ कोई नाँओ काटि लीयौ। औरु छोटौ छोरा बकरा ऐ उलटौ ई बगदाय लैगौ। बाबाजी नें पूछी क्यों न काटि कैं लायौ। जब बानें कही कि बाबा मोय ऐसी जगह नाँय मिली जा ठौर कोई नाँय होय। सबरौ चाँय कोई मत होऔ रामजी तौ देखैं। झट वा बाबाजी नें समझि लई कि छोटौ छोरा हुशियारै। वानें राजा ते कही कि मोय तौ छोटे छोरा ऐ दै दै। झट्ट राजा नैं कही कि लै जा बाबा। जब बु छोरा जान लग्यौ तो बाकी मैया रोमन लगी सो छोरा बोल्यौ मैया रोबै मतीना तू एक कटोरा दूध भरि कैं धरि लै। जब मैं मरि जांगो वा दूध कौ खून है जायगौ। झट्ट वाकी मैया नें कटोरा भरिकें दूध धरि लियौ।

बाबाजी वा छोराऐ लैकें चलाचल चलाचल रस्ता में पहुँचे। आगें आगें बाबाजी जा[2] रहौ पीछें पीछें छोरा जा[2] रहौ। एक डोकरी पाई। वानें कही कि तू जा दाने के संग मति जाइ[3] जि तोय खा जायगौ पर वा छोरानें नाँय मानी।

अब दोनों पहुँच गए तौ दूसरे दिनाँ दाने नें करहा* भरिकें तेलु तातौ करयौ। जब औटिगौ तौ छोरा ते कही कि याकी परकम्मा लगा। जब छोरा नैं परिकम्मा लगाई तौ झट्ट वा बाबाजी नें उठाय कैं बु छोरा करहा में डारि दियौ। जब पकि गयौ तौ खाय लीयौ।

---

१ जाने का रूप २ जाइ

३ जाऐ

* कडाह

परेकूँ वा दूध कौ खूनु है गयौ तौ वाकी मैया रोमन लगी। तौ वा बड़े छोरा नें पूछी कि मैया तू काए कूँ रोय रही ऐ। वानें कह दई। झट्ट बु छोरा चलि दीयौ। जब बु रस्ता में पहुँचिगौ तौ डोकरी पाई। डोकरी नें नाहीं करी परि बु न मान्यौ। तौ झट्ट माहीं पहुँच्यौ जहाँ करहा औटि रहौ। औ बु दानां जौरें बैठ्यौ दाने नें कही कि याकी परिकम्मा दै। छोरा बोल्यौ कि मौपै नायें आवै तू दैकें बताय दै। जब बाबाजी नें परिकम्मा दई तौ छोरा नें पटक दीयौ। वा दाने की छोरी पै अमरत औ। झट्ट वानें वा पै ते लैकें अपने भैया के हाड़ गोड़न पै छिरकि दीयौ। झट्ट बु जी परयौ। दौनूं भैया घर कूँ आ गए।

[सं० क० लछमीनारायण : हथिया, छाता. (मथुरा)
ब्र० सा० मं० के संकलन से।

———

३. खाती कौ बेटा



(१)

एकु राजा कौ बेटा, एकु खाती कौ औरु एकु बजीर कौ बेटा अपनी अपनी सुसरारि कूं चले। आगें जाइकें राजा के* की सुसरारि जा सहर में हति काई व्वाई सहर में पहुँचे। राजा कौ बेटा तौ अपनी सुसरारि कूं चल्यौ गयौ।

बु खाती कौ बेटा औरु बजीर कौ बेटा एक सराय में ठहरिबे चले। रस्ता में उनें एक डोकरी पाई। बु उनें देखिकें रोइबे लग गई। खाती के नें बजीर के ते कही, चलि तू तौ आगें चलि, मैं जा डोकरी ते जाके रोइबे कौ कारनु पूछि कें आमतूँ[1]। बजीर कौ आगें बढ़ि गयौ[2]।

अब बु खाती कौ बेटा व्वा डोकरी के जौरें गयौ[2]। व्वानें कही, बेटा जा सहर[3] में तुमें[4] ठहरिबे[5] कूँ कहूँ जगै[6] मिलैगी नाँय और तुम जाय[7] कें सराय में रंडी की बगल बारी कोठरी में ठहरौगे[8]। व्वा रंडी के पेट में ते राति में एक स्याँपिनि निकरैगी और बु तुमें खाइ जायगी। व्वानें जि बात सुनिकें अपनी रस्ता गही।

म्वाँ† पहुँचि कें बानें अब बु बजीर कौ छोरा तौ व्वामें ठहराय दीयौ औरु आपु जगिबे लग्यौ। राति कूँ स्यांपिनि निकरी

---

१ यह 'आमतूं' आमत और ऊँ से मिल कर बना है। २ गओ

३ सैहर—'ह' से पूर्व का किसी व्यंजन का उच्चारण लघु ऐ'—'इ तथा ऐ' के बीच का हो जाता है। यहाँ वही उच्चारण भी मिलता है और 'सहर' भी है।

४ तुम्हें ५ ठैरिबे

६ जघै (=स्थान जगह का प्रयत्न लाघव से बना रूप) जग्गै, जग्घै।

७ जाइ ८ ठैरौगे

* 'राजा के' का अर्थ है राजा के बेटा की

† मुआँ (म्वाँ) = वहाँ

ओर बजीर के छोरा माऊँ‡ गई। खाती के छोरा नें तरवारि लैकें स्यांपिन के टूंक-टूंक करि दीने।

सबेरें बु स्यांपिन रंडी के मुंह में घुसी न। सोई रंडी सबेरें भएँ मरि गई।

(२)

खाती के बेटा नें सोची, ला अबई तौ भौतु राति ऐ। ला औरु सहर के हाल चाल देखूँ।

बु राजा कौ बेटा अपनी सुसरारि में जायकें राति कूँ सोइ गयौ। ब्वाकूँ जो ब्याही काई* ब्वाकी एक बाबाजी ते रीति भाँति‡ ई। बु राति कूँ ब्वाके जौरें गई। बाबाजी नें पूछी : अरी तू आजु इतनी देर करि कें कैसें आई। ब्वानें ज्वाबु दीयौ मेरे पति आए एँ। जाई ते देर है गई। बाबाजी ऐ आइ गई रिस। ब्वानें झट्ट ब्वाकी नाक काटि लई।

बु भाजि कें अपने घर आई। आइकें ब्वानें हल्ला मचायौ कै मेरे पति नें मेरी नाक काटि लई। सब भाजे आए। राजा कौ बेटा बाँधि लीयौ। और सोची : जाइ सबेरें राजा के दरबार में लै चलिंगे।

खाती कौ बेटा जा सबरी बात ऐ देखि रह्यौ।

(३)

खाती के बेटा नें सोची ला भाई और डोलि लूँ[1]।

सोई बु एक माता के मढ़ पै पहुँच्यौ[2]। म्वाँ जाइकें कहा देखै कि चारि चोर आए। एक नें आइकें माता ते कही : माता मैया आजु मोइ चोरी में ज्यादा परापति† है जायगी तौ मैं तोपै

१ डोल लऊँ   २ पोंहच्यौ

‡ की ओर, दिशा में

* थी

‡ प्रेम

† प्राप्ति

आधौ मालु चढ़ाइ दुंग्गो। दूसरे ने कही : मैया मैं तौ बहुत थोरौ सौ मालुई राखुंग्गो और ब्वाकी सबै तोई पै चढ़ाइ दुंग्गो। तीसरे ने कही : चारि-छै पैसा राखुंग्गो और नईं सबै तोई पै चढ़ाइ दुंग्गो। चौथे चोट्टा* ने कही : देवी मैं जा राजा की बेटी के सीस ऐ तोपै लाइकैं चढ़ाइ दुंग्गो।

ब्वा दिना ईश्वर की करनी ऐसी भई कि सबके हाथ खूबु मालु लग्यौ। सोई सबनें आइकें अपने अपने कहिबे के अनुसार कामु कर्यौ। अब चारों जने राजा की बेटी ऐ लैबे कूँ चले। राजा की बेटी छत्ति पै सोइ रही। चार्यौ जने ब्वाकी खाट ऐ उठाइ लाए। बु खाती कौ बेटा ऊ उनके पीछें-पीछें चल्यौ गयौ। बु जायके मन्दिर में घुसि गयौ। मन्दिर की किबार के पीछें खातौ कौ बेटा ठाड़ौ हैगौ[1]। चोट्टानु[2] राजा की बेटी मन्दिर में जाइकें धरि दई।

राजा के बेटा नें तरवारि खैंचि लई औरु दरबज्जे के जौरें ठाड़ौ हैगौ[1]। पहलौ चोट्टा जब घुसिबे कूँ गयौ सोई ब्वानें ब्वाकौ मूंडु भुट्टा सौ उड़ाइ दीयौ। ऐसें ई ब्वानें चार्यौ चोरन के सीस काटि दीए।

अब खाती के नें राजा की बेटी ते कही : अरी भैना। अब तू जा। ब्वानें कही मोय तू पहुँचाय कें आ। बु ब्वाके घर तक पहुँचाइबे गयौ। फिरि ब्वानें कही : मेरी चित्तरसारी तक पहुँचाय। बु म्वाँ ऊ तक चलौ गयौ। अब ब्वा राजा की बेटी नें कही : आ अब तू मेरी सेज पै सोइ। आजु ते तू मेरौ मालिकु औरु मैं तेरी बहू। खाती के नें कही : ऐसौ नाँए है सकतु। मैं तोते भैना कहि चुक्यौ ऊँ। सोई ब्वानें हल्ला मचाइ दीयौ—'चोरु चोरु'। अब पहरेदार आए औरु बु पकरि लीयौ।

(४)

सबेरें भएँ तीन्यों जने पकरि कें आए।

---

१ गओ २ चोट्टाननें

* चोर

पहलें बजीर के छोरा ते पूछी : तैनें रंडी चौं मारि दई। व्वानें कही : श्री महाराज मोय बिरकुल्लि* जा मामले की खबरि नाँए। खाती के नें व्वाकी सबु बात कहि दई और सबूत में मरी मराई स्यांपिनि दिखाइ दई। बजीर कौ छोरा तौ जा तरह बरी हैगौ[1]।

अब व्वा के बेटा ते पूछी कि तैनें चौं अपनी बहू की नाँक काटी।

व्वानें कही : मोइ कछू खबरि नाँए।

खाती के नें व्वाऊ कौ सबु अहवालु‡ बताइ दीयौ और सबूत में बाबाजी की ल्हास दिखाइ दई। राजा कौ बेटाऊ बरी हैगौ।

अब व्वा खाती के ते बात पूछी गई। व्वानें कहि दई सबु बात और सबूत में चारयौ चोट्टान की ल्हास दिखाइ दई। वु हू बरी हैगौ।

जा तरह तीन्यौं बरी हैकें अपने अपने घरकूँ खुसी ते गए।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन
—सम्पादक के संकलन से।

---

१ गऔ

* बिल्कुल

‡ हाल

४. बिल्ली, मूँसौ, स्याँपु



एक मा बेटा ऐ। मा नें अपने बेटा ऐ रुजिगार करिबे कूँ सौ रुप्या दीए और बु खंदे* दीयौ। बजार में एक बिल्ली बिकति पाई। ब्वानें मोलु पूछ्यौ। ब्वानें सौ रुप्या मांगे। ब्वानें बिल्ली मोल लै लई। घर लायौ। महतारी नें किल्ल करी। फिर दूसरे दिना सौ रुप्या दिए। अब कें एकु मूँसौ लै आयौ। मा नें फिरि सौ रुप्या दीए। फिरि स्यांपु लै आयौ। मा नें कही : बेटा जि काल जेबरी काए कूँ लै आयौ ऐ अब तू अपनी तीनों चीजनु लै जा औरु मेरे घर ते निकरि जा।

बु उनें लैकें बनी में चल्योगौ[1]। अब सबु भूँके। स्यांप नें कही : तू हमारी बांबी पै चलि। म्वां हमारौ एकु पुरिखा रहतु ऐ। म्वां तू ब्वाकी सेवा चाकरी करियो। जब बु खुस ह्वै जाय तौ तू ब्वा पै ते अंगूठी मांगि लीजो। बे म्वां गए। अँगूठी ऐ लै आए।

स्यांप नें गैया कौ गोबरु मंगायौ। चौका लगवायौ। ब्वा पै अँगूठी धरि दई। फिरि ब्वा पै ते छत्तीसौ बिंजन मांगे। सौंनेन के थार ह्वै गए। सबकु पकमान ह्वै गए। सब सौंने चांदी के बासनन्नें छोड़ि कें चलि दीए। एक भटियारिन की सराय में जाइकें ठहरे। भटिआरी नें ठैरिबे की नाहीं करि दीनी। बे म्वाँ बाहिर ई रहि गए। राति कूँ फिरि अँगूठी नें सौंने के बासन और छत्तीसौ बिंजन दीए। बासन डारि दीए। सबेरें भटिआरिनि आई। ब्वानें सोंने के बासन देखे औरु कही : अरे जगि परौ तुमारे बासन परे एँ। उननें कही : अरी हमारें तौ ऐसें ई परे रहत एँ। अबकें सोने के महल बनाइबे की अँगूठी ते कही। सौंने के महल बनि गए।

---

१ गऔ

*.भेज दिया

म्वां के राजा के बेटी कौ जि परनु ओ कि मैं सोने के महल वारे ते अपनौ ब्याहु करुंगी। राजा जादी कौ डोला निकरयौ। ब्वानें राजा ते जाइ कें कही। राजा आयौ औरु ब्वाइ अपने संग लिवाइ लैगौ। एकु दूसरे देस कौ राजा आयौ। ब्वानें जि छोरी अपने बार सुखामति देखी। राजा नें ब्वाइ लैबे कौ परनु † खैंचि लीयौ।

ब्वानें अपनी दूती बुलाई। दूती पानी के जहाज में बैठि कें ब्वाई नदिया में पहुँची जा में राजा की बेटी की नाव परति[२]ई। दूती दिन राति रोई। राजा की बेटी ब्वाइ द्वै रोटीन पै अपने ज्याँ लिवाइ लै गई। ब्वानें ब्वा ते अपने पति पै ते अँगूठी मांगिबे की कही। ब्वानें दूसरे दिनाँ अँगूठी मांगि लई। दिन में ब्वाइ नदिया की सैर कूं लाई। सोई जहाज में बैठारि ब्वाइ लै भाजी।

राजा के बेटा नें बड़ी सोचा बिचारी करी। अबु स्यांपु रानी की खोज में चल्यौ। म्वाँ राजा रानी के छै महीना के कौल करार है गए। ब्वानें सोची : स्यांपु, मूंसे औरु बिल्ली में ते कोई आवैगौ जरूरई। ब्वानें दूध की नांद भरि राखीं। स्यांपु म्वाँ पहुँच्यौ। रानी ते अंगूठी की पूछी। ब्वानें कही : अंगूठी तुलसी जी के थामरे में चिनि दई। स्यांपु नें आइकें कहि दई।

अब बे तीन्यों चले। एकु उड़न खटोला बनवायौ। मूंसे नें तुलसी पोली करी। बिल्ली अंगूठी लै भाजी। रानी ऐ उड़न खटोला में बैठारि कें लौटि आए।

म्वाँ ब्वा की मा बेटा के दुख ते रोइ रोइ कें अंधी है गई। तीनों अपने घर कूँ आए। काऊ नें जाइ कें कही : अरी डोकरी तेरे बेटा बहू लसकर के संग आइ रह्यौ ऐ। ब्वानें कही : मेरी आंखि खुलि जांगी तब जानुँगी। ब्वा की आंखि खुलि गईं। ब्वानें अपनौ बेटा छाती ते लगायौ।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन]
—संपादक के अपने संग्रह से।

---

२ पत्ति ई
† प्रण

५. तमोली की छोरी, घसखुदा राजा



(१)

एक सहर में ते एकु राजा और ब्वाको एकु बजीरु सिकार खेलिबे कूँ निकरे। उनके संग फौज-फाई ऊ चली। जब भौतु दूरि निकरि गए तब सबरी फौज पाई तौ पीछें रहि गई, राजा और बज़ीर अकेले रहि गए। चलत चलत वे एक सहर में पहुँचे। ग्वाँ एक पान बारे की दुकान पै एक स्त्री [1] कौ चित्तरु टंगि रह्यौ। राजा नें कही : भाई चित्तरु चित्तरुई ऐ। राजा नें ब्वा पानवारे ते ब्वा चित्तर के बारे में पूछी। ब्वानें ज्वाबु दियौ : जि चित्तरु एक तमोली की छोरी कौ ऐ। जा के बाप कौ जि परनु ऐ कि जो कोई कूआ-बाबरी ऐ धन ते उमगाइ देगौ, ब्वाई के संग जा अपनी छोरी की भामरि डारि दुंग्गो।

राजा नें अपनौ बज़ीरु अपने नगर कूँ भेज्यौ और ब्वाते कहि दई कि[2] सातौ खजानेन नें तू लदवाइला। बज़ीरु गयौ और गाढ़ा पै गाढ़ा खजानौं लदवाइ दीयौ। लाइकें सबरौ खजानौं उन कूआ-बाबरीन में डरवाइ दीयौ ; परि उनमें उत्तो ऊ न भई। अब राजा नें बजीर तौ अपने राज में भेजि दीयौ, अपनौ घोड़ा बेच दियौ। सबु दाम-दमरे ऊ ब्वा नें उनई कूआ-बाबरीन में डारि दीए। ब्वानें एकु रुप्या राख्यौ। ब्वा एक रुप्या[3] में ब्वानें एक खुरपी और एकु पसेला‡ मोल लीए। दिन भरि घासि खोदे। संजा कूँ बाजार में बेचि दे। जो पैसा ब्वाइ मिलें, उनमें ते आधेन ते तौ अपनौ पेटु भरै और आधेन नें कूआ-बाबरीन में डारि दे। जाई तरह बहुत दिनाँ बितंत है गए। एक दिनाँ बु एक ढौंड़* में घासु खोदिबे कूँ गयौ। ब्वा ढौंड़ के जौरैं ई एक साहूकार कौ घरु ओ। साहूकार जादी नें अपने झरोका में ते बु देख्यौ।

---

१ आस्तिरी २ कै

३ रुपिआ, रुपैया

‡ पसेला

* खंडहर

बाने ब्वाते पूछी : अरे तू कोऐ जौ इतनी सिदौसी* घासु खोदिबे कूँ चल्यौ आयौ ऐ। ब्वानें ब्वाते सबु किस्सा कहि दीयौ। साहूकारजादी नें कही कि रे तू बावरौ भयौ ऐ। जा तरह तौ तू सातौ जनम कुआ-बावरी ऐ नाएँ भरि सकतु। मैं बताऊँ सो कामु करि। कुआ-बावरी के जौरें चारि बीरन की रैंठानि ऐ। बे आजु राति कूँ निकरिंगे। एक आवैगौ सो छिरकाउ करि जायगौ,[1] एकु आवैगौ सो बिछैया बिछाय जायगौ। फिरि चारयौ जने मिलिकें म्वाँ सार-फाँसे खेलिंगे। तू म्वाँई दुबक्यौ रहियौ। जब बे आधी देर खेलि चुकें सोई तू हल्ला मचाय[2] कें उनपै अराइ परियौ‡ फिरि बे एक संग भाजिंगे। जो कछू उनकौ म्वाँ रहि जाय ब्वाइ तू उठाय[3] लीजो। जब बे ब्वाइ माँगें सोई तू उनपै तिरबाचा भरवाइ लीजो। बेई ब्वा कुआ बावरी से भरि दिंगे।

राजा नें जिही कामु करयौ। बीर जब भाजिबे लगे का सोई वु हल्ला मचाइ कें अरायौ। उनके हाथी दाँत के फांसे परे रहि गए। बे फांसे ब्वा राजा नें उठाय लीए। बीरन नें कही : भाई हमारे फांसे दै। ब्वानें कही : तुम इन कुआ-बावरीनऐं धन ते भरौ। उननें कही : अच्छा भाई सबेरे तक तौइ भए्ये मिलेंगे। ब्वानें तिरबाचा भरिवाइकें उनके फाँसे उनें लौटाय दीए।

सबेरें उठिकें देखें तो कूआ-बावरी धन ते उमड़ा लै रहे ऐं। कोई कहै मैंने भरे ऐं, कोई कहै मैंनें भरे ऐं। हौंत-हामत[4] जब खबरि परी कि भाई जा घसखुदा नें भरे ऐं।

---

१ जाइगौ
२ मचाइ
३ उठाइ
४ हौंत-हमात = होते-हुवाते = होते-होते

* जल्दी, तड़के ही

‡ परियौ—इसका एक रूप 'परियो' भी है, पर इन दोनों में सूक्ष्म अर्थ में अन्तर है। 'परियो' ग्रामीण भाषा में भी एक शिष्ट स्तर का शब्द है। 'परियौ' कुछ निम्न स्तर का। स्थल भेद से भी यह उच्चारण भेद है। 'परियौ' का सम्बन्ध 'स्त्री लिंग' से विशेष है, पर जैसे यहाँ, यह पुल्लिंग में भी आता है।

तमोली के पास खबरि पहुँची। तमोली नें झट्ट अपनी बेटी व्वा के संग करि दई। न व्वाइ कछू मालु दीयौ, न कछू असबाबु दीयौ। फकत एक धोवती पहराय कें रमानी करि दई। तमोली की छोट्टिया नें एकु रूमालु औरु दुबकाइ लयौ। औरु दोऊ जने चलि दीए।

(२)

चलत चलत जब भौत[1] दूरि निकरि गए तौ एक सहरपना के जौरें आए। सहरपना के बाहिर एकु बगीचा ओ। दोऊ ग्वाँ छांह में बैठि गए। छोट्टिया नें राजा ते कही : अब भूक तौ जोरु करि ई रही ऐ। तू जा और जा रूमाल ऐ बेचिकें कछू खाइबे कूं ला। परि एक बात यादि राखिओ। कोतवारि और कंजा के पाले मति परियो*।

अब राजा सहर में एक सराफ की दुकान पै पहुँच्यौ। सराफ़ नें रूमालु देखिकें अपने मन में सोची : भाई जौ जि रुमालु ऐसौ ऐ तौ जा रुमाल वारी जानें कैसी न होगी। भाई बु तौ लैंनी चाहिऐ[2]। सराफ नें राजा ते कही : भाई पहिलें जि बताइ कि तू याँ ठहर्यौ कहाँ ऐ। व्वानें कही कि जाई सहर ते बाहिर वारे बगीचा में ठहरे भये ऐं। सराफ नें कही : भैया ला पहलें रूमाल ऐ अपने भैया ऐ दिखाइ लाऊँ। बु रूमाल ऐ लैकें गयौ। थोरी देर में बु लौटि आयौ। औरु आइकें कही : भाई हमारौ भैया तौ नाहीं करतु ऐ। तू अपने जूतान नें बेचै तौ हम लै लें। व्वानें कही : भाई जूतान नें ई लैलै। सराफ नें कही : भाई ला जूतान नें अपने भैया ऐ दिखाइ लाऊँ। फिरि बु ग्वांते उन जूतान नें लैकें व्वाई बाग में आयौ। बाग में आइकें देखै तौ तमोली की छोट्टिया चाँद-तारौ सी बैठी ऐ। व्वाते कही : देखि तेरे मालिक पै बड़ी

---

१ व्हौत   २ चहिऐं

* यहाँ 'परियो' का ही उपयोग हो सकता है, 'परियौ' का नहीं। निषेधात्मक आज्ञा में यही रूप आता है। विधि का साधारण रूप 'परियौ' होगा।

बिपता परि गई ऐ। तू ब्वानें बुलाई ऐ। निसानी के काजें जूता भेजे ऐं। तमोली की छोरी नें सोची : जि कोथनारि कौ कंजा ऐ। जाके संग जाइबौ ठीक नाएँ। छोरी नें ब्वाते पट्ट नाहीं करि दई। सराफु लौटि आयौ।

लौटि कें आइकें ब्वाते कही : भाई हम नांइ तेरे जूतानने लेंत। अपनी अँगूठी ऐ बेचै तौ लै लैं। राजा नें कही अँगूठी ई लै लै। अँगूठी ऐ लैकें सराफ़ नें कही कि ला अपने भैया ऐ दिखाइ लाऊँ। बु म्वाँते फिरि ब्वा बागई में आयौ। आइकें ब्वानें कही कि री देखि अबकें तेरे मालिक नें जि अँगूठी भेजी ऐ। जौ अबकें तू न चलैगी तौ तोइ बु मरवाय देगौ। तमोली की बेटी अबकें ब्वाके संग चलि दीनी।

सराफ़ कौ ब्वाइ लैकें घुमाइ फिराइ कें अपने घर करि आयौ। खुदि लौटिकें दुकान पै पहुँच्यौ। दुकान पै जाइकें राजा ऐ व्वाकी अँगूठी लौटाय दई। औरु ब्वाते कहि दई : भाई हमारौ भैया तौ अँगूठी ऐ लैबे की नाहीं करतु ऐ। राजा लौटि आयौ।

लौटि कें देखै तौ म्वाँ ब्वाकी प्यारी ई न। ब्वानें बहुत बिल्लापु करयौ परि बिल्लापु करें ते होतु कहा ऐ। ब्वानें फिरि अपने खुरपी पसेला सम्हारे। घासु खोदै औरु पेटु भरै।

(३)

एक दिनाँ घासु बेचतु बेचतु बु ब्वा सराफ़ केई घर के नीचें पहुँच्यौ। ऊपर ते तमोली की बेटी नें एक चिट्ठी डारि दई। और थोरी सी असरफी डारि दई। ब्वा चिट्ठी में लिखि रही : तू अब जा घसखुदा के भेस ऐ तौ छोड़ि और मन्यारु* बनिकें मेरें जौरें आ। राजा नें चूरी मोल लईं औरु मन्यारु बनिकें सराफ़ के घर में घुसि गयौ। छौट्रिया नें ब्वाते कही : चूड़ीन नें तौ इतमें धरिजा और जा अपनी बकुचिया में जवाहिराति भरि लैजा। औरु

---

*मनिहार

मेरे जा घर के पीछें जो ढौंडु परयौ ऐ, ब्वाइ तू मोलि[1] लै लै। म्वाँ मकानु बनवाइ। रुई कौ व्यौपारु करि। रुई की भौतुसी गाँठि लैकें मेरी छत्ति तक सीढ़ीन के बतौर चिनि दीजौ। फिरि मैं एक दिना उतरि आउँगी और भाजि चलिंगे। द्वै घोड़ाऊ खरीदि लीजौ।

राजा नें ऐसौई करयौ। ब्वानें जो द्वै घोड़ा मोल लीए उनपै द्वै-चार चोट्टान की नजरि ई। हौंनी बलमान एक दिनां चोट्टा उनें चुराइबे कूँ आये। ब्वाई बखत बु छोट्रिया उतरी। एकु चोट्टा घोड़ान नें खोलि रह्यौ। छोट्रिया नें समझी कि जि मेरौ खसमुई ऐ। झट्ट बु आइकें एकु घोड़ा पै बैठि गई। एक घोड़ा पै चोरु चढ्यौ और बु ब्वाइ लै भाज्यौ। आगें जब भौतु दूरि निकरि गए तौ उजीतौ† भयौ। रानी ऐ खबरि परि गई कि धौकौ है गयौ।

अब बेचारयौ चोट्टा लड़िबे लगे। एकु कहै कि जाइ मैं लुंगो और एकु कहै कि मैं लुंगो। तमोलीजादी नें कही : मैं एकु तीरु यांते छोड़तिऊ जो कोई ब्वा तीर ऐ पहिलें लै आवैगौ ब्वाकी तौ मैं है जांगी[2]। जू[3] दूसरे नम्बर पै आवैगौ बु मेरे गहनेननें लै लेगौ। जो तीसरा आवै ब्वाकूँ एकु घोड़ा औरु जो चौथा आवै ब्वाकूँ एकु घोड़ा मिलैगौ। चोट्टा राजी है गए। तीरु मारयौ। सब ब्वाइ लैबे कू भाजे। इतमें झट्ट तमोलीजादी दुबकिकें भाजि निकरी। चौट्टा लौटे तौ रहि गए टापत ई।

(४)

आगें आगें चली तौ एकु सिपाई पायौ। सिपाई पै बेड़ी-हथकड़ी अ ए। सिपाई नें सोची : भाई जि खूबु घर मढ़यौ। सूनी स्यौरती पाई। झट्ट बु घोड़ी पै ते कूद परयौ। रानी ते पूछी कि री तू को ऐ। ब्वानें कही कि रोटीन की दुखियां ऊँ। सिपाही नें कही कि : चलि हमारे घर चलि। ब्वानें कही : चलि। फिरि

१ मोल
२ जाँऊँगी
३ जो
प्र काश

ब्वा रानी नें पूछी कि जि कहा ऐ। ब्वानें कही : बन्द-पास ऐं। ब्वानें कही कि मोइ पहिराइ कें दिखाओ। सिपाई नें कही कि ला मैं ई पहर तूँ। तू देखि लीजौ। ब्वानें हथकड़ी बेड़ी पहिर लईं। रानी नें झट्ट गोला-लाठी दै कें म्वाईं डारि दीनों। औरु खुद आगें बढ़ि चली।

आगें जाइ कें एक गड़रिया के पैर पै पौंहची। गड़रिया नें वु अपने जौरें बैठारि लई। ब्वाते कही : तू मेरी बहू हैजा। ब्वानें कही : मैं भौतु भूखी प्यासी ऊँ। पहलें मेरे काजें खाइबे पीबे कूं कछू ला। गड़रिया कौ रोटी लैंबे चल्यौगौ। ब्वानें पीछें ते कहा कामु करयौ कि ब्वाके पैर में आगि दै दई औरु खुद आगें बढ़ि गई।

आगें चलिकें ब्वानें मर्द कौ भेसु बनायौ। एक राजा के यां जाइ कें बु पहुँची। राजा नें पूछी : भाई तू कहा कामु कर सकतु ऐ। ब्वानें कही कि जो कामु काऊ पै न होइ ब्वाइ मैं करि सकतूँ। औरु एक लाख टका रोजु मेरी नौंकरी ऐ। राजा नें बु राखि लीयौ।

ब्वा सहर कौ जि काइदा ओ कि जो कोई रातु में मर्तु काओ, ब्वाइ धौंताँइ दागु दियौ जातो। परि राति में आइकें परी ब्वा ल्हासें विकरन करि जाऔ करतीं। एक दिन राजा कौ बेटा मरयौ। राजा नें लख टाकिया बुलवायौ। औरु ब्वाते गाम बाहिर ल्हास ऐ रखाइबे की कही। बु गाम ते बाहिर गयौ। म्वाँई ल्हास परी। जौरें ई बु लखटकिया दुबकि गयौ। राति कूँ परी आईं। उननें आइकें बु राजकुमारु जीमतौ करयौ। औरु ब्वाके संग सार-फासें खेले औरु नांची कूदीं। एक संग लख-टकिया उनपै अर्रायौ। परी ब्वाइ जीमतौई छोड़िकें डरके मारें भाजि गईं।

सबेरें ई ब्वा जिन्दे राजकुमार ऐ लैकें बु लखटकिया राजा के जौरें आयौ। राजा बड़ौ खुस भयौ। और बु देस दीमानु बनाइ दीयौ और ब्वाके रहिबे कूँ एकु महलु दै दीयौ।

(५)

देस-दीमान के घर के सामुईं बढ़ईन कौ परु ओ। एक दिनाँ दीमान नें उनते कही कि कल्लि फलाने फलाने बखत पै तुम हमारी बहूनें भीतर बुलाएऔ। बढ़ई दूसरे दिन म्वाँ भीतर पहुँचे। म्वाँ बुही दीमानु अपने मर्दाने भेस ऐ उतारि कें औरु बैठयौ। बढ़ईन ते छोटृया नें कही कि मेरी ई सूरति की पांच-चारि पूतरी बनाऔ औरु द्वै दिना में दै जाऔ।

बढ़ई द्वै दिना में पूतरी बनाइ लाए।

देस दीमान नें बु पूतरी हर एक चौराहे पै गढ़वाइ दईं। सिपाहीन नें हुकमु दै दीयौ कि जो कोई जिन पूतरीन ते आइकें बतरावै ब्वाइ मेरे जौरें पकरि लाऔ। कैऊ दिना पूतरीन नें गढ़ें भएं है गए।

एक दिनाँ तौ बु सराफु आयौ औरु व्वा पूतरी ते बतराइबे लग्यौ। दीवान नें बु जेलखाने में डरिवाइ दीयौ। फिरि बु सिपाई आयौ। फिरि गड़रिया आयौ। बे ऊ कैदखाने में डरवाइ दीए। फिर एक दिना बुही घसखुदा राजा आइ निकरयौ। देस दीमानु ब्वाइ अपने घर कूँ लिवाइ गयौ। बड़ी खातिरदारी करी।

दूसरे दिनां देस दीमान अपने ब्वाई पहले इस्तिरी के भेस में आइ गयौ। राजा(घसखुदा) और रानी दो ऊरोए। भौतु देर तक बे दोऊ गरे ते मिले रहे। दूसरे दिनां देस दीमान नें अपने राजा के यां जाइकें ब्वाते सब कच्चौ दास्तानु कहि दीयौ। राजा बड़ौ खुस भयौ औरु भौतु सौ मालु असबाबु दैकें बे दोऊ बिदा करि दीए।

अपने नगर में आइकें बु फिरि राजा है गौ औरु बु रानी है गई।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन

—सम्पादक के संकलन से ।

६. तीन चोर और एकु राजा



एक दिनाँ तीनि चोर चोरी करिबे कूँ चले। सहर कौ राजा व्वाई बखत गस्त लगाइबे कूँ भेसु बदलि कें निकर्यौ। व्वानें तीन्यों चोट्टा देखे। राजा नें उनते जाइ कें पूछी : भाई तुम कोऔ ? उननें कही : भाई हम चोर ऐं औरु चोरी करिबे कूँ आए ऐं। फिरि उननें राजा ते पूछी : औरु तू को ऐ भाई ?' राजा नें कही : 'मैं ऊ चोरु ई ऊँ ?'

फिरि राजा नें पूछी : 'भाई तुम में गुन कौन कौन से ऐं ?'

एक नें कही : मैं भरि नजरि तारे मांऊ देखिदूँ तौ तारे खुल जाँय।

दूसरे नें कही : मैं धरती से सूँघि कें बताइ सकतूँ कि ज्याँ धनु ऐ।

तीसरे नें कही : मैं जा आदिमी ऐ देखि लुंगो व्वाइ सौ बर्स पीछेंऊ पहिचानि सकतूँ।

तीन्यों चोट्टान नें अपने अपने गुन बताइ दीए। अब बिननें राजा ते पूछी : भाई नए चोर अब तूहू बताइ कि तोपै कहा गुन ऐं ? राजा नें ज्वाबु दीयौ : जौ इतमें नारि हलाइ दूं[१] तौ फाँसी पै चढ़ाइ दूं और जौ[२] इतमें हलाइ दूं तौ फाँसी पै ते उतारि दूं। और जो तुम मोइ अपने संग लेउ तौ चोरी के माल में ते आधौ मालु मैं लुंगो।'

चोट्टान नें सोची : भाई हमें फांसी ते जादातर काम परतु[३] ऐ। जाइ लिवाइ चलौ। झट्ट बुह्र अपने संग लगाइ लीयौ।

राजा उनें अपने ई खजाने में लिवाइ गयौ। पहले नें तारे खोलि दीए दूसरे नें धनु बताइ दीयौ। सब धन ऐ लैकें चोट्टा

---

१ दऊँ १ जो

३ पर्तु = पत्तु

निकरि आए। राजा तौ उलकैयां-बिलुकैयां दै कें निकरि आयौ। औरु अपने सिपाईननें इसारौ दैकें बे तीन्यौ चोट्टा गिरफतार करवाइ दीए।

दूसरे दिनाँ राजा की कचहरी जुरी। तीन्यौं चोट्टा दरबार में आए। अब द्वै चोट्टान नें तीसरे ते कही : भाई हम तौ अपनौ कामु करि चुके। अब तू अपनौं कामु करि औरु बताइ बु रातिबारौ कहूँ दीखतु ऐ। ब्वानें देखि-भारि कें कही कि होइ न होइ जि राजा ई ओ।

अब राजा नें फाँसी कौ हुकमु सुनाइ दीयौ। चोरन नें ब्वाते कही : राजा हमने तौ तीन्यौ जने अपनौं कामु करि चुके। अब तू अपनौं कामु करि। राजा नें झट्ट अपनी नारि इतमें हलाइ दई। सोई फाँसी हटि गई।

चोरी कौ आधौ मालु तौ राजा नें अपने खजाने में डरवाइ दीयौ और आधौ चोट्टन नें दैकें उनते कही : जाऔ अब कबऊ ऐसौ मति करियौ।

[सं० क० चन्द्रभान, लोहबन

—सम्पादक के संग्रह से।

———

७. बेदान सहर



(१)

एक नगर में एक साहूकार और साहूकारनी रहँत ऐ। एकु उनको छोरा ओ। सबु तरह के चैन-चान व्वाके ज्याँ। ठाकुर जी की माया, कहूँ धूप कहूँ छाया, व्वा साहूकार पै बुरौ समैयौ आइगौ। घोड़ा, हाथी, पल्टन सबु खोइ गए। एक घोड़ा, जाकौ नामु 'सूर्जु कुमरु' ओ रहि गयौ। ज्याँ तक नौबत आई क वे तीनों प्रानी भूखन मरन लगे। साहूकार नें कही : 'देस चोरी परदेस भीक' ऐ। कहूँ अन्त चलौ। तीन्यों प्रानी व्वा घोड़ा ऐ संग लैके चलि दए।

आगें आगें, चलत-चलत एक बियावान बनखड़ में पहुँचे। म्वांई उननें एक झौंपड़ी छाई। साहूकारनी और उनकौ छोरा तौ म्वाँई रह्यौ करै। और साहूकार रोज सिकार खेलिबे कूँ जायौ करै। एक दिनाँ साहूकार सिकार खेलिबे कूँ गयौ। व्वाइ बहुत देर है गई। इतमें साहूकार जादे के प्रान निकरें जांइ भूक के मारें। इतने में साहूकारनी ऐ एकु चेंटा दिखाई परयौ। व्वानें कहा काम करयौ कि म्वाँ एक गड्ढौ बनाइ दीयौ। चिटावरि (चिंटावलि) आवै सो व्वा गड्ढे में चामर और चीनी धरि-धरि जांइ। चेंटा चीनी-चामर धरि कें चले गए। रानी नें ईंधन बीन्यौ। चामर बनाए। व्वा दिना साहूकारै कोई सिकार न मिली सो रीतौई लौटि आयौ। साहूकारनी नें कही : कोई बात नांऐं। भोजनु तैयार ऐ। साहूकार नें पूछी कि जि भोजनु कहांते आइ गयौ। रानी नें ओर ते अन्त तक सब बात साहूकारै बताइ दई। साहूकार नें सुच्या बाचा ते भोजन करे। जब बु भोजन कर चुक्यौ तब साहूकारनी नें कही : 'चिटावरि' कौ हमनें नोंन-पानी खायौ ऐ। इनते बचाइ कें घोड़ा ऐ लै जायौ करौ।

दूसरे दिना साहूकार घोड़ा पै असवार भयौ औरु चिटावरि के संगई संग परि लयौ।

(२)

दर कूँच दर मंजिल साहूकार व्वा चिटावरि के सहारें-सहारें चल्यौ जाइ। जहाँ चितावरि कौ ठोकु* आयौ तौ जाइकें कहा देखै कि एक सहस मन की पटिया लगि रही। व्वाके ऊपर व्वा सहर कौ नामु लिखि रहयौ। सहर कौ नामु 'बेदान सहर' ओ। साहूकार नें कहा कामु करयौ क घोड़ा की टापन ते वु पटिया गेरि दई। भीतर देखें तो नींचें की ओर सिड्डी चली गई ऐं। साहूकार सिड्डिन पै उतरतु उतरतु एक सहर में पहुँच्यौ। बाजारु लग रहयौ। चौक कौ बाजारु और व्वामें कँगूरनदार घर। बजार की दुकानन पै सबु सामान जहाँ कौ तहाँ सज्यौ-सजायौ परि एक बात बड़े अचम्भे की ई। ऐसौ तौ सुन्दरु सहरु परि म्वाँ कोइँ मांसु न मतौ। सहर ऐ देखि कें साहूकार मोहिगौ।

जो कछू व्वाइ भायौ सो व्वानें खायौ और अपने घोड़ाऊ ऐ खबायौ। पेट्टु भरि गयौ। सुस्ती कछू आइ गई। झट्ट एक पेड़ ते तौ घोड़ा बांध दियौ और खुदि घोड़ा की गर्दनी बिछाइ कें पट्ट सोइगौ।

बु सहरु एक दाने कौ ओ। व्वानें सब आदिमी खाइ लीए ऐ जो कोई म्वाँ आमतु का ओ व्वाउ ऐ खाइ लैंतो। साहूकार जादौ तौ म्वाँ सौइ रहयौ। इतने ई में दानों म्वाँ आइगौ। व्वाइ आदमी की खसबोई आई। झड्डु व्वाकी निगाह[१] साहूकार पै परि गई। मारें-मारें थप्पड़न के दाने नें साहूकार कौ कामु तमामु करि दियौ। साहूकारै मारि कें वु घोड़ा माऊँ झपटयौ। परि घोड़ा जोरदार ठहरयौ। झट्ट जेबरा ऐ तुराइकें भाजि निकरयौ।

चेंटा व्वा दिना रीते ई आइ रहे। दाने नें उनको ऊ रस्ता बन्द करि दीयौ। घोड़ा की टापन ते काऊ की टांग टूटी, काऊ के प्रान निकरे। चेंटन ने रीते आमत देखकें साहूकारनी नें अपने

१ निघा

* छोर, अन्त

छोरा ते कही कि आजु बात कहा ऐ कि चेंटा कछु लाइ नाऐं रहे। और आजु तौ तेरे बाप ऊ अबई तक नांइ लौटे। साहूकार जादौ अपने पिता ऐ देखिबे चल्यौ। आगें जाइ कें ब्वानें देख्यौ कि घोड़ा नंगी पींठ भज्यौ चल्लौ आइ रह्यौ ऐ। ब्वानें घोड़ा तौ लीयौ पकरि और अपनी अम्मा के जौरें आइकें कही : अम्मा बाप तौ मेरे कहूँ मारे गए। नइँ तो घोड़ा कैसें आइ जातौ। परि अम्मा अब जा औखा* के समैया में धीरु धरि। मैं जाई घोड़ा पै चढ़ि कें पिता कौ पतौ लगाबे जातूँ।

(३)

साहूकार जादौ घोड़ा की पींठि पै असवार भयौ और ढाल-तरवार अपने संग में लई। घोड़ा की पहली टापन के खोजन पै ई बु चल्तु गयौ। चल्त चल्त जब बहुत दूरि निकरि गयौ, तौ ब्वाइ बुही पटिया ब्वा बेदान सहर के दरवज्जे ते लगी पाई। गेरि ब्वा पटिया ऐ, बु भट्ट ब्वा सहर में भीतर घुसि गयौ। पेड़ के नीचें ब्वाइ अपने पिता के कपड़ा परे दीखे। खून-खच्चर है रह्यौ।

इतने में दाने ऐ फिरि आदिमी की खसबोई आई। ब्वानें अपने मन में कही आजु फिरि कोई दावागीरु आइ गयौ। दानौ ब्वा छोरा की ओर आयौ। घोड़ा ऐ देखत खैम दाने के तन-बदन ते आगि लगि गई। बु पहलें घोड़ा पै ई झपट्यौ। कै तौ दानौ घोड़ा पै झपट्यौ सोई ब्वा साहूकार जादे नें ब्वाकें तरवारि कूँ चि दई। घोड़ा नें कछू टाप चलाईं, कछू म्हौ चलायौ। साहूकार जादे नें तरवारि चलाई। जादा किस्सा बढ़ाइबे में कहा धर्यौ ऐ दानौं गैर होस हैकें धरती पै गिरि पर्यौ। साहूकारजादे नें अध-मर्यौ दानौं एक महल की कोठरी में बंद करि दीयौ। फिरि भट्ट अपनी मा के पास आइ गयौ।

(४)

साहूकार जादे नें सारी बात आइकें अपनी मा ते कहीं। फिर दोऊ मा-बेटा ब्वा सहर के काजें चलि दीए। आइकें दोऊ

* आपत्ति

व्वा सहर में रहिबे लगे। साहूकार जादौ रोजु सिकार कूं जायौ करतु ओ। दोऊन में जानि बगदि आई। अब दाने नें कहा चालाकी करी कि व्वा साहूकारनी ते आड़-काड़ लगाई। व्वाते कही कि री तू मोइ जा बन्दि में ते छुड़ाइ लै। साहूकारनी नें कही कि तू मोइ भच्छन करि जाइगौ। व्वानें तिरबाचा भरिकें रानी कूं भीतर बैठारि दई कि मैं तोइ न खांगो। हौंनी आदिमी पै सबु काम करवाइ लेति ऐ। साहूकारनी बातन में आइ गई और व्वा दाने की बन्दि छुड़ाइ दई।

व्वा में ते छूटत खैम व्वानें साहूकारनी ते कही कि अबतौ मैं तोइ खांगो। साहूकारनी नें कही कि रे तू कहा कहँतु है। तू तो बचन दै चुक्यौ ऐ। दाने नें कही कि जौ तू मेरे घाइन नें धोवै और अच्छे करै तौ तौ तोइ छोड़ि सकतूं। साहूकारनी नें जि बात मानि लई। दाने के घाव अब अच्छे हौंत आयें। जब व्वाकौ बेटा सिकार खेलिकें आवै तो व्वाइ झट्ट बन्द करि दे। धीरें धीरें हौंत-हामत दोऊन में रीति है गई। साहूकारनी व्वाइ चाहिबे लगी।

बार बार दानौ कहै कि मैं अब तोइ खांगो। और जौ तू बचिबौ चाँहति ऐ तौ अपने बेटाऐ खाय लियै। साहूकारनी व्वाते कहि दौ करै कि जौ मेरे बेटा ऐ तू मेरे ही अगार खाइगौ तौ तौ मोइ बड़ौ तर्सु आवैगौ। जो तू बाइ मरवाइबोई चाँहतु ऐ तौ कहूँ अन्त ई मरवाइ दै। दाने नें जि बात मानि लई। और व्वाते कही कि जैसें मैं कहूँ वैसे ई करियो।

(५)

दाने नें कही कि तू अपनी आंखिन में दर्द कौ मूड़ौ बनाइ। बेटा तेरी पूछै तौ तू कहियो कि सात समुंदर पार एक अखैवरि कौ पेड़ु ऐ। जौ तू व्वाइ लै आवै तौ मेरौ दर्दु बन्द होइ। व्वाने ऐसौई करयौ।

बेटा नें झट्ट लै ढाल तरवारि, है घोड़ा पै असवार, चलिबे की तैयारी करि दई। समुंदर की पारि पै जब बु पहुँच्यौ तौ घोड़ा और बु दोऊ थर्सलि गए। सोई व्वानें घोड़ा तो एक पेड़ ते बाँधि दीयौ और अपु बाकी छांया में सोइ गयौ।

ब्वा पेड़ पै 'गड़पंछी' कौ एक घोंसला औ । ब्वामें बच्चा रहँत ऐ। गड़पंछी अपने बच्चन कूँ चुगौ लैबे चले गए और अपने बच्चन नें म्वांई छोड़ि गए ए । राति कूँ साहूकारजादे की आँखि खुटी तौ ब्वानें कहा देख्यौ कि एक स्यांपु ब्वा पेड़ पै बच्चन नें खाइबे कूँ चढ़ि रह्यौ ऐ और बच्चा डर के मारें चीं चीं चीं चीं करि रहे हैं । ब्वाइ आइगौ तसु । ब्वानें झट्ट अपनी तरवारि निकारि कें स्याँप के तीनि पेंड़ा करि दीए ।

जब गड़पंछी अपने बच्चन कूँ चुगौ लैकें आए तौ उननें म्वां बु साहूकारजादौ देख्यौ । पंछीन नें अपने मन में अन्दाजु लगायौ कि हमारे बच्चन कौ जिहि हत्यारौ है । गड़पंछी चुगौ अपने बच्चन नें दैबे लगे । गड़पंछिनी तौ म्वांई चुगौ दैबे कूँ रहि गई और गड़पंछी एक पत्थर की पटिया लैबे कूँ चलौ गयौ । ब्वानें सोची क पटिया लाइकें जा आदमी के ऊपर डारि दुंगो । सोई जि मर जाइगौ ।

बच्चा चुगौई न लें । उननें भगवान ते बीनती करी : "भगमान कैतौ जा साहूकार जादे ऐ बचाइ कै हममें बोलिके की तागति दै ।" बच्चन की जा बीनती ते ठाकुर जी कौ सिंहासन हालिबे लग्यौ । ठाकुर जी नें नारद जी थांग लगाइबे कूँ भेजे । उननें आइकें बच्चन कि जि दसा देखी और जाइकें ठाकुर जी ते सबु हाल-चाल कह दीयौ । ठाकुर जी नें उन बच्चन कूँ एक घंटा के काजें बोलिबौ दीयौ । बच्चन नें कही : "जानें तौ हमारे प्रान बचाए हैं । जाइ मति मारौ । जो कछू जाकौ कामु होइ ब्वामें मदति करौ । गड़पंछनी नें अपने मालिक तें कही कि अबई सिला मति सरकैयौ । औरु ब्वाते बे सब बात कह दई जो बच्चन नें ब्वाते कही काईं ।

फिर दोऊ पंछिन नें बु जगायौ । ब्वाइ भूकौ जानि कें ब्वा कूँ एक दुकान पै ते खाइबे कूँ लाए । घोड़ा कूँ घास लाए । फिरि बिननें ब्वाते ब्वाकौ हालु पूछयौ । ब्वानें सबरी बात अर्थाइ दई । पंछीन नें कही कि बेटा तेरे घर में कोई दूतु लग्यौ भयौ ऐ नईं तौ अखैवरि कौ पेड़ आंखिन कूँ ? साहूकार जादे नें कही कि मैंने

अपने देस में कोई दूत नाइ छोड़यौ। गढ ने कही कि मैं तोइ पहुँचाइ दुंगो और वापिस ऊतौ आंगो परि व्वा पेड़ पै बड़े बीछू और स्यांपु लिपिटे रहँत ऐं। गढ़ नें साहूकार जादौ और घोड़ा पार उतारि दीने।

सात समुँदर पार जाइकें गढ़ नें कही कि देखि बे रहे पेड़। साहूकार जादे नें घोड़ा तौ पेड़ के नीचें छोड़यौ और आपि कूदि कें व्वा पेड़ की डुगलैया पै चढ़ि गयौ। दूधु निकारि कें झट्ट बु अपने घोड़ा की पीठि पै कूदि परयौ। गड़पंछी व्वाइ बैठारि कें अपनी पीठि पै झट्ट लै आऔ। गड़पंछी नें अपनों एकु बड़ो बेटा व्वाके संग करि दीयौ। गड़पंछी के बच्चा की पीठि पै सवार है कें झट्ट बु अपके नंगर में आइ गयौ। औरु अपनी मा ते कही कि लै मा अखैवरि कौ दूधु। दूध ऐ दैकें बु तौ सहताइबे चल्यौ गयौ। साहूकारनी नें दाने ते कही कि लै बु तौ बचि आयौ। दाने नें व्वाते कही कि जौ तू अपनी खैरि चाहंति है तौ फिरि आंखन कौ मूड़ौ बनाइ और अबकें सेरनी कौ दूधु मगाइबे की कहियो।

(६)

नाहर की मांदि पै साहूकार जादौ पहुँच्यौ। नाहर और नाहरी तो जंगल में चरिबे कूं गए बच्चा रहि गए। काऊ नें व्वा बनी में आगि लगाइ दई। आँच में ते व्वानें बच्चा निकारि लए। नाहर-नाहरी दूँकत भए आए। उनने समझी कि जाई नें बच्चा पकरिबे कूँ आगि दै दई ऐ। सोई वे साहूकार जादे पै अरॉए। बच्चन नें कही कि हम जाई नें बचाए ऐं। नाहर-नाहरी नें व्वा ते आइबे कौ कामु पूछयौ। व्वानें कही मोइ नाहरी कौ दूध चहियतु ऐ। झट्ट नाहरी नें अपनों एकु बच्चा अपने नीचें लगायौ औरु व्वाइ दूधु दै दीयौ।

नाहर नें अपनों एकु बच्चाऊ व्वाके संग में खँदै दीयौ। अपनी मा ऐ जाइकें व्वानें दूध दै दीयौ।

जब दाने नें कही कि एक जगह औरु बची ऐ। एक सहर में 'अमरजलु' ऐ। व्वाइ अबकें तू मँगाइ। बेटा ते व्वानें अमर-जलु

लाइबे की कही। ब्वानें झट्ट शेरनी कौ बच्चा और गड़पंछी के बच्चा तौ संग में लै लिए और चलि दीयौ।

(७)

गड़पंछी कौ बच्चा अपनी पंखन ते साहूकारजादे की छाया कर्तु जाइ और संग में नाहर ढूंकतु जाइ।

रस्ता में एकु सहरु परतु ओ। ब्वाँ की राजकुमरि ने जि परनु ठानि लीयौ कि जाकी पंछी छाँह करत जांगे, ब्वाई के संग मैं ब्याहु करुंगी। ब्वाकी नजरि ब्वा साहूकारजादे पै परि गई। ब्वानें अपने बाप ते कहिकें बु पकरवाइ मँगायौ। राजा नें बु झट्ट अपनी बेटी के जौरें भेजि दीयौ। ब्वानें अपने मन की करना साहूकार-जादे के अगार भाकि दई। ब्वानें कही कि मैं अमरजलु लैबे जाइ रह्यौ ऊँ। लौटिके बात करुंगो। अमरजलु की रखबारी पै स्यांप रहँत ऐ। नाहर की अवाज सुनिकें जीव-जंतुर भाजि गए। ब्वानें झट्ट एकु लोटा अमरजलु ते भरि लीयौ। और स्वाँते लौटि आयौ।

लौटिकें बु राजा के महलन में पहुँच्यौ। राजकुमार ते ब्वानें अमरजलु लाइबे की सारी बात कहि सुनाईं। लोटा ब्वानें दिवाल में धरि दीयौ औरु आराम करिबे लग्यौ। राजा की बेटी नें अमरजलु तौ निकारि लीयौ औरु खाली पानी भरिकें धरि दीयौ। साहूकारजादौ दूसरे दिना अपनो मा के जौरें आयौ औरु अमरुजलु दै दीयौ।

साहूकारनी नें दाने ते कही कि जि तो ब्याँऊ ते बचि आयौ। दाने नें कही कि जाइ कैसेऊँ मरवाइ। फिरि हम और तुम दोऊ बेखटके मौज करिंगे।

ब्वानें अपने बेटा कूँ भोजन बनवाए। दाने नें 'मध' के घड़ा मँगवाए। साहूकारनी ते ब्वानें कही कि तू अपने बेटा ऐ मध के प्याले भरि भरि कें प्याइ। और फिरि मैं जाइ मारुंगो।

साहूकारनी नें ऐसौई करयौ। जब बु नसा में चूर हैगौ तौ बु एक पलंग पै गिरि पर्यौ। दाने नें भीतर तेई कही कि अब जाइ हिरिं कें खाट ते बाँधि दै। पाँइन ते मूँड़ ताऊँ ब्वानें अपनौ

बेटा कसि दीयौ। बेटा नें पूछी माँ जि कहा करति ऐ। व्वानें कही बेटा चुप्पु-चापु सोइ जा।

दानों निकरयौ। व्वानें दै थाप दै थाप मचाइ दई। नोंहन में लोहे की फाँस ठोकि दई। बेटा मरि गयौ। नाहर के बेटा, पंछी के बच्चा और साहूकारजादे की ल्हास ऐ दानों समुंदर में बहाय आयौ।

(८)

दोऊ बच्चा ल्हास की रच्छा करत करत पारि तक लै आए। राजा की बेटी महल पै ते देखि रही ई। व्वाने अपने नोंकर भेजिकें ल्हास मँगवाइ लई। ल्हास अचक-पचक खाट पै धरि दई। मेख निकारीं। अमरजलु व्वाके सरीर पै छिरक्यौ। मुँह में डार्‌यौ, बु झट्ट जो पर्‌यौ।

व्वानें मा की यादि करी। राजकुमरि नें कही कि अबतो व्वाइ लोहू की प्यासी ऐ भूलि जा। साहूकारजादे नें कही कि एक पोत मैं म्वां जांगो तौ हतु।

सेर के बच्चा ते व्वानें कही कि देखि मैं तो मारुंगो दाने ऐ और तू मेरी व्वा दुष्टिनी मा ऐ मारि दीजो। दोऊननें दोऊ मारि दए। दोऊन की ल्हास एक संग बाँधि कें समुंदर में बहाय दई।

लौटि कें व्वाकौ राजकुमरि ते व्याहु भयौ। और दोऊ खूब अमन-चैन ते रहिबे लगे।

[सं० क० चन्द्रभान : लोहबन
—संपादक के संग्रह से।





परिशिष्ट १



शब्द–कोष

[यहाँ पर कहानियों में आये विशेष शब्द और उनका उन कहानियों में प्रसंग-प्रयोगार्थ दिया गया है। यह प्रयोगार्थ साधारण प्रचलित अभिधार्थ से भिन्न भी मिलेगा।]

अ

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
३५	२०	अकलि (अक्ल)	बुद्धि
१२१	३	अकलिवर	अक्लमन्द, बुद्धिमान
६६	१२	अखैबरि	अक्षयबट
१२	१५	अगार	आगे
१३	१६	अचंभे	आश्चर्यजनक बातें
२१	१	अचम्भौ	आश्चर्य
६२	४	अजामकई	अचानक ही
३३	१४	अंड़िया	सूत कातने पर तकुआ पर जो सूत की सूची के आकार की पिंडी बन जाती है, उसे अड़िया कहते हैं।
५१	१६	अठवारेनु (बहुवचन)	आठ दिन, सप्ताह
१४	६	अन्तरधान	लुप्त
१००	४	अधवर (अधपर, अधभर)	बीच में ही, आधे मार्ग में ही,
३४	१०	अपुढ़ारें	स्वयं
५२	१५	अबेरे	देर से, विलम्ब से
६६	१६	अरघु (अर्घ्य)	स्वागत में सत्कारार्थ जल ढालना
७६	५	अरथु (अर्थ)	अभिप्राय
२४	२४	अरसा	समय
४४	५	अर्राइ	एक दम घुस पड़ा

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
६	१६	अस्तिरी (स्त्री)	स्त्री
४०	६	अस्थावा (स्थान)	स्थान
५५	१०	अहवालु (हाल)	दशा
३५	१०	अहेरिया	पक्षियों की आखेट करने वाला
३	१२	आँचर (अञ्चल)	ओढ़नी के सामने का भाग, स्तन
८२	४	आँट	[धोती का कटिस्थ भाग जिसमें रुपये-पैसे लपेट कर रख लिये जाते हैं।] धोती को और ऊपर चढ़ाकर और कस के।
२१	१०	आँटी	आँट
२६	४	आमनई	आने ही (न दे) ['आना' क्रिया से]
४३	१७	आलीसान (आलीशान)	भव्य
७४	१०	आले-तीते	भीगे, आर्द्र
३०	१४	आव	चमक
११	७	औरतबानी	वैयरवानी, स्त्री

इ

२४	८	इतेकई	इतने ही
६१	४	इतै	इधर

उ

१०१	२०	उघरनी	खुलनी ('खुलना' क्रिया से)
३६	१६	उचेलि	उखाड़ कर
११२	७	उझकन	झाँकने की क्रिया
१२६	१६	उलाइत	शीघ्रता
२०	१५	उलाइतौ	शीघ्र ही
६६	२०	उल्टाबाटुई	लौटा बाट ही, जैसे जाना वैसे ही लौट आना
३६	६	उसास	उच्छ्वास
१२४	२६	उर्सि	घुसेड़ कर, बलात प्रवेश
११	७	ऊँ	हूँ

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
		ऐ	
६२	७	ऐलाजु (इलाज)	उपाय, चिकित्सा
		ओ	
२१	१६	ओंघ	नींद
४४	२४	ओझिल	ओट, छिपाव
१६	२२	ओट	आड़, परदा
७८	११	ओटक	ओट
		औ	
५६	१६	औखा	संकट
११४	१३	औंधि जाय	उलटि जाय
५६	१८	औहँड़ौ	ऐंड़ौ, नकब
		अं	
४६	१२	अंजल-पानी	१ अंजलि भर जल, २ अन्नजल (जल पानी दुहराया गया है)
६	२४	अंत	अन्यत्र
४५	१७	अंसटपाटी	खटपाटी
		क	
४५	१७	कच्चंद	नितान्त कच्चा
६१	५	कतना	लोहे का पला
७०	२२	कनास	वध करने वाले
१००	१६	कन्नी	सबसे छोटी उँगली
३७	२०	करारे है गये (मुहा०)	बहुत लाभ हो गया
१३	२	कल	चैन, शान्ति
१२१	२६	कलींदौ	तरबूज़
१६	१६	कलेसु (क्लेश)	कष्ट, उपद्रव, झगड़ा
४२	२२	कसबौ	कस्बा
७५	२	कसालौ	कठिनाई

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
११४	७	कसिंया	मिट्टी का छोटा पात्र (जल भरने का)
६२	३	कसोड़	टोह, खोज, अनुसंधान
१६	२५	काजें	निमित्त
६७	२६	काँसों	भोजन का थाल (परोसा हुआ)
६८	२६	किलवाइ दिंग्गें	('कीलना' क्रिया से) जादू-टोना से अपेक्षित गुण पैदा करवा देना
११७	७	किल्लायौ	चीखा
३२	२५	किस्सा खोरी	झगड़ा
११२	२	कुठीला	अन्न भरने के लिए मिट्टी का बना वृहदाकार माट (पात्र) जिसमें ऊपर भरने का मुख होता है. नीचे एक गोल छिद्र मोरी की भाँति निकालने के लिए होता है।
१२२	२१	कुर्श	चाबुक
५	३	कुंसौ	कौन सा
२	१६	केन्नें(गाँव केन्नें = गाँव केन नें)	गाँव-केन = गाँव के निवासियों ने। गाँव के+न (बहु वचन द्योतक) + नें कर्त्ता कारक की विभक्ति
४४	६	केश	बाल
४१	४	कोपीन	एक वस्त्र का टुकड़ा-मात्र जिसे कमर में बँधी रस्सी से आगे से पीछे बाँध लिया जाता है, जिससे शरीर के केवल गुह्य अंग ही ढक पाते हैं और भाग नहीं ढकते।
११२	१०	कौतुक	तमाशा, खेल
८५	२	कंगूरनदार	कंगूरों से युक्त
७६	३५	कंमद	वह रस्सी की भाँति का साधन जिसे नीचे से ही किसी मकान पर फैंक कर उस पर चढ़ने के उपयोग में लाया जाता है।

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
		ख	
४१	१५	खडुआ	हाथ और पैरों का एक आभूषण
६३	३	ख़ता	अपराध
१४	३	खन	क्षण, समय
४६	१६	खरबोरिया	खलभली
६	२०	खमसूरत	खूबसूरत, सुन्दर
५६	२६	खरंजा	पक्की ईंटों का बना हुआ भू-भाग
३६	५	खलरा	खोल, शरीर
३८	७	खसबोई	सुगंध
८२	१३	खाती	बढ़ई
६२	१५	खीपरा	मिट्टी के पात्र का टुकड़ा
३४	१०	खूँटत	खुलते
७७	२६	खूँटैगौ	खुलेगा
८०	५	खैरीं	बाँयी
१८	२३	खैम	क्षण, समय
३५	२६	खोटु	दोष
३	६	खोल	कोटर
		ग	
११८	२४	गढ़लीक	गाड़ी की लीक, गाड़ी के पहियों से भूमि पर बने चिन्ह
८६	१६	गम्म	अनायास ही प्रबलता से : 'गम्म सेनी आइ गयौ'
१०६	२४	गहा	ग्राह, मगर
११७	५	गुजरान	व्यतीत होना
६०	४	गुरकी लपटी	गुड़ की लपसी
६७	१४	गेरुंगो	गिरा दूंगा
८०	६	गैरि	अन्य, अजनबी
६	१६	गैल	मार्ग
४	४	गैलहारे	पथिक
१०७	८	गौंहजे	संबोधन का एक शब्द जिसका

पृ६	पँक्ति	शब्द	अर्थ
			अर्थ होता है साथी ऐसा जिससे पीछा छुड़ाना कठिन हो जाय।
१०५	१	गौहदरा	गीदड़, शृङ्गाल
१०५	१	गौहदरी	गोहदरा का स्त्रीलिंग रूप
११३	१८	ग्रहन	ग्रहण

घ

४३	२४	घरिका (लगाम, कंठी, घरिका)	घोड़े के साज की एक वस्तु
४०	२०	घरी (घड़ी)	समय
६५	२	घरुआपाती	एक खेल। इसमें बच्चे मिट्टी का घर बनाते हैं।
२०	६	घसेरे (बहु वचन)	घास खोदने वाले
१२५	१७	घाली	डाली, दी, उँडेली
११०	२१	घिसरामन	घिसिटने का चिह्न
६२	६	घूआ	रह रह कर आँखों में उठने वाली भयंकर पीड़ा
११७	८	घेरी	पीछा किया

च

१३६	१८	चगन	आँगन का पार्श्ववर्ती भाग। [यथार्थ में यह शब्द 'अँगन' के अनुप्रास में आया है। ठीक वैसा ही जैसे 'चिट्ठी-विट्ठी' 'टोपी-फोपी' में 'विट्ठी, फोपी' आदि।]
११८	२२	चपटा	बड़ा घड़ा
८८	१०	चपेटा	चक्का
६४	९	चाखी	चाकी
४२	२६	चाव	रुचि
७५	३०	चीरा	चीर, वाद्य
३७	२९	चुगे	खाये
२२	३	चूनु	आटा

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
८	१६	चेति	सजग हो, जागृत हो
११३	११	चैंकाऔ	जलाओ, चिढ़ाओ
२०	५	चोखी	अच्छी
७४	६	चोखौ	अच्छा
१२२	१५	चोब	नगाड़ा बजाने का डंका
३६	१	चोला	शरीर, शरीर का आवरण
३७	२	चौफर	चौपड़ (एक खेल)
६	१६	चौर	बालों का एक बना हुआ गुच्छा, जो सम्मानीय पुरुषों के सिर पर ढोरा जाता है, हिलाया जाता है। प्रायः श्वेत बालों का होता है।
८१	६	चौंना (चौं ना)	क्यों नहीं

छ

६३	१६	छई-छोरन	लड़की-लड़कों को
५१	१२	छाँनि	छप्पर
६८	२	छीजि	नष्ट होकर
३	२०	छेकि (–दियौ)	प्रथक् कर दिया, च्युत कर दिया
४०	२५	छोरा	लड़का
		छोट्टिया	लड़की

ज

१०७	५	जर	धन
२६	२७	जरि	जड़, जल कर
३६	२१-२२	जरि-भुँजि	जल-भुन कर
७५	२८	जड़ी	जड़ी-बूटी, औषध
४४	२०	जबर	बलवान
१८	१६	जस	यश
५२		जाति बिगारैगौ	दुर्दशा करेगा ['जाति' से मुहाविरा बना है।] जिसकी जाति बिगड़ जाती है, वह उस जाति में से

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
			कठोर अपमान के साथ बहिष्कृत किया जाता है ।]
१९	६	ज्यानु	इसका अर्थ है 'ज्ञान'। पर यहाँ यह शब्द या तो व्यंग में है कि 'दूसरों को ज्ञान देते हो' पर यह अर्थ 'करि रहे' क्रिया से ठीक नहीं बैठता, अतः यह 'हानि' का पर्य्यायवाची है ।
१४	१	जिमाइ	खिलाकर, खिला
८१	६	जिमिदारे	जमीदारों के निवास
३४	४	जीमती	जीवित रहती
२७	६	जुरैगौ	जुड़ेगा
४२	६	जेबरा	रस्सी, पशुओं को बाँधने का रस्सा ।
११	१६	जेंई	खायी
५	१३	जेंगरान	गाय के बछिया-बछड़े
६	२	जैंमे	खाये
६०	८	जोति-बाती	दीप-बत्ती, जलता दीपक
१४	४	जोरा	जोड़ा, वस्त्र (विशेषत: स्त्री के लँहगा-फरिया)
१२२	१०	जौंहरु	जौहर, अत्यन्त साहस का काय
५	३	जौंरे	निकट

झ

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
५१	१२	झट्टई (झट्ट ई)	तुरन्त ही
४६	२०	झमझमाहट	झम-झम की ध्वनि
५७	८	झमा	बेहोशी
८४	१२	झभ्भझड़ाई	छीन कर, झाड़ कर ।
१३०	१२	झार	झाड़—कंटीली झाड़ी का सूखा हुआ अंश
२०	६	झारन (–लागे)	झाड़ने लगा

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
४०	१८	झारी	झाड़ी
१३	१५	झिंगार (झंकार)	आलाप
१२६	१३	झीना	जीना, सीढ़ियाँ
११४	५	झूकेदार	सुन्दर, चित्र-विचित्र
		ट	
२१	१	टटोरै	टटोले
२५	१०	टापन	घोड़े की टापें
४०	२१	टिक्कर	पराँमठे
		ठ	
३	७	ठौर	स्थान
		ड	
७५	२	डट्टा	डाट, छाप
२३	१५	डराइ लई	गिरा ली, निकल वाली
६१	१३	डलिया-कोथरी	डलिया और कोथरी, कोथरी = थैली।
७८	१०	डाँग	वन, यहाँ इसे 'मेंड़' के अर्थ में प्रयोग किया है।
२५	११	अटि	रोक
७७	१४	डारि	डाल, गिरा
८०	११	डाँहिन	दानवी, मनुष्य-भक्षणी, [यह विश्वास किया जाता है कि ये जादूगरनी होती हैं।]
२२	२०	डिगरि	चल
१०१	१८	डोरी	रस्सी
३३	३	ड्योंड़ी	मुनादी
३७	२२	डौर	डौल, ढंग
२८	२०	डंडा–मोर	यह शब्द ठीक ठीक क्या है, विदित नहीं हुआ। प्रसंग से इसका अर्थ निकलता है—'चक्कर करो'

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
		ढ़	
११	२४	ढिंग	पास, किनारे
७	५	ढीम	मिट्टी का ढेला
३६	२	ढुरकाइ	ढुलका कर, लुड़का कर
६	२०	ढोरत	इधर-उधर चालित करना
४६	२४	ढोरन	पशुओं
४१	१६	ढोलना	गले में पहनने का गोल तावीज
१०२	३	ढौरें	पास, निकट
		त	
४६	५	तगादौ	तक़ादा, माँग करना
१७	२१	तनक	किंचित, थोड़ा
१७	१४	तर	नीचे
७६	२	तरीखा	तरीक़ा, ढंग
४४	४	तल (है गयौ)	'तरवतर'—भीग गया
१३	३०	तसल्ली	सान्त्वना
५२	३७	तातो	गरम
१४	१४	त्यागौ	छोड़ा, परित्याग किया
२८	२६	तारि (देउ)	तार दो, उद्धार करदो, पीछा छुड़ाओ
६४	२६	तिरवाचा	तीन बार वचन देना
८५	२१	तीगा	झंझट
४	१८	तेह	तेज, गर्मी
८२	६	तोख लगि गओ	बात अत्यन्त चुभ गयी।
४४	२६	तोर-मरोर	तोड़-मरोड़
३०	२	थोरे घने	कुछ, कम-बढ़
		द	
६४	७	दतरा	दाल दलने की हलकी चक्की
३	१०	दगरे	गाँव के कच्चे मार्ग
१६	२४	दरसराय	दर्शराय, ईश्वर
६४	११	दरिबे	दलने
६७	१३	दहसत	भय

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
११६	२२	दायरी	दारी, एक गाली
३	२	दाई–मिच्चा	आँख–मिचौनी, एक खेल
८१	११	दिनन	दिनों
८६	२२	दिरगन	दृगों, नेत्रों
६८	१३	दिल बोरिकैं	भली प्रकार, मन भरके
६५	१	दूब	दूर्वा, एक घास
१५	२६	द्वै	दो
७५	३१	दोन	दो
२२	७	दोषु	दोष, अपराध
४१	२३	दंडौत	दंडवत

ध

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
५२	२५	धमारे	धुंआ निकलने का छिद्र, एक छिद्र
११४	११	धमारौ	एक छिद्र, हवा अथवा धूम आने-जाने का छिद्र
१२६	६	धींगरा	निरंकुश बलवान व्यस्क
२१	४	धौंताई	प्रातः
१२६	४	धौंसा	नक्कारा

न

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
४२	५	नजीक	नजदीक, पास
१५	५	नराइ	खेत निरा कर
६६	२०	नांदि	मिट्टी का एक प्याले के आकार का बहुत बड़ा पात्र
४५	२	नाँई	भाँति
७	१३	न्याबु	न्याय
२८	१७	नारि	स्त्री, गर्दन
१३	१२	निघा	निगाह, दृष्टि
७७	१३	निठैगी	निर्वाह होगा
६	१	नित्त	नित्य
७१	२५	निपुत्री	पुत्र-रहित
११८	६	निपूते	गाली, बिना पुत्र का मनुष्य

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
३३	९	निधान	भंडार, युक्त
६	२३	निमटिबे (निवृत्त होने)	शौच करने
१४	५	निरचू	निश्चिन्त, निवृत्त
२२	१	निश्तौ	निश्चय
६५	१२	नूंकर(मुहावरा-'नाहीं-नूकर')	मनाही करना
६०	१६	नेकवक्त	सज्जन
२२	४	नैकसौं	लघु
१२	१८	नौतो	निमंत्रण
२१	२८	नौंन	नमक

प

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
२६	२५	पजरेई	जले
६०	८	पथवारी	मार्ग स्थित देवी का स्थान
६२	१६	परगट	प्रकट
१८	२	परचाग्रौ	परीक्षा ली
६६	२३	परतीत	प्रतीत
११७	४	परबस्ती (परवरिश)	कृपा
७०	१२	परभात	प्रभात, प्रातः
६८	१५	परसंद	पसंद
१५	६	परि लीये	मार्ग ग्रहण किया
५२	७	परु	गत वर्ष
१८	१०	पन्हा	जूता
१२	६	पाग	सिर बाँधने का वस्त्र
२७	१६	पाटि	कोल्हू का एक भाग
१०१	१२	पारी	परिया, ढकना
८१	१७	पान (+ चार)	पाँच
५३	२	पाम	पैर
१५	७	पामन	पैरों
११७	१	पारौ	पाला
५२	५	पिछौरा	एक छोटा वस्त्र जो स्वाफी की भाँति काम में लाया जा सकता है

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
			अथवा छोटी चद्दर का काम दे सकता है।
२६	२४	पिरवाइ	पिलवाना (तेल के संबंध में)
४६	२	पिरानी	पीड़ा हुई
२८	२७	पिस्याइ (गलत छपा है शब्द 'खिस्याइ' है)	चिढ़ गया
२१	४	पीरी	पीली, उषा काल, [मुहा० पीरी फटना]
१०	१	पीहर	पितु गृह, स्त्री का मायका
६	१८	पींड	वृक्ष का तना
६८	२३	पुज्जिमान	पूज्य
१२४	३	पुरजा	कागज़ का टुकड़ा
११८	१४	पंख	रंगीन पंख
४४	६	पेश (न जाय)	वश न चले
१२६	१७	पैंडौ	बाट, प्रतीक्षा
११२	१३	पोच	कायर, दुर्बल
२४	६	पोत	बार
५१	२	पोतना	चूना अथवा मिट्टी के पानी से किसी स्थान को स्वच्छ करना।
११४	२४	पौढ़ि	सो कर
४६	२४	पौहे	पशु

फ

१३	१	फगेतौ (फजीहत)	दुर्दशा
२१	४	फाटनि	फटने पर, निकलने पर, फटते ही, निकलते ही।
३८	१०	फावरे	फावड़े
७५	३०	फार	फाड़

ब

१०	८	बइअर	स्त्री
६८	५	बकत	वक़त, सम्मान, वक्त, समय।

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
८५	२८	वखुआ (वाकया)	घटना
७	१२	बगदाय	लौटाकर
४	१५	बगदे	लौटे
२०	१८	बजमारे	बज्र से आहत, एक गाली
११४	१	बट	शारीरिक चमत्कार के खेल दिखाने वाली एक जाति ।
३५	१०-११	बधिकियान	बधिको
१०८	११	बनक (बानक)	रूप
२६	२५	बनी	बन, जङ्गल
५२	३०	बबरयौ	घुसा
१५	२६	बरध	बैल
५	१८	बरहे	खेतों में पानी ले जाने की कच्ची नालियाँ ।
६	१	बरिबे	जलने
५२	२१	बलाइ	बहुत, बला, संकट
८३		बहेलिया	पक्षियों को पकड़ने वाला, निषाद
३७	१६	बवारौ	बोने का समय
४१	३	बस्त	वस्तु
७२	११	बहनौत	बहन का पुत्र
११७	१५	बहौरौ	बौहरा
१८	८	बाइगी	सर्प का विष उतारने वाले
३७	५	बाजू	भुजा
७	६	बाजे	पड़े, फेंके गये, मारे गये ।
६६	२०	बाटुई	दे. उल्टा बाटुई
५	१	बाद	विवाद, झगड़ा
११	७	बानीऊं	दे. औरत।बानीऊँ
१३	१८	बाबरौ	पागल
६	१४	बारंगना	नर्तकी, वेश्या
१०६	२	बारी	बाड़ी, खरबूज-तरबूज का खेत, वाटिका ।

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
११३	१५	बारौठी	विवाह में वर जब पहली बार पूरी बरात के साथ कन्या के द्वार पर जाता है तब वह कृत्य बारौठी कहलाता है।
८२	१२	बालातन	बाल्यावस्था
३१	१३	बिताइकें	व्यतीत कर
१४	१	बिनकूँ	उनको
२४	१२	बियाबान	भीषण जङ्गल
७५	८	बिरमाय	विश्राम करके
४३	१२	बिलुकइयाँ	कलामुंडियाँ
५२	१७	बीजना	पंखा
५६	२५	बीरा	बीड़ा (मुहा० बीड़ा उठाना, संकल्प करना)
११३	७	बूझत	पूछते
७२	६	बौत	बहुत
२०	१६	बौहरी	ऋण देने वाली स्त्री, स्वामिनी
४६	१७	बौहौटिया	वधू
२२	२३	बंज	वाणिज्य
२१	११	बंबे	नहर का बंबा, छोटी नहर।

भ

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
११३	२१	भऊ	वधू
१४	११	भागुमान	भाग्यवान
११२	२५	भातई	भात ले जाने वाला भाई। भानजे या भानजी के विवाह के अवसर पर भात ले जाता है।
१०२	७	भायलौ	किसी पड़ौसिन या निकट की किसी स्त्री से बहिन जैसा घनिष्ट सम्बन्ध।
११३	२०	भारन	[मुहा० देखना–भारना] देख–भाल।
११२	१	भारे	भाड़े, किराये

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
७७	१६	भिटे	जंगली जानवरों के रहने की माँद, छिद्र
७७	१३	भिट्टौ	बिल
२१	१२	भीजिबे	भीगने
२४	२६	भीतिन	दिवालों
४६	४	भेज	किसान को जो लगान या कर खेव पर देना होता है वह भेज कहलाता है

म

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
२०	१०	मगन (मग्न)	प्रसन्न
४६	२०	मचिगौ	मच गया
११२	१५	मढ़ी	किसी साधु अथवा जंगल निवासी की झौंपड़ी
१११	४	मधेसिया	निठल्ले
४४	२१	मनय	विनय
४४	१४	मनिका	मणि
१२१	३	म्यानौ	समाधान
८०	१८	मरहटान	मरघट, श्मशान
७१	१३	महक	सुगन्ध
१६	१५	महतारी	माता
५२	३०	महेरी	ज्वार अथवा मक्का का मट्ठे में पकाया हुआ दलिया
१५	१	माँझ	में
२२	१३	माटी	मिट्टी
६	२२	मानस	मनुष्य (मुहा० न मानूस न मती)
२४	४	मारैं	दाबे, दबाये, शीघ्रता से
३	३	मिचेंगे	आँख बंद करेंगे
७६	१०	मीजान	रहस्य, हल, (जोड़) [मु० मीजान मिलाना–जोड़ बिठाना]
७६	१६	मुकते	बहुत से

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
१७	२६	मुँदवाइ	बंद कराके
३६	६	मुरकाय	मोड़ कर
४०	१०	मुरकि	मुड़ (कर)
७०	१७	मुरार्दी	मुनार्दी, ड्यौड़ी
५०	१९	मुद्यौ	बंद
१२	५	मूँड़	सिर
५१	३	मूँड़ु	मूड़
१३	४	मूड़े	बहाने
३४	६	मूँदि	बंद कर
३८	२२	मूर	मूल, (मुहा० में 'मुख्य')
७७	१६	मूसे	चूहे
२०	१३	मूसौ	चूहा
५६	१०	मेख	कील, खूँटा
६७	२१	मैंफल	महफिल
३८	११	मैहनती	परिश्रमी, नौकर, मजदूर
४६	२	मोखी	छोटा गहरा तिखाल, मोखुश्रा, दिवाल में बना हुश्रा एक गहरा छोटा स्थान, जिसमें सामान रखा जाता है
११२	६	मोघरे	मुख-द्वार
२३	६	मौंह	मुख
११६	१९	मौगरी	ज़मीन कूटने का लकड़ी का एक साधन, एक छोर पर यह भारी श्रौर चिपटी होती है।
३	१०	म्हौं	मुख
१०	१५	म्हौर	मुकुट
२३	१४	मोहड़े	मुख (बहु वचन)

य

५	४	याइ	इसे

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
		र	
५३	१३	रचि–पचि	बना कर, सजा कर
७२	६	रनमास	रनिवास
६४	२३	रमतौ	घूमता–फिरता
४०	६	रमनीक	रमणीक
८	६	रासि	राशि
३७	२७	रिस	क्रोध
६६	५	रुप्यौ	आरंभ हुआ, प्रतिष्ठित हुआ
८२	७	रूम	रोम, तात्पर्यार्थ छवि
४४	२	रेघौ	दौड़ कर परेशान किया (यह ग़लत छपा है, शब्द है रेद्यौ)
६६	१४	रोपी	आरंभ की
७१	११	रौस	वृक्षों की एक सी पंक्ति
२६	२२	रौस-पट्टी	रौस
५	१६	रंधवायौ	पकवाया
		ल	
८०	१६	लाखीन (लक्खिन)	लक्षण
१०७	१५	लखीचनि (पद-चिह्न)	पृथ्वी पर सर्प की भाँति चलने से जो चिह्न बनता है।
११	१८	लगामाती	संबंधी
६६	१८	लगु	लग रही है, बँधी है
४१	३	लत्ता	वस्त्र
११८	२२	लपटी	लिपटने वाला पदार्थ, अत्यन्त गाढ़ी चासनी
१०६	१६	लहमा	क्षण
७१	२	लाक	लायक़, योग्य
८१	६	लाख	दे. लाक
६६	१८/१६	लील-बछेरा	नीला घोड़ा
१०६	२१	लुटलुटी	लोटने का मन
६३	६	लड़ूरा	लड़ने को तत्पर

पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	अर्थ
५६	१३	लेजु (रज्जु)	रस्सी
२१	१०	लेह–देह	तुरंत
४१	१७	लोभ	लालच की वृत्ति
३०	११	ल्हौरौ	छोटा

व

१००	१०	विकरन	बिगाड़ना (संभवत:'विकीर्ण' करने से बना है, अर्थात् ब ने विशेष रूप ग्रहण कर लिया है।)
२७	३	विपता	विपत्ति
५०	१७	विराति	मु० रातिविराति—राति विरात का एक अंश = रात्रि
१३	१३	वैभव	ऐश्वर्य, धूमधाम
५३	१४	वैसैई	यों ही

श

११	६	शशिपंज	संकल्प-विकल्प, संदेह
८२	३	शशे	खरगोश, शशक
१५	१	शैल	सैर
४२	२४	शौखु	शौक़

स

११२	२३	सड़ाके में	तुरंत ही, एक क्षण में
१३	८	सबर	सब्र, सन्तोष
२७	२१	समगाओ	सँभाल लो
८३	३	समरथ	समर्थ
३४	१७	सम्हरि	सँभाल
२२	१२	समेटबे	समेटने
१३	४	समेरे	सवेरा, प्रातः
२३	४	समै	समय
२७	२	समैया	अवसर
९८	२५	सरजीवन	संजीवन

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
१२	१६	सल	पता
१२१	१	सलाही	परामर्शदाता
१०६	६	स्वाइ	सुला दिया
२१	१६	स्वाँइति	शान्ति
४	१	स्यानौं	जादू–टोना करने या उतारने वाला
५१	६	स्याहे	पटवारी का एक कागज, स्याहा
६३	६	सरारति	उपद्रव
२६	१६	सहम्बर	स्वयंवर
८७	४	सहरपना	शहरपनाह (नगर)
६६	२१	सहीस	साईस
७२	५	सात्यौ (साँतयौ)	सातवाँ
४३	२	साँकर	शृङ्खला
१०	१	साँझ	संध्या
१५	६	साब	साहब
७	२३	सिक्का	विवाह संबंध पक्का करने की सगाई या टीका
६२	२५	सिपट्टर	इंस्पेक्टर
५	१६	सिराय	शीतल करके
१०६	४	सिलौ	अनाज की फसल कट जाने के उपरान्त खेती में बिखरा हुआ अन्न।
६३	११	सीना,	से, (विभक्ति)
६	१७	सीरक	शीतलता
१२	१०	सुन्ना	सहित
८४	२६	सुभ	शुभ
१३	१६	सूधौ	सीधा
६८	२१	सेल	तलवार
३३	१५	सैं	तक सीधा, एक दम सीधा
८२	८	सैमाऊ	संकुचित होती हुई

पृष्ठ	पँक्ति	शब्द	अर्थ
६८	२	सोगात	उपहार
६१	३	सोफतौ	सुविधा
६	२१	स्यौं गयी	चिन्ता हुई
२७	१७	संहरे	स्मरण किए

ह

७५	३	हक्क	हक़, अधिकार
७७	१२	हट	हठ, ज़िद,
१२५	१२	हटोरियाई (ठठोरियाई)	हँसी-ठठोली
२१	१८	हति नाँयें	नहीं (हति-है)
४५	२	हती	थी
४६	१८	हम्बै	हाँ
८६	१८	हरकारे	हलक़ारे, सिपाही
३७	१६	हल्ला	शोर
५३	५	हलिबे	हलने-डोलने
५२	८	हलियों–झुलियों	हिलना–डोलना
३३	५	हाली–हम्माली	हाली–मवाली, नौकर–चाकर
१२४	११	हिरास	निराश
१५	७	हिये–माथे की (मुहा०)	धर्म तथा ज्ञान चक्षु दोनों
६६	१६	हींस्यौ	घोड़े की बोलने की ध्वनि
४२	२०	हींस	एक झाड़ी बनाने वाली लता
१०६	१०	हुकहुकी	हूक
१०	१८	हुलिया	वेष, रूप-रेखा
२६	२३	हौद	हौज
८४	१	हौंनि	होने पर

ज्ञ

१२	१/२	ज्ञानमानु	ज्ञानवान, पंडित, गुणी



